राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 सूर्यकुमार यादव टी20 तो रोहित वनडे सीरीज में संभालेंगे ...

अमेरिका में बच्चे गोलीबारी में ज्यादा मरते हैं, ट्रंप पर हुए हमले के बाद ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 99 | पटना, शनिवार, 20 जुलाई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%

नहीं 50%

कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

कैबिनेट फैसला : पंचायतों में अब 15 लाख तक की योजनाओं का भी होगा टेंडर

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में शुक्रवार को राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक हुई। बैठक में कुल 27 एजेंडों पर मुहर लगी है। राज्य सरकार ने पंचायत स्तर पर होने वाले विकास कार्यों को लेकर बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने पंचायत निर्माण कार्य नियमावली को स्वीकृत दी है। सरकार के इस कदम से अब मुखिया और पंचायत सचिवों की मनमानी नहीं चलेगी। 15 लाख तक की योजनाओं का भी अब सरकार टेंडर करेगी। बैठक के बाद कैबिनेट के अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने बताया कि नियमावली में यह प्रावधान किए गए हैं कि अब मुखिया और पंचायत सचिवों की मनमानी नहीं चलेगी। छोटे कार्यों के भी ठेकेदारों का पैनल बनेगा। बिड होगी और बिड में चयनित व्यक्ति को कार्य दिया जाएगा। दरअसल, बिहार में पंचायत स्तर पर कराए जाने वाले विकास कार्यों को पहले मुखिया और वार्ड सदस्य अपने स्तर से काम कराते थे।

विकास कार्यों में अनियमितता और भ्रष्टाचार के आरोप लगातार लग रहे थे। लगातार मिल रही शिकायतों के बाद आखिरकार नीतीश सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने अब पंचायतों में होने वाले किसी भी विकास कार्य के लिए टेंडर जरूरी कर दिया है। बिना टेंडर की प्रक्रिया पूरी किए मुखिया और वार्ड सदस्य कोई भी विकास का काम अपने स्तर से नहीं करा सकेंगे। बिहार सरकार ने पंचायत निर्माण कार्य मैनुअल बनाई है, जिसे कैबिनेट ने मंजूर कर लिया है। अब मुखिया या वार्ड सदस्य योजनाओं के कार्यान्वयन में मनमानी नहीं कर सकेंगे।

भागलपुर में तीसरे केंद्रीय विश्वविद्यालय खुलने का रास्ता साफ : राज्य के तीसरे केंद्रीय विश्वविद्यालय खुलने का रास्ता साफ हो गया। 205 एकड़ जमीन अधिग्रहित करने के लिए 87.99करोड़ रुपये की मंजूरी मंत्रिमंडल ने दी है।

अपर मुख्य सचिव ने बताया कि गया और मोतिहारी के बाद अब भागलपुर के विक्रमशिला में तीसरा विश्वविद्यालय बनने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। इसके साथ ही राज्य मंत्रिमंडल ने बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024 भी स्वीकृत की है। इसके तहत बिहार में शूटिंग करने पर चार करोड़ रुपए तक का अनुदान सरकार देगी।

कृषि क्षेत्र में फैसला : कृषि क्षेत्र के लिए भी महत्वपूर्ण फैसला लेते हुए कैबिनेट ने दलहन फसलों के लिए प्रोत्साहन राशि को मंजूरी दी है। इसके तहत ह्यखाद्य एवं पोषण सुरक्षा दलहन योजनाह्ल के लिए 95 करोड़ 95 लाख 50 हजार रुपए की स्वीकृति दी गई है। इसके अलावा, मोटर वाहन अधिनियम 1994 में संशोधन करते हुए मोटर वाहन कर की अवधि एकमुश्त 14 वर्ष निर्धारित करने का फैसला लिया गया है। कुल मिलाकर, बिहार कैबिनेट की बैठक में लिए गए फैसले राज्य के विकास को गति देने और जनता के जीवन को आसान बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अलावा राज्य के मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को मिले सरकारी भवनों के नवीकरण की दो वर्ष की बाध्यता मंत्रिमंडल ने समाप्त कर दी है। जब तक पार्टी की मान्यता रहेगी भवन उनके पास रहेगा। कैबिनेट के फैसले के तहत बीऐच सीरीज की गाड़ियों का एकमुश्त 14 वर्षों के लिए निबंधन होगा।

38 जिलों में जिला परिषद की जमीन की लीज देने की नीति : इसके साथ ही राज्य के सभी 38 जिलों में जिला परिषद की जमीन को लीज पर देने के लिए नीति बना दी गई है। 30 से 50 साल यानी लॉन्ग टर्म नीति के लिए राज्य सरकार की अनुमति लेनी होगी। कृषि भूमि की भी लीज बाजार मूल्य पर देनी होगी जो अधिकतम पांच सालों के लिए होगी।

संक्षिप्त खबरें

इसरो प्रमुख को पीएचडी की उपाधि मिली

चेन्नई। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के परिसर में शुक्रवार आयोजित 61वें दीक्षांत समारोह में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष एस. सोमनाथ को मैकेनिकल इंजीनियरिंग में पीएचडी की उपाधि प्रदान की गयी और कुल 2,636 छात्रों को स्नातक की उपाधि प्रदान की गयी। इस अवसर पर छात्रों को (संयुक्त और दोहरी डिग्रियां सहित)3,016 डिग्रियां प्रदान की गईं। कुल छात्रों को 444 डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) को सम्मानित किया गया, जिनमें पीएचडी, विदेशी संस्थानों के साथ संयुक्त डिग्री पीएचडी और दोहरी डिग्री पीएचडी शामिल हैं। आईआईटी-मद्रास द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. ब्रायन के कोबिल्का थे जिन्हें रसायन विज्ञान में 2012 के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

इस वर्ष के स्वतंत्रता दिवस समारोह की थीम होगी विकसित भारत

नई दिल्ली। इस साल 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की थीम विकसित भारत है, जो 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के केंद्र सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ए. भारत भूषण बाबू ने एक्स पर एक पोस्ट में यह घोषणा की। प्रवक्ता ने लाल किले और विकसित भारत नारे को दशार्ने वाला एक पोस्टर भी साझा किया। वर्ष 2047 में भारत औपनिवेशिक शासन से अपनी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष का जश्न मनाएगा। प्रवक्ता ने एक्स पर लिखा, स्वतंत्रता दिवस 2024 की थीम विकसित भारत है, जो 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

कार एवं ट्रक में टक्कर, छह लोगों की मौत

जयपुर। राजस्थान में बीकानेर जिले के महाजन थाना क्षेत्र में कार एवं ट्रक की टक्कर होने से दो महिलाओं एवं दो बच्चों सहित कार सवार छह लोगों की मौत हो गयी। पुलिस ने बताया कि सभी मृतक एक ही परिवार के हैं तथा हरियाणा में डबावली तहसील के रहने वाले हैं। ये सभी लोग कार में सवार होकर बीकानेर की तरफ जा रहे थे कि गुरुवार रात को महाजन थाना क्षेत्र में भारत माला रोड के जैतपुर टोल प्लाजा के पास कार आगे चल रहे ट्रक से टकरा गयी। हादसे में कार में सवार पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी और एक ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। हादसे की सूचना के बाद बीकानेर जिला कलेक्टर नम्रता एवं जिला पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम सहित आला अधिकारियों ने घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

राबड़ी देवी विधान परिषद् में बनी नेता प्रतिपक्ष

पटना। मॉनसून सत्र शुरू होने से पहले विधान परिषद् में नेता प्रतिपक्ष, सत्ताधारी दल के सचेतक, उप मुख्य सचेतक और उपनेता का मनोनयन कर दिया गया है। राबड़ी देवी को एक बार फिर नेता प्रतिपक्ष मनोनीत किया गया है। जबकि सत्तारूढ़ दल की ओर से जदयू एमएलसी नीरज कुमार और रीना देवी को सचेतक मनोनीत किया गया है। वहीँ भारतीय जनता पार्टी के संजय प्रकाश को सत्तारूढ़ दल का उप मुख्य सचेतक मनोनीत किया गया है। उधर जदयू के वरिष्ठ नेता ललन कुमार सर्राफ और भाजपा के राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता को सत्ताधारी दल के उपनेता के रूप में जिम्मेवारी दी गयी है। विधान परिषद के कार्यकारी सभापति अवधेश नारायण सिंह के अनुमति के बाद बिहार विधान परिषद सचिवालय ने इसकी अधिसूचना जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री ने की विधि व्यवस्था की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक, अधिकारियों को दिए निर्देश

कानून व्यवस्था सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता, अपराध नियंत्रण में किसी प्रकार की कोताही न हो : सीएम नीतीश

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को 1 अणे मार्ग स्थित संकल्प में विधि व्यवस्था की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने निर्देश देते हुए कहा कि विधि व्यवस्था सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। अपराध नियंत्रण में किसी प्रकार की कोताही न बरतें। गश्ती में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतें, रात्रि गश्ती और तेज करें।

रात्रि एवं पैदल गश्ती को और नभावी बनाने के लिये वरीय पदाधिकारी क्षेत्र में जाकर रात्रि में स्वयं औचक निरीक्षण करें। कानून व्यवस्था को बनाये रखने में सभी पूरी तन्मयता से काम करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्य में लापरवाही बरतने वाले पुलिस कर्मियों पर सख्त कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि अपराध अनुसंधान कार्य में तेजी लाएं और इसे ससमय पूर्ण करें ताकि दोषियों पर जल्द कार्रवाई हो सके। कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिये पुलिस और प्रशासन मुश्तैदी से कार्य करें तथा अपराध नियंत्रण हेतु पूरी सख्ती से कार्रवाई करें।

पुलिस कर्मियों की तेजी से की जाय बहाली : मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार पुलिस की संख्या बढ़ाने के लिये विभिन्न श्रेणियों में 2,29,139 पद स्वीकृत किये जा चुके हैं। 1,06,436 पुलिसकर्मी कार्यरत हैं। शेष रिक्त पदों पर बहाली शीघ्र करें। हमने वर्ष 2013 से ही पुलिस में महिलाओं के लिये 35 प्रतिशत आरक्षण का नावधान किया है। अभी बिहार पुलिस में महिलाओं की संख्या लगभग 30 हजार हो गयी है। बेहार पुलिस में महिलाओं की भागीदारी देश में सबसे ज्यादा है। उन्होंने कहा कि पुलिस बल में महिलाओं की संख्या बढ़ने से थानों में जो महिलायें शिकायत लेकर आती हैं, उन्हें समस्याओं के समाधान में सहूलियत हो रही है और उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा है। हर थाने में महिला पदाधिकारी एवं महिला पुलिस कर्मियों का पदस्थापन सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने कहा कि थाने में आने वाले आगंतुकों के साथ अच्छा व्यवहार हो, उनकी बातें सुनी जाय, यह सुनिश्चित किया जाय।

ये रहें मौजूद : बैठक में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा, पुलिस महानिदेशक आर एस भट्टी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, गृह विभाग के प्रधान सचिव अरविंद कुमार चौधरी, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, महद्य नषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के सचिव विनोद सिंह गुंजियाल, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, पुलिस महानिदेशक सह अध्यक्ष बिहार पुलिस भवन निर्माण निगम लिमिटेड विनय कुमार, पुलिस महानिदेशक, प्रशिक्षण प्रीता वर्मा, पुलिस महानिदेशक, बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस ए के अंबेडकर, अपर पुलिस महानिदेशक, मुख्यालय जे एस गंगवार, अपर पुलिस महानिदेशक, विशेष शाखा श्री सुनील कुमार, अपर पुलिस महानिदेशक, विधि व्यवस्था, संजय सिंह, अपर पुलिस महानिदेशक, मद्य निषेध सुशील खोपड़े, अपर पुलिस महानिदेशक, अभियान श्री अमृत राज, गृह विभाग के सचिव प्रणव कुमार सहित पुलिस मुख्यालय के अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे, जबकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी प्रमण्डलीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस उप महानिरीक्षक, जिलों के जिलाधिकारी, वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक जुड़े हुये थे।

मुख्यमंत्री के निर्देश

- कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिये पुलिस और प्रशासन मुश्तैदी से कार्य करें
- अपराध अनुसंधान कार्य में तेजी लाएं और इसे ससमय पूर्ण करें ताकि दोषियों पर जल्द कार्रवाई हो सके।
- गश्ती व्यवस्था को और सुदृढ़ करें, इसकी निरंतर निगरानी करते रहें।
- वरीय पदाधिकारी क्षेत्र में जाकर रात्रि में स्वयं औचक निरीक्षण करें।
- कार्य में लापरवाही बरतने वाले पुलिस कर्मियों पर होगी सख्त कार्रवाई।
- अवैध खनन को रोकने के लिये सख्ती से कार्रवाई सुनिश्चित की जाय।

भूमि विवाद के निपटारे हेतु पूरी तरह रहें सतर्क

मुख्यमंत्री ने कहा कि 60 प्रतिशत से अधिक हत्याएं भूमि विवाद के कारण होती हैं, जो अब घट रहा है। जानकारी दी गयी है कि 46.69 प्रतिशत हो गया है, यह अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि लैंड सर्वे एंड सेटलमेंट का काम तेजी से पूर्ण हो ताकि भूमि विवाद को लेकर होनेवाली अपराध की घटनाओं में पूरी तरह कमी आए। शराबबंदी के क्रियान्वयन पर विशेष नजर रखें, गड़बड़ी करने वालों को चिहिनत कर कार्रवाई करें। इसमें जो पदाधिकारी संलिप्त हैं, उनको भी चिहिनत कर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि अवैध खनन को रोकने के लिये सख्ती से कार्रवाई सुनिश्चित की जाय। उन्होंने कहा कि बिहार में साम्प्रदायिक सद्भाव का माहौल कायम है, इसके लिये पुलिसकर्मियों ने अच्छा काम किया है। प्रशासन और पुलिस पूरी मुश्तैदी के साथ असामाजिक तत्वों पर नजर बनाये रखें।

पुलिस पूरी मुस्तैदी के साथ कर रही है काम : इससे पहले बैठक में मुख्यमंत्री को गृह विभाग के प्रधान सचिव अरविंद कुमार चौधरी ने गृह विभाग द्वारा किये जा रहे कार्यों के संबंध में तथा पुलिस महानिदेशक आर एस भट्टी ने अपराध नियंत्रण को लेकर किए जा रहे कार्यों की अद्यतन स्थिति की जानकारी दी। पुलिस महानिदेशक ने बताया कि पुलिस पूरी मुस्तैदी के साथ लगातार काम कर रही है। अपराध अनुसंधान के कार्य भी तेजी से किए जा रहे हैं ताकि दोषियों को शीघ्र सजा मिल सके। भू समाधान पोर्टल के माध्यम से भूमि जनित मामलों का निरंतर अनुश्रवण कर समाधान किया जा रहा है, जिससे भूमि विवाद में कमी हो रही है। पहले जितनी हत्यायें होती थी, उसमें 60 प्रतिशत हत्यायें भूमि विवाद के कारण होती थी, अब यह घटकर 46.69 प्रतिशत हो गयी है। डायल 112 सेवा पूरे राज्य में 20 मिनट के अंदर लोगों को उपलब्ध होने से नागरिकों को बेहतर पुलिस सेवा उपलब्ध हो रही है।

टेक्सटाइल इंवेस्टर्स मीट के दौरान बोलें केन्द्रीय मंत्री

बिहार में खुलेगा निफ्ट का एक और सेंटर : गिरिराज

प्रात : किरण

पटना। प्रदेश में निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पटना के होटल ताज में दो दिवसीय टेक्सटाइल इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया गया। मीट के दूसरे दिन शुक्रवार को उद्घाटन सत्र के बाद केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि बिहार में एक नया राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) स्थापित किया जाएगा। इसके अलावा भागलपुर, नवादा, नालंदा, गया और पटना में रेशम, हथकरघा और हस्तशिल्प के नए केंद्र खोले जाएंगे। साथ ही बेतिया और मुजफ्फरपुर के बाद बेगूसराय में भी बड़ा टेक्सटाइल क्लस्टर विकसित किया जाएगा। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि आगामी अक्टूबर से नवम्बर माह में बिहार में हैंडलूम का बड़ा एक्सपो आयोजित किया जायेगा। देश में कृषि के बाद सबसे सबसे बड़ा उद्योग देने वाला सेक्टर वस्त्र उद्योग ही है। इसमें करीब साढ़े चार करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ है। उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में 50 लाख रोजगार और बढ़ाकर इस सेक्टर में पांच करोड़ रोजगार करने का लक्ष्य हासिल करेंगे। इस लक्ष्य को हासिल करने में बिहार की बड़ी भूमिका होगी। गिरिराज सिंह ने कहा कि टेक्सटाइल सेक्टर में अभी 176 बिलियन डॉलर का कारोबार है। इसे बढ़ाकर 350 बिलियन डॉलर करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें 100 बिलियन डॉलर का निर्यात करने का भी लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि आगामी समय में बिहार टेक्सटाइल सेक्टर का बड़ा केंद्र बन कर उभरेगा। हमारे पास इस सेक्टर का सबसे बड़ा वर्क फोर्स है। इस मौके पर प्रदेश के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा ने कहा कि बिहार की जीविका दीदियां टेक्सटाइल सेक्टर में बड़ा काम करेंगी। आगे जाकर वह ग्रोथ इंजन साबित होंगी। उनकी बदौलत बिहार की जीडीपी में उल्लेखनीय इजाफा होगा। टेक्सटाइल मीट के बारे में उन्होंने कहा कि बिहार में निवेश करने लोग आ रहे हैं। आज भी भी निवेशक आये हैं, उनमें 90 प्रतिशत पहली बार आये हैं। बिहार के विभिन्न जिलों में अनेक मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट में हमारे कारीगर टेक्सटाइल उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने कहा कि बिहार को विकसित बिहार बनाने में मदद मिलेगा और मुख्यमंत्री का जो सपना है उसे पूरा किया जा रहा है बिहार की जनता के हित में रोजगार भी मिलेगा।

सीबीआई ने नीट-यूजी पेपर लीक मामले में रांची में एमबीबीएस की छात्रा से पूछताछ की : अधिकारी

रांची/एजेंसी। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो नीट-यूजी पेपर लीक मामले में राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान रिम्स के 2023 बैच की प्रथम वर्ष की एमबीबीएस छात्रा से पूछताछ कर रहा है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। झारखंड सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान रिम्स को पहले राजेंद्र मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (आरएमसीएच) के नाम से जाना जाता था। संस्थान के छात्रावास में रहने वाली छात्रा से इस सप्ताह की शुरूआत में सीबीआई ने पूछताछ के लिए संपर्क किया था। रिम्स के जनसंपर्क अधिकारी राजीव रंजन ने बताया, सीबीआई की टीम प्रथम वर्ष की छात्रा से पूछताछ कर रही है। टीम ने बुधवार को अस्पताल प्रबंधन से संपर्क कर कहा कि वे उससे नीट पेपर लीक के सिलसिले में पूछताछ करना चाहते हैं। प्रबंधन ने टीम को पूरा सहयोग दिया। बृहस्पतिवार को भी उन्होंने उससे पूछताछ की और कहा कि आगे भी पूछताछ की जाएगी।

लिखित दस्तावेज मिलने के बाद छात्रों पर होगी कार्रवाई : जी के पाल

पटना। एम्स के 4 एमबीबीएस छात्रों की सीबीआई द्वारा गिरफ्तारी के बाद अस्पताल के कार्यकारी निदेशक जी के पाल ने शुक्रवार को एमबीबीएस और नर्सिंग छात्रों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में जी के पाल ने छात्रों से दो टूक में कहा कि एम्स पटना भविष्य में इस तरह के दुर्व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करेगा। डॉ. जी के पाल ने एम्स पटना के सभी सदस्यों की भलाई के लिए अपना समर्पण दोहराया, छात्रों से अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने और एम्स पटना को विश्व स्तर पर प्रमुख संस्थान बनाने में योगदान देने का आग्रह किया। वहीं, डॉ. पाल ने सभी छात्रों को आश्वासन दिया कि जब तक सीबीआई कार्यालय से लिखित दस्तावेज प्राप्त नहीं हो जाते तब तक निलंबन के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा। आगे उन्होंने छात्रों को मामले की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 17 जुलाई 2024 की दोपहर को, सीबीआई टीम ने एम्स पटना परिसर से चंदन कुमार, उसके बाद राहुल आनंद और करण जैन से पूछताछ शुरू की। उस शाम बाद में, एनईईटी यूजी परीक्षा घोटाले के संबंध में जांच में सहयोग करने के लिए, सीबीआई अधिकारियों और एम्स पटना के वार्डन के अनुरोध के अनुसार, कुमार सानू स्प्रेच्छा से सीबीआई कार्यालय में उपस्थित हुए। इन चार एमबीबीएस छात्रों से गहन पूछताछ के बाद , सीबीआई अधिकारियों को पर्याप्त सबूत मिले और बाद में उन्हें आगे की कानूनी कार्यवाही के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी की पुष्टि सीबीआई के वरिष्ठ अधिकारियों ने की, हालांकि लिखित दस्तावेज अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

सम्मेलन

उपराष्ट्रपति ने किया जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सभी हितधारकों से सामूहिक कार्रवाई का आह्वान

कमजोर लोगों को सबसे अधिक प्रभावित करता है जलवायु परिवर्तन: धनखड़

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जलवायु परिवर्तन की वैश्विक आपदा से निपटने के लिए सरकारों और कॉर्पोरेट नेताओं सहित सभी हितधारकों से सामूहिक कार्रवाई का आह्वान किया। उपराष्ट्रपति शुक्रवार को दिल्ली में जैव ऊर्जा: विकसित भारत का मार्ग विषय पर चौथे अंतरराष्ट्रीय जलवायु शिखर सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की गूंज सीमाओं के पार होने के तथ्य पर प्रकाश डालते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि जब हिसाब-किताब का दिन आएगा तो कोई भी नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि ऐसे में हमें एकजुट होकर जितना हो सके उतना अपनी ऊर्जा को अधिकतम तक पहुंचाना होगा। अपनी क्षमता का दोहन कर पूरी क्षमता का उपयोग करना होगा। उपराष्ट्रपति ने आगाह किया कि जलवायु परिवर्तन एक खतरनाक टाइम बम है, जो मानव जाति के अस्तित्व पर संकट है। उन्होंने कहा कि हमारा ग्रह, जो एक समय एक प्राचीन हरा-भरा स्वर्ग था, अब अपने अतीत की छाया नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और वनों की कटाई से ग्रह को तबाही के करीब लाया गया है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि मानवता चट्टान पर लटक रही है।

धनखड़ ने कहा कि कोई आकस्मिक योजना नहीं है, पृथ्वी के अलावा कोई अन्य ग्रह नहीं है और इसे संरक्षित और पोषित करने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों जैसे कि लंबे समय तक सूखा, जंगलों में आग की घटनाएं बढ़ना और अभूतपूर्व तूफानों को रेखांकित करते हुए धनखड़ ने जोर देकर कहा कि ये परिवर्तन न केवल कमजोर आबादी को खतरे में डालते हैं बल्कि जैव विविधता और खाद्य सुरक्षा को भी खतरे में डालते हैं, जिससे हमारे प्राकृतिक संसाधनों और कृषि प्रणालियों पर भारी दबाव पड़ता है, जिससे सामुदायिक पतन होता है। सदियों पुराने मूल्यों का उल्लेख करते हुए, उपराष्ट्रपति ने कहा कि प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और हमारी पारिस्थितिकी के प्रति गहरा सम्मान, भारत के सभ्यतागत लोकाचार का एक आंतरिक पहलू रहा है। जलवायु न्याय पर जोर देते हुए धनखड़ ने कहा कि जलवायु न्याय हमारा लक्ष्य होना चाहिए। भारत द्वारा उठाए गए अग्रणी कदमों जैसे कि ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन और इंटरनेशनल सोलर अलायंस की प्रशंसा करते हुए धनखड़ ने सतत ऊर्जा में भारत द्वारा निभाई गई अग्रणी भूमिका की सराहना की। जैव ऊर्जा के लाभों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, आधुनिक जैव ऊर्जा न केवल स्वच्छ ईंधन प्रदान करती है, बल्कि प्रदूषण को कम करने, किसानों की आय बढ़ाने, आयात बिलों को कम करने और स्थानीय रोजगार पैदा करने में भी मदद करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किये गये ह्यएक पेड़ मां के नामह्ल अभियान की क्षमता को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि यह केवल एक भावनात्मक अपील या नारा नहीं है, यह एक क्रांतिकारी कदम है। यह कदम सुनिश्चित करेगा कि हर साल 1.4 बिलियन लोग इसे लगाएंगे। इसका बहुत सकारात्मक, व्यापक प्रभाव होगा।

मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना से बदलेगी बिहार की तस्वीर : मंत्री

योजना के कार्यान्वयन के लिए राज्य योजना मद से नगर विकास एवं आवास विभाग को उपलब्ध करायी जाएगी राशि

प्रात : किरण

पटना। नगर विकास एवं आवास मंत्री नितिन नवीन ने कहा है कि मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना से सूबे की तस्वीर बदलेगी। दरअसल, राज्य सरकार ने शहरों में इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए एक नई योजना मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना की मंजूरी दी है। शुक्रवार को विभागीय कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए मंत्री ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत सड़क निर्माण, नाला निर्माण, पार्क निर्माण, तालाबों घाटों का सौन्दर्याकरण, नागरिक सुविधा हेतु जनोपयोगी आधारभूत संरचनाओं का निर्माण इत्यादि कार्य किये जा सकेंगे। साथ ही ऐसे पथों को प्राथमिकता दी जायेगी, जो नगर निकाय की हो तथा वे राष्ट्रीय व राज्य मार्ग अथवा पथ निर्माण विभाग के पथों व मुख्य सड़कों को लिंक सड़कों से जोड़ता हो एवं जनोपयोगी हो। इसके अलावा ऐसी सड़कें जो ज्यादा जनोपयोगी और ज्यादा आबादी को लाभान्वित करती हो, उन्हें भी प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अलावा नालों के चयन में आउटफॉल एरिया को प्राथमिकता दी जाएगी।

अत्यधिक जल जमाव वाले क्षेत्रों के जल निकासी हेतु ट्रंक चैनल बनाया जायेगा एवं उसे आउटफॉल चैनल से जोड़ा जाएगा, जिससे नगर निकायों में जल-जमाव की समस्या दूर होगी। वहीं, निर्मित सड़कों व नालों के किनारे पेड़-पौधे, पार्किंग स्थल एवं पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ तथा सड़क के दोनों तरफ प्रकाश की व्यवस्था किया जा सकेगा। साथ ही बताया कि नागरिक सुविधाओं के अन्तर्गत झीलों, तालाबों, पार्कों व घाटों का जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्याकरण तथा अन्य जनोपयोगी कार्य भी कराये जा सकेंगे। मंत्री ने बताया कि योजना का कार्यान्वयन बुडा, बुडको कार्य एजेंसी के रूप में कार्य का सम्पादन करेंगे। राशि का प्रवाह बजट उपबंध के विरूद्ध इन कार्य एजेंसियों के पीएल खाता के माध्यम से किया जायेगा। साथ ही बुडा या बुडको द्वारा जिलावार कर्णांकित राशि के आधार पर चयनित योजनाओं का विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तैयार किया जायेगा तथा उन पर सक्षम स्तर की तकनीकी स्वीकृति प्रदान कर एवं सभी आवश्यक औपचारिकताओं को पूर्ण कर कार्यान्वित कराया जाएगा। बता दें कि योजना की प्राथमिकता का निर्धारण जिला स्तरीय संचालन समिति द्वारा किया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

सड़क हादसा में बाइक सवार दो जख्मी

फतुहा। शुक्रवार को थाना क्षेत्र के कोल्हर गांव के पास एनएच तीस ए पर हुई सड़क हादसे में एक बाइक पर सवार दो युवक गंभीर रुप से जख्मी हो गये। जख्मी हालत में दोनों को स्थानीय पुलिस ने सीएचसी में भर्ती कराया। लेकिन दोनों की हालत चिंताजनक रहने के कारण तत्काल पटना के लिए रेफर कर दिया गया। जख्मी बाइक सवारों में सम्मसपुर के जवाहर साहनी के 33 वर्षीय पुत्र कुंदन कुमार व स्वर्गीय विजेंद्र पासवान के 25 वर्षीय पुत्र अंकित कुमार के रुप में हुई है। बताया जाता है कि दोनों बाइक सवार दनियावां की ओर जा रहे थे तभी किसी वाहन से उसकी टक्कर हो गयी। कुंदन कुमार की हालत काफी चिंताजनक बताई जा रही है।

दिव्यांग विवाहिता की नहीं हुई पहचान, सुधार गृह भेजी गई

फतुहा। बीते गुरुवार को नदी थाना पुलिस को मिली दिव्यांग विवाहिता की पहचान दूसरे दिन भी नहीं हो पाई। सोशल मीडिया के जरिए भी उसकी पहचान नहीं हो पायी। थक हार कर नदी थाना की पुलिस ने महिला को एसडीओ कोर्ट में पेश कर दिया, जहां से उसे सुधार गृह के लिए भेज दिया गया। विदित हो कि बीते गुरुवार को 25 वर्षीय विवाहिता को जेठुली से बरामद किया गया था। वह बोलने में बिल्कुल असमर्थ अर्थात वह गूंगी थी तथा कुछ पढ़ी लिखी भी नहीं थी। इस कारण उसकी पहचान नहीं हो पाई।

किशोर लापता, मामला दर्ज

फतुहा। शुक्रवार को एक 15 वर्षीय किशोर के लापता हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। इस सन्दर्भ में सोनारू निवासी किशोर के पिता सुजीत कुमार ने थाने में गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया है। बताया जाता है कि 15 वर्षीय किशोर निखिल कुमार बीते गुरुवार को सुबह दस बजे यह कहकर घर से निकला था कि वह फतुहा बाजार जा रहा है। लेकिन वह घर अबतक नहीं लौटा है। शिकायत के आलोक में पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

रक्तदान शिविर कल

पटना सिटी (प्राकि)। मारवाड़ी महिला समिति की पटना सिटी शाखा के द्वारा रविवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। समिति की अध्यक्ष विनीता डोकानिया व इंदु अग्रवाल ने बताया कि चौक के गुरु गोविंद सिंह पथ के भामा शाह भवन में शिविर पूर्वाह्न 11 बजे से शुरू होगा। उद्घाटन डॉ शिल्पी गोलवारा और प्रांतीय रक्तदान प्रभारी कविता पोद्दार करेंगी। रक्त संग्रह मां ब्लड सेंटर को किया जा रहा है।

अलविदाई मजलिस में की दुआ

पटना सिटी (प्राकि)। खानकाह हरजत दीवान शाह अरजा दरगाह कर्बला में मुहर्रम पर स्थापित सिपहर व ताजियों के पहलाम होने के बाद बुधवार को अल विदाई मजलिस का आयोजन किया गया। इसमें शामिल जायरीनों ने दुआएं मांगीं। खानकाह के सज्जादानशीं सैयद शाह अंजार हुसैनी ने दुआ की। सज्जादानशीं ने बताया कि दरगाह कर्बला में पहलाम शुरू होने से पहले और पहलाम समाप्त होने के बाद 12वीं मुहर्रम पर अल विदाई मजलिस होती है।

बैंक ने तख्तश्री कमेटी को दिया ई-रिक्शा

पटना सिटी (प्राकि)। शुक्रवार की शाम में बैंक ऑफ बड़ौदा के 117वां स्थापना दिवस पर तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब को एक ई-रिक्शा महिन्द्रा का दान में दिया गया है। संगतों की सुविधा के लिए यह खासा काम आएगा। इसके लिए अरदास जत्थेदार व मुख्य ग्रंथी ज्ञानी बलदेव सिंह के द्वारा दिया गया। इस मौके पर बैंक आफ बड़ौदा के एजीएम संजय कुमार, डीआरएम अमरेश कुमार, तख्तश्री कमेटी के कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह एवं सचिव हरबंश सिंह उपस्थित थे।

सेवादार कल्याण समिति की बैठक आज, तदर्थ समिति को बताया गलत

अगस्त से सेवादारों का वोटरलिस्ट बनेगा, तख्तश्री कमेटी के पूर्व होगा चुनाव

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के मातहत काम करने वाले कर्मचारियों का संगठन सेवादार कल्याण समिति अब लगभग टूट के कगार पर आ चुका है। टूट से बचने के लिए समिति के अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह बंटी, महासचिव अजायब सिंह से लेकर अन्य पदाधिकारी सक्रिय हैं। इसे लेकर समिति की बैठक शनिवार को अपराह्न दो बजे पुरानी दर्शनी ड्योढ़ी के पास आहूत की गई है। वहीं दूसरी ओर सेवादारों की बनाई तदर्थ समिति के संरक्षक त्रिलोक सिंह निषाद ने कहा कि अगस्त माह से सेवादारों के वोटर लिस्ट बनाने का काम शुरू कर दिया जाएगा और तख्तश्री कमेटी के चुनाव के पहले इस समिति का चुनाव करा दिया जाएगा। दोनों पक्षों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी जारी है। इधर सेवादार कल्याण समिति के अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह बंटी, महासचिव अजायब सिंह, दीपक सिंह, बलवंत सिंह और पूर्व अध्यक्ष बलराम सिंह ने कहा कि सेवादार सब एकजुट हैं। कहीं कोई दिक्कत या परेशानी नहीं है। 15 जुलाई को ही गलतबयानी करने पर बहुमत से समिति के संरक्षक त्रिलोक सिंह निषाद को निष्कासित कर दिया गया है। वह निजी स्वार्थ में समिति के खिलाफ काम कर रहे हैं। 15 साल से सेवादारों का कोई काम नहीं कर अपना स्वार्थ अधिक साधने का काम उन्होंने किया है। संयोजक और उप संयोजक सहित सदस्यों को जिस ढंग से बनाया गया है, वह सब नियम के विपरीत है। सेवादारों से अपील की गई है कि वह ऐसे तत्वों के बहकावे में नहीं आएं। यह अपने निजी स्वार्थ के लिए प्रबंधक कमेटी पर दबाव बना रहे हैं और इन्होंने समिति को भी तख्तश्री कमेटी पर दबाव बनाने के लिए कहा था, लेकिन हमने साफ मना कर दिया कि कोई भी निजी कार्य या नियम विरुद्ध काम नहीं करेंगे। तदर्थ समिति का जो गठन 18 जुलाई को किया गया है, वह गलत है। समिति की बैठक शनिवार को अपराह्न दो बजे पुरानी दर्शनी ड्योढ़ी के पास बुलाई गई है। इसमें सभी सेवादारों को भाग लेने की अपील की गई है। दूसरी और सेवादार कल्याण समिति तदर्थ समिति के संरक्षक ने कहा कि वह संयोजक सरदार दिलीप सिंह पटेल से कहेंगे कि अगस्त, 24 से सेवादारों के लिए वोटर लिस्ट बनाने का काम शुरू कर दिया जाए। तख्तश्री कमेटी के चुनाव के पहले ही समिति का चुनाव कर दिया जाएगा। कारण कि समिति के कुछ ऐसे पदाधिकारी थे, जो कहते थे कि हलका नंबर एक, दो और तीन में सैकड़ो की संख्या में हमारे वोटर हैं। जिसको मैं कहूंगा उसको वोट देंगे। सेवादारों के वोट के बदले उम्मीदवारों से मोटी रकम लेने का इनकी मंशा थी। वोट सेवादार के परिवार का और रुपया वोट के सौदागर लेने का काम करते थे। भोले भाले सेवादार को इसकी जानकारी तक नहीं हो पाती थी। सेवादार बदनाम हो जाते थे। इसलिए ऐसे वोट के सौदागरों से बचना चाहिए, ताकि हमारा सेवादार बदनाम न हो सके। श्री निषाद ने कहा कि वे तीनों हलका नंबर के उम्मीदवारों से आग्रह करेंगे कि वोट के सौदागरों से बचने का काम करें। जो सेवादार मतदाता सूची में नाम जोड़ना चाहते हैं, वह संयोजक सरदार दिलीप सिंह पटेल से मिलकर संपर्क करें। अब इतना तय है कि दोनों समिति के पदाधिकारी अपने-अपनी समिति को वैध ठहराने में लगे हैं। आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी जारी है। ऐसे में पूरी संभावना बन रही है कि समिति दो फाड़ हो जाए।

पालीगंज में गोली लगी युवक का शव बरामद

प्रात :किरण संवाददाता

पालीगंज/ शुक्रवार की सुबह अनुमंडल सह प्रखण्ड क्षेत्र के इमामगंज थाना अंतर्गत मुंगीला गांव के पास से एक गोली लगी युवक का शव बरामद हुई है। जानकारी के अनुसार शुक्रवार की सुबह ग्रामीणों की नींद खुली तो घर से बाहर निकले। उसी दौरान उन ग्रामीणों की नजर गांव के समीप ढलाई की गई रास्ते पर खून से लथपथ एक शव पर नजर पड़ी। नजदीक से देखा तो पाया कि युवक की सिर मे गोली लगी है। वही शव के पास एक पिस्टल, स्प्राइट का बोतल व सिगरेट पड़ा है। युवक की पहचान मुंगीला गांव निवासी अमरेश के 22 वर्षीय पुत्र ओमप्रकाश के रूप में हुआ। शव मिलने की सूचना फैलते ही आसपास के इलाके में सनसनी फैल गयी। देखते ही देखते घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। वही रो रोकर परिजनों का बुरा हाल हो गया। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची इमामगंज थाने की पुलिस शव को कब्जे में ले लिया व कानूनी प्रक्रिया पूरी कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। यह हत्या है या आत्महत्या पुलिस गुत्थी को सुलझाने में जुटी है।ग्रामीणों के अनुसार गुरुवार की देर रात लगभग ग्यारह बजे गोली चलने की आवाज हुई थी लेकिन इसपर किसी ने ध्यान नही दिया। फिलहाल इमामगंज थाने की पुलिस मामले की जांच में जुटी है। इस मामले में इमामगंज थाने की पुलिस ने बताया कि मृतक के परिजनों ने थाने में अज्ञात के खिलाफ गोली मारकर युवक की हत्या करने की प्राथमिकी दर्ज कराया है। मामले की जांच किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि मृतक के पिता अमरेश जन वितरण प्रणाली के दुकानदार है। मृतक ओमप्रकाश अमरेश का इकलौता पुत्र था। वह अपने पिता के कार्यो में हाथ बटाया करता था। पीडीएस दुकान का सारा कामकाज ओमप्रकाश ही किया करता था।

चोरी का दो फोर व्हीलर पूर्वी नंदगोला गैरेज से बरामद

नंबर प्लेट, इंजन व चेचिस से किया गया था छेड़छाड़

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मालसलामी थाना के पुलिस ने 16 और 17 जुलाई की रात दो चार पहिया वाहन को एक मोटर गैराज से बरामद किया है। इस संबंध में थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि दोनों वाहन की जांच किए जाने के बाद यह चोरी का पाया गया। दरअसल एक स्कॉर्पियो है, जो लखीसराय के रहने वाले का है और खगौल थाना क्षेत्र से इसकी चोरी की गई थी। वहीं दूसरी गाड़ी सेंट्रो जिन है। यह झारखंड की राजधानी रांची से चोरी की गई थी। दरअसल रांची पुलिस ने अंतरराज्यीय वाहन चोर गिरोह जैनी को गिरफ्तार किया था। उससे मिली जानकारी के आधार पर पुलिस ने मालसलामी थाना क्षेत्र के पूर्वी नंदगोला स्थित बिट्टू कुमार के गैराज में छापेमारी किया। यहां से दोनों चार पहिया वाहन को बरामद किया गया। दोनों वाहन का नंबर प्लेट, चेचिस और इंजन नंबर के साथ छेड़छाड़ किया गया था। सूचना दिए जाने के बाद रांची से आई झारखंड पुलिस सेंट्रो जिन को अपने साथ ले गई है, जबकि स्कॉर्पियो अभी थाना परिसर में है। इसके मालिक को भी सूचना दी गई है। थानाध्यक्ष ने कहा कि दरअसल यहां वाहन पार्किंग का खासा अभाव है। गैरेज वाले ने दोनों वाहन को अपने यहां पार्किंग के लिए जगह दे दिया था। इस संबंध में पूछताछ या कागजात के संबंध में कोई जानकारी नहीं ली गई थी। किसी की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है।

ताजिया पहलगाम में शामिल फैजल कट्टा-गोली के साथ गिरफ्तार

चौक थाना की पुलिस ने भी मोर्चा रोड से दो लोगों को दो देसी कट्टा व दो गोली के साथ दबोचा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

सुल्तानगंज थाना की पुलिस ने हथियार के साथ एक और चौक थाना की पुलिस ने हथियार और गोली के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। सुल्तानगंज थाना के थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया कि गुरुवार को सब्जीबाग से निकला ताजिया जुलूस में पीरबहोर थाना की पुलिस एस्कॉर्ट कर रही थी। इसी दौरान जब वह ताजिया का जुलूस पहलाम के लिए सुल्तानगंज थाना क्षेत्र में प्रवेश किया। इस दौरान एक युवा कट्टा लहराने लगा। इसी दौरान पीरबहोर थाना की पुलिस, जो उक्त पहलाम जुलूस में साथ थी, उस युवक को पकड़ा और सुल्तानगंज थाना को सुपुर्द कर दिया। पकड़ा गया व्यक्ति का नाम फैजल अहमद उर्फ मंतोष पिता छोटू अहमद उर्फ मोहम्मद सोनू है। वह कदमकुआं थाना क्षेत्र के लंगर टोली का रहने वाला है। उसके पास से एक अवैध देसी कट्टा और एक गोली बरामद किया गया है। इस संबंध में उस पर मामला दर्ज करते हुए आगे की कार्रवाई की जा रही है। इधर चौक थाना की पुलिस ने मोर्चा रोड में छापेमारी का दो लोगों को दो देसी कट्टा और दो गोली के साथ गिरफ्तार किया है। इस संबंध में थानाध्यक्ष शशि कुमार राणा ने बताया कि गुप्त सूचना मिली कि मोर्चा रोड में कुछ अपराधी गलत मंसूबा को लेकर मौजूद है। तभी सहायक अवर निरीक्षक दिलीप कुमार पासवान को सशस्त्र बल के साथ भेजा गया। यहां छापामारी करने के बाद इसी मोहल्ले का रहने वाला अंशु कुमार यादव और नीतीश कुमार उर्फ डोमन को गिरफ्तार किया गया है। दोनों के पास से दो देसी कट्टा और दो गोली बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि इन दोनों के खिलाफ पूर्व में भी चौक थाना में हत्या का प्रयास और आर्म्स एक्ट में भी मामला दर्ज है। अन्य थाना में भी मामला दर्ज होने की सूचना है। दोनों के खिलाफ मामला दर्ज करने के बाद पुलिस ने न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा की वापसी होगी कल

भगवान से मिलने भगवती लक्ष्मी पहुंचीं, पूजा-अर्चना

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मच्छरहट्टा के गोपीनाथ जी की गली स्थित प्राचीन जगन्नाथ मंदिर से 13 दिनों के प्रवास में लल्लू बाबू के कूचा स्थित मंदिर में रह रहे भगवान जगन्नाथ की पूजा-अर्चना पंडित रामानंद पांडेय की देखरेख में चल रहा है। शुक्रवार को भगवान से मिलने के लिए माता लक्ष्मी पहुंचीं। यहां पर धार्मिक अनुष्ठान के बाद भक्तों को दर्शन कराया गया। शनिवार को भगवान कालिया नाग पर भक्तों को दर्शन देंगे। आयोजन में आचार्य सुरेश मिश्र ने पूजा-अर्चना कराया और कृष्ण पांडेय ने भजन कीर्तन की प्रस्तुति दी। आयोजन में सचिव गणेश प्रसाद रोहगती, हर्ष कृष्ण रोहगती, सचिच्दानंद शर्मा, अंबुज रोहतगी, कृष्ण कुमार सिन्हा, प्रह्लाद अग्रहरि, कृष्णा जायसवाल, राजीव रोहगती, संजीव सिन्हा, अखिल, धुव्र, चंदन सिंह, भानू शर्मा, विशाल आदि शामिल थे। रविवार को रथयात्रा की वापसी हागी। दीवान मुहल्ला स्थित नौजर घाट में प्राचीन जगन्नाथ मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना का अनुष्ठान पुजारी आचार्य विष्णुकांत झा की देखरेख में चल रहा है।

वरिष्ठ शिक्षक मौत के बाद भी शिष्यों के अनुसंधान को किया शरीर को दान

परिजनों ने मृतक की इच्छा को पूरा करते आईजीआईएमएस के एनाटॉमी विभाग को शरीर सौंपा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दधीचि देहदान समिति, बिहार के जागरूकता अभियान के तहत मितन घाट के रहने वाले 74 वर्षीय स्मृतिशेष मनोहर सिंह का संपूर्ण शरीर गुरुवार की रात आईजीआईएमएस के एनाटॉमी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अवनीश कुमार को सुपुर्द किया गया। इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के आई बैंक के द्वारा नेत्रदान किया गया। मृतक पेशे से वरिष्ठ शिक्षक थे और जाते-जाते भी शिष्यों के अनुसंधान कार्य के लिए वह पूरा शरीर को दान करने की इच्छा जाहिर की थी। उनके संकल्प को उनके बेटे सत्वश्री एवं परिजनों ने इस साहसिक पुण्य कार्य को संपन्न कर समाज के लिए एक अनुपम उदहारण पेश किया है। इस अवसर पर उपस्थित अस्पताल, परिवार एवं समाज के लोगों के बीच समिति के महामंत्री पद्मश्री बिमल जैन ने इस साहसिक प्रयास के लिए पूरे परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सभी लोगों से अनुरोध किया कि मृत्यु को जीवन का अंत न बनाएं। संकल्प लेकर नेत्रदान/अंगदान व देहदान करने का संकल्प लें। इस अवसर पर एनाटॉमी विभाग के डॉ विनोद कुमार ने अपने संबोधन में परिवार को साहसिक कदम उठाने के लिए धन्यवाद दिया। दधीची देहदान समिति के प्रयासों के तहत यह बिहार का 16वां देहदान है। इस अवसर पर मृतक की सद्गति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई एवं दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समिति अध्यक्ष सह पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर दधीचि देहदान समिति के प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव कुमार यादव, सदस्य गोविंद कानोडिया, विवेक माथुर, पारस जैन, उपस्थित डॉक्टर्स एवं परिवार के सदस्यों ने विनम्र श्रद्धांजलि दी। समिति ने आम लोगों का आह्वान किया कि महर्षि दधीचि कि इस परंपरा को सार्थक करने का प्रयास करें तथा पीड़ित मानवता की सेवा में अपना योगदान करें।

वीरगति को प्राप्त जवानों वीरांगना व परिजन के लिए सम्मान समारोह का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। नगर के अंतर्गत कारगिल विजय दिवस के 25 वीं वर्षगांठ पर बिहार रेजीमेंटल सेंटर द्वारा 21 जुलाई को ऑपरेशन विजय में वीरगति को प्राप्त जवानो वीरांगना व परिजन के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इसको लेकर सेना में तैयारी चल रही है। अखौड़ा हॉल में होने वाले कारगिल के ऑपरेशन विजय में वीरगति को प्राप्त बिहार के सैनिक के वीरांगना व उनके परिजन के सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में रक्षा राज्यमंत्री व राज्यपाल होगे। कार्यक्रम में वीरांगना को मुख्य अतिथि सम्मानित करेगे। कार्यक्रम में बिहार रेजीमेंट के बिहार के रहने वाले ऑपरेशन विजय वीरगति को प्राप्त करने वाले परिजन व वीरांगना के अलावे सैन्य अधिकारी व जवान शामिल होगे।

एक अपार्टमेंट में महिला ने गले में फंदा डालकर कि आत्महत्या

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत गोलारोड टी प्वाईंट के पास एक अपार्टमेंट में विवाहिता ने गले में फंदा डाल आत्म हत्या कर ली। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा परिजन को सौप दिया। इस संबंध मृतका के पिता ने पति व ससुराल वालो पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाते हुए प्रताड़ना से तंग आकर आत्म हत्या करने का मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने आरोपी पति राज कुमार सिंह को गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई में जुटी है। छपरा के विशुनपुरा निवासी कामेश्वर सिंह कीपुत्री कविता 38 की शादी गोपालगंज के हथुआ निवासी राजकुमार सिंह से हुआ था। राज कुमार सिंह पत्नी कविता व दो बच्चो के साथ पिछले एक माह से गोलारोड के टीप्वाईंट के पास एक अपार्टमेंट में रह रहा था। राज कुमार ने बताया कि बच्चो के साथ सभी सोये थे। देर रात नींद खुली तो पत्नी को नही देखा। उठकर जब दूसरे के कमरे की ओर गया तो कविता फंदे से झुलती मिली। जिसे उतार कर वे लोग अस्पताल पहुंचे जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। उधर पुत्री की मौत की सूचना पर पहुंचे मृतका के पिता कामेश्वर सिंह ने पुलिस को बताया कि शादी के बाद से ससुराल वाले प्रताडित करते थे। कई बार पंचायत भी हुआ। जिसके बाद राज कुमार सिंह परिवार से अलग मीरगंज में अच्छे से रहने लगा था। मृतका के परिजनो ने बताया कि कुछ दिन पूर्व ही बच्चो के पढाई का बहाना बना कर कविता व बच्चो को लेकर यहां आ गया। थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भरद्वाज ने बताया कि दो बच्चो की मां द्वारा गले में फंदा डाल आत्म हत्या करने का मामला प्रकाश में आया है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा परिजन को सौप दिया गया। इस संबंध में मृतका के पिता कामेश्वर सिंह के ब्यान पर पति राज कुमार सिंह समेत ससुराल वालो के विरूद्ध मामला दर्ज कराया गया है।

ऑटो में बैठे व्यापारी का थैला काट पांच लाख उड़ाया

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना जिला के बाहर से मारूफगंजव मच्छरहट्टा मंडी में खरीदारी करने आए व्यापारी का ऑटो सवार उचक्कों ने थैला काटकर पांच उड़ा दिया। इस दौरान पीड़ित व्यापारी पहले चौक थाना गया। इसके बाद मामला बाइपास थाना का बताते हुए उसे वहां भेज दिया गया। नतीजतन देर शाम तक व्यापारी दो थाना के बीच झूलता रहा। वहीं पुलिस ने पीड़ित व्यापारी को मीडिया या किसी से भी बात नहीं करने की सख्त हिदायत दे रखी थी। इस संबंध में जब डीएसपी-2 डॉ गौरव कुमार से बात की गई, तो उनका कहना था कि उन्होंने चौक और बाइपास थाना के थानाध्यक्ष से बात की है। दोनों ने पीड़ित व्यापारी के द्वारा किसी भी तरह का लिखित आवेदन नहीं दिए जाने की बात कही है। दरअसल व्यापारी पटना साहिब स्टेशन उतरने के बाद मारूफगंज या चौक जाने के लिए ऑटो में सवार हुआ। मगर ऑटो चालक स्टेशन से चौकशिकारपुर आरओबी से होते हुए गुरु गोविंद सिंह लिंक पथ की ओर जाने लगा। जब व्यापारी ने कहा कि उसे चौक जाना था, तो आप कहां ले जा रहे हो ऑटो वाले ने बोला कि वह बाइपास जा रहा है। कुछ ही दूर जाने के बाद वह ऑटो को रुकवा कर व्यापारी पैदल जाने लगा। मगर कुछ ही दूरी पर जब वह पहुंचा और अपना लाल बाग देखा, तो बैग कटा हुआ पाया। जब उसने थैला को चेक किया, तो उसमें रहे पांच लाख रुपया नहीं था। इसके बाद पीड़ित व्यापारी चौक थाना पहुंचा। वहां की पुलिस उसे साथ लेकर उस जगह पर पहुंची, जहां उसके साथ घटना हुई थी। पुलिस ने छानबीन भी किया। सीसीटीवी भी खंगालने का काम किया। इस दौरान पीड़ित व्यापारी को सख्त हिदायत दी गई कि वह किसी से कोई बात नहीं करे और यही हुआ भी। मीडिया के लोग भी उससे बातचीत करने की कोशिश किए, मगर वह अपना नाम, पता कुछ भी नहीं बता पा रहा था। पुलिस उसे चौक थाना भी ले गई।

डिस्चार्ज प्रक्रिया की दक्षता को और बढ़ाने के लिए एम्स प्रतिबद्ध

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एम्स पटना प्रशासन ने अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित हालिया लेख पर स्पष्टीकरण जारी किया है। एम्स द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि 8 जुलाई, 2024 को एक अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित हालिया लेख, जिसका शीर्षक था एम्स पटना में पीएमजेएवाई रोगियों के डिस्चार्ज में 4 दिन का समय के जवाब में, हम एक तथ्यात्मक स्पष्टीकरण प्रदान करना चाहते हैं। रिपोर्ट में किए गए दावों की जांच के लिए गठित एक समिति ने जांच की । मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है। रिपोर्ट की गई जानकारी में विसंगतियां: जांच में हाल ही में एक अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित लेख में किए गए दावों और एम्स पटना के वा सावधिक रिकॉर्ड के बीच महत्वपूर्ण विसंगतियां सामने आईं। निम्नलिखित विशिष्ट मामलों की जांच की गईः मोहम्मद गुलशादः इस दावे के विपरीत कि उन्हें 7 जुलाई को छुट्टी दे दी गई, रिकॉर्ड बताते हैं कि मोहम्मद गुलशाद को 6 जुलाई को सुबह 11:25 बजे छुट्टी दे दी गई। लाल बाबू सिंहः लेख में कहा गया है कि वह 4 जुलाई से डिस्चार्ज होने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन रिकॉर्ड बताते हैं कि डिस्चार्ज प्रक्रिया 6 जुलाई को सुबह 10:40 बजे शुरू हुई और 7 जुलाई को दोपहर 1:16 बजे पूरी हुई। मीरा देवीः लेख में 4 जुलाई से प्रतीक्षा अवधि का दावा किया गया है, जबकि वास्तविक डिस्चार्ज प्रक्रिया 6 जुलाई को रात 10:22 बजे शुरू हुई और 7 जुलाई को दोपहर 1:36 बजे पूरी हुई। मोहम्मद आजमः रिपोर्ट में 3 जुलाई से प्रतीक्षा अवधि का संकेत दिया गया था, लेकिन बुखार की पुनरावृत्ति के कारण उपचार जारी रहने के कारण 8 जुलाई को अंतिम छुट्टी के साथ डिस्चार्ज प्रक्रिया 4 जुलाई को शुरू हुई। इसके अलावा, मरीज को एक विशिष्ट पैकेज कोड के तहत भर्ती किया गया था लेकिन उसे एक अलग चिकित्सा स्थिति के लिए उपचार प्राप्त हुआ। डिस्चार्ज के समय, इलाज करने वाले डॉक्टर ने चिकित्सा प्रबंधन कोड में बदलाव का अनुरोध किया। इससे डिस्चार्ज प्रक्रिया पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा लेकिन रोगी के हित में यह अपरिहार्य था। डिस्चार्ज प्रक्रिया की दक्षताः हमारे रिकॉर्ड बताते हैं कि अधिकांश मामलों (68 प्रतिशत) में, डिस्चार्ज प्रक्रिया उसी दिन पूरी हो गई थी जिस दिन इसे शुरू किया गया था। अगले दिन अतिरिक्त 25% रोगियों को छुट्टी दे दी गई। तकनीकी मुद्देः टीएमएस (ट्रांजैक्शन मैनेजमेंट सिस्टम) वेब पोर्टल में 2 से 11 घंटे तक लगातार और लंबे समय तक खराबी रही है, जिससे डिस्चार्ज प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इंटरनेट कनेक्टिविटीः एम्स पटना में इंटरनेट कनेक्टिविटी में समय-समय पर लेकिन थोड़े समय के लिए व्यवधान देखा गया है। हालाँकि, यह एनकेएन (भारत सरकार के राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क परियोजना) के रखरखाव कार्य के कारण था। समस्या अब सुलझ गई है और वर्तमान में दो वैकल्पिक लाइनें एक साथ काम कर रही हैं। रोगी पंजीकरण में वृद्धिः मार्च 2024 के बाद से, रोगी पंजीकरण में अचानक वृद्धि (2 गुना से अधिक की वृद्धि) हुई है, जिसने डिस्चार्ज प्रक्रिया को प्रभावित किया है। पीएम जेएवाई सेवा वितरण की जटिलताः पीएम जेएवाई सेवा वितरण प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से जटिल है और इसमें कई चरण और विभिन्न विभाग शामिल हैं। यह जटिलता, अन्य टीमों और कार्यों पर निर्भरता के साथ मिलकर देरी में योगदान करती है। एम्स द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया गया है हाल ही में अखबार में मरीज को छुट्टी मिलने में देरी के संबंध में प्रकाशित लेख में किए गए दावे काफी हद तक अतिरंजित और पक्षपातपूर्ण पाए गए। हालाँकि, ढटखअ केसलो एड में लगातार वृद्धि के मद्देनजर, एम्स पटना किसी भी अत्यधिक देरी से बचने और डिस्चार्ज प्रक्रिया की दक्षता को और बढ़ाने के लिए निरंतर सुधार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कैबिनेट फैसला : जलसंकट को देखते हुए राज्य सरकार का बड़ा निर्णय

औरंगाबाद, डिहरी एवं सासाराम में सोन नदी से मिलेगा पीने का पानी

● राज्य सरकार ने 1 हजार 347 करोड़ की दी स्वीकृति

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में शुक्रवार को राज्य मंत्रिपरिषद् की बैठक हई। जिसमें कुल 27 एजेंडों पर निर्णय लिया गया। जलवायु परिवर्तन होने के कारण जलस्तर में गिरावट को देखते हुए राज्य सरकार संवेदनशील है। राज्य सरकार ने औरगांबाद, डिहरी एवं सासाराम में पेयजल की समस्या को दूर करने के लिए बड़ा फैसला लिया है। इन शहरों में सोन नदी से पीने का पानी उपलब्ध कराया जाएगा। सरकार ने इसके लिए राशि की स्वीकृति दे दी है। इन शहरों में जल शोधन संयंत्रों से प्राप्त जल का घर-घर वितरण कराया जाएगा। मंत्रिपरिषद् की बैठक के बाद मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ने सूचना भवन में प्रेस को संबोधित करते हुए बताया कि जल संसाधन विभाग के अन्तर्गत जल जीवन हरियाली अभियान अंतर्गत टर्न-की आधार पर औरंगाबाद, डिहरी एवं सासाराम शहरों के लिए सोन नदी में उपलब्ध सतही जल का उपयोग करते हुए पेयजल उपलब्ध कराने के लिए 1 हजार 347 करोड़ की प्रशासनिक एवं व्यय की स्वीकृति दी गई। सरकार के इस फैसले से औरगांबाद, डिहरी एवं सासाराम में पेय जल की समस्या दूर होगी। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य योजना के तहत मुख्यमंत्री तालाब मात्स्यिकी विकास योजना हेतु कुल रुपए 45 करोड़ 66 लाख 71 हजार की लागत पर योजना एवं व्यय की स्वीकृति तथा स्वीकृत अनुदान दर एवं शर्तों के अनुरूप उक्त योजना को आगे के वर्षों में भी कार्यान्वयन की स्वीकृति दी गई। कृषि विभाग के अन्तर्गत चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत दलहन फसल के प्रोत्साहन हेतु वित्तीय वर्ष 2024-25 में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा (कृषोन्नति योजना)-दलहन योजना अन्तर्गत कुल 55 करोड़ 09 लाख 6 हजार रुपए एवं टरफा योजना अन्तर्गत कुल 40 करोड़ 86 लाख 44 हजार रुपए कुल 95 करोड़ 95 लाख 50 पचास हजार रुपए की लागत पर योजना कार्यान्वयन तथा निकासी एवं व्यय की स्वीकृति दी गई। कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के अन्तर्गत बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024 की स्वीकृति दी गई।

अब प्रतिदिन मिलेंगे प्रति वर्गमीटर के सफाई पर1 रुपए 20 पैसे : अस्पतालों में साफ सफाई कर्मियों के लिए खुशखबरी है। राज्य सरकार ने सफाई कर्मियों पर मेहरबानी दिखाई है। स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत राज्य के सभी चिकित्सा महाविद्यालय अस्पतालों, सभी सदर, जिला अस्पतालों तथा अनुमंडल अस्पतालों के अस्पताल के भवनों एवं परिसर की साफ-सफाई का कार्य बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन समिति द्वारा संपोषित सामुदायिक संगठन जीविका के माध्यम से किये जाने हेतु निर्धारित दर 1 रुपए 20 पैसे प्रति वर्गमीटर प्रतिमाह को 1 रुपए 20 पैसे प्रति वर्गमीटर प्रतिदिन से प्रतिस्थापित करने की स्वीकृति दी गई। इससे कार्य संचालन में सुगमता आएगी

खेल विभाग में 382 पदों को स्वीकृति

बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के बेहतर प्रबंधन और संचालन के लिए मंत्रिमंडल ने 301 पदों के सृजन की स्वीकृति दी है। नालंदा के राजगीर स्थित क्रिकेट स्टेडियम के सुगम संचालन के लिए विभिन्न कोटि के 81 पदों के सृजन की स्वीकृति भी शुक्रवार को कैबिनेट ने दी। मंत्रिमंडल ने राजधानी पटना के गर्दनीबाग में पटना हाई कोर्ट के न्यायाधीशों के लिए 20 आवासों के जजेज एनक्लेव निर्माण की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई है। कैबिनेट ने फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024 को स्वीकृति दी है, जिसके बाद अब बिहार में फिल्म निर्माण की संभावना तैयार होगी। मंत्रिपरिषद् ने पंचायत निर्माण कार्य मैनुअल को भी स्वीकृति दी। एक अन्य प्रस्ताव के तहत राजनैतिक दलों के कार्यालय के लिए आवंटित भवन के नवीनीकरण की बाध्यता समाप्त करने के लिए संशोधित नीति को मंजूरी दी गई। पंचायती राज विभाग के अन्तर्गत बिहार जिला परिषद् भू-सम्पदा लीज नीति, 2024 की स्वीकृति दी गई। सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग की बिहार वेब मीडिया नियमावली, 2021 की कंडिका-1(प) एवं 2.5 (क) में संशोधन हेतु बिहार वेब मीडिया (संशोधन) नियमावली, 2024 की स्वीकृति दी गई। वित्तीय वर्ष 2024-25 से मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना का प्रवर्तन एवं कार्यान्वयन की स्वीकृति दी गई। परिवहन विभाग के अन्तर्गत सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय मोटरवाहन नियमावली, 1989 के नियम-47, 48, 50, 51 एवं 54 के अन्तर्गत लागू किये गये बएच सीरिज के अन्तर्गत निबंधित होने वाले वाहनों के मोटरवाहन कर की अवधि एकमुश्त 14 वर्ष निर्धारित करने हेतु बिहार मोटरवाहन करारोपण अधिनियम, 1994 में संशोधन की स्वीकृति दी गई। परिवहन विभाग के अन्तर्गत बिहार सड़क सुरक्षा परिषद् के अन्तर्गत लीड एजेंसी के लिये संविदा के आधार पर स्वीकृत लेखा पदाधिकारी एवं रोकड़पाल के पद के योग्यता में संलग्न अनुलग्नक ए के अनुरूप संशोधन की स्वीकृति दी गई।

बिहार की प्रतिभा को नया आयाम देगी फिल्म प्रोत्साहन नीति : विजय

● देश की सबसे अद्यतन फिल्म नीति लेकर आया है बिहार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कैबिनेट की बैठक में बिहार राज्य फिल्म प्रोत्साहन नीति पर मुहर लगा दी गई। कैबिनेट की बैठक के बाद उपमुख्यमंत्री सह कला ,संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि इस बहुप्रतीक्षित फिल्म नीति के आने से राज्य में फिल्म सहित दृश्य-श्रव्य माध्यम के मनोरंजन उद्योग को खासी गति मिलेगी । फिल्म कला और उद्योग होने के साथ वैश्विक स्तर पर भारत के लिए सॉफ्ट पावर उपकरण के रूप में काम करती हैं। इसलिए हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी फिल्म सहित मनोरंजन से जुड़े उद्यमों को बढ़ावा देने के बड़े पक्षधर रहे हैं ।उसी तरह माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी देश में राज्य की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को अपनी विशिष्टता के साथ देश और दुनिया के सामने ले जाने के हिमायती रहे हैं। इन दोनों की सोच का प्रतिबिंब लोग इस फिल्म नीति में देख सकते हैं। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि बिहार प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहरों से सम्पन्न राज्य है। लिहाजा नीतिगत समर्थन के जरिये राज्य के हमारे इन धरोहरों को शूटिंग गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है। इससे पर्यटन सहित अन्य उद्योगों पर अनुकूल असर तो होगा ही साथ ही प्रदेश की सकारात्मक छवि से देश और दुनिया के लोग परिचित हो सकेंगे। श्री सिन्हा ने कहा कि बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति देश की सबसे अद्यतन फिल्म नीतियों में से एक होगी । हम देश के अन्य राज्यों की तुलना में अधिक अनुदान भी मुहैया कराने जा रहे हैं। हम 4 करोड़ रुपए तक का अनुदान फिल्मकारों को उपलब्ध कराएंगे, जबकि देश के अन्य किसी भी राज्य में अधिकतम अनुदान की राशि 2.5 करोड़ रुपए है।

वहीं राज्य की क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों के लिए हम लागत के 50 प्रतिशत तक की राशि का अनुदान उपलब्ध कराएंगे। हमने इस नीति में टीवी धारावाहिकों तथा ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए बनने वाली फिल्मों के लिए भी क्रमशः 1 करोड़ और 3 करोड़ रुपए तक की राशि अनुदानित करने का निर्णय लिया है । राज्य की कहानी, पटकथा पर बनने वाली फिल्मों तथा राज्य के कलाकारों को फिल्म में काम देने पर भी हम विशेष अनुदान देने जा रहे हैं। उसी प्रकार फिल्मकार राज्य में 75 प्रतिशत से अधिक शूटिंग दिवस वाली फिल्मों के लिए विशेष अनुदान और प्रोत्साहन का लाभ ले पाएंगे। श्री सिन्हा ने कहा कि सरकार फिल्म निर्माण से जुड़े सभी हितधारकों को ध्यान में रखते हुए राज्य में फिल्म के औद्योगिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों का सकारात्मक लाभ उठाने की मंशा से इसे लाने जा रही है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमने फिल्म सुविधा प्रकोष्ठ में फिल्म निर्माण से जुड़े लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित की है। श्री सिन्हा ने कहा कि फिल्म प्रोत्साहन नीति का लक्ष्य अधिक से अधिक संख्या में मनोरंजन जगत के लोगों को बिहार में फिल्म निर्माण के लिए आकर्षित करना है। इसके लिए हम एकल खिड़की सुविधा के माध्यम से उन्हें वांछित सुविधाएं मुहैया कराएंगे। इस नीति का उद्देश्य राज्य की अलग-अलग भाषाओं में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देना भी है। साथ ही हम राज्य की प्रतिभाओं को भी विशेष प्रोत्साहन देंगे। देशभर के नामचीन फिल्म संस्थानों में पढ़ रहे युवाओं को वित्तीय सहायता देने के अलावा राज्य में फिल्म निर्माण से जुड़ी पढ़ाई और ट्रेनिंग को भी बढ़ावा दिया जाएगा। श्री सिन्हा ने कहा कि आज बिहार से जुड़े कई लेखक, निर्देशक, कलाकार और टेक्नीशियन फिल्म जगत में हमारा मान बढ़ा रहे हैं। इस नीति के माध्यम से उनकी प्रतिभा और हुनर का लाभ राज्य को मिल पाएगा। इस नीति के द्वारा सरकार फिल्म निर्माण से जुड़ी वित्तीय, ढांचागत और प्रक्रियागत अड़चनों को दूर करते हुए राज्य को फिल्म निर्माण का एक आकर्षक गंतव्य बनाना चाहती है। उक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में माननीय उपमुख्यमंत्री के साथ कला-संस्कृति विभाग की अपर मुख्य सचिव हरजोत कौर बाह्मरा भी मौजूद थीं। उन्होंने ने भी बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति को राज्य के आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के लिए एक सराहनीय पहल बताया।

श्रावणी मेला के दौरान बच्चों को पिलाई जाएगी पोलियो की खुराक : मंगल

भागलपुर, बांका और मुंगेर में चलाया जायेगा पल्स पोलियो अभियान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि 22 जुलाई से शुरू हो रहे श्रावणी मेला में स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से अलर्ट रहेगा। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग की ओर से लगाए जाने वाले सैकड़ों शिविरों में जहां आपातकाल से लेकर सामान्य अवस्था वाली चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध रहेगी। उसी क्रम में विभाग ने यह फैसला लिया है कि शून्य से पांच साल तक के बच्चों को विशेष अभियान के तहत पोलियो खुराक पिलायी जानी है। पोलियो को जड़ से मिटाना हमारा संकल्प व लक्ष्य हैं। श्री पांडेय ने कहा कि श्रावणी मेला के दौरान हजारों श्रद्धालु भारत के विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देश नेपाल से देवघर जाने के लिए भागलपुर, मुंगेर और बांका जिला से गुजरेंगे। इस मौके पर उनके साथ छोटे बच्चे भी होंगे। ऐसी स्थिति में इन तीन जिलों में 22 जुलाई से 19 अगस्त 2024 तक पल्स पोलियो का विशेष टीकाकरण अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान के संचालन हेतु इन जिलों के स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया है। राज्य को पोलियो संक्रमण से मुक्त रखने के लिए विभिन्न त्योहारों एवं मेलों के दौरान राज्य के बाहर से आने वाले बच्चों को विभाग विशेष अभियान चलाकर प्रतिरक्षित करती है। उसी तर्ज पर श्रावणी मेला के दौरान भी पल्स पोलियो का विशेष अभियान चलाया जाएगा। पोलियो संक्रमण की रोकथाम में इन मौकों पर चलाए जाने वाले अभियान उसकी रोकथाम के लिए आवश्यक हैं। श्री पांडेय ने कहा कि भारत के साथ ही 10 दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को पोलियो मुक्त घोषित कर दिया गया है। जबकि वर्ष 2024 में पड़ोसी देश पाकिस्तान और अफगानिस्तान में पांच - पाच पोलियों के मरीज पाए गए हैं। ऐसी स्थिति में राज्य में पोलियो के संक्रमण का खतरा बना हुआ है। इस खतरे से राज्य में बचाव के लिए उच्च गुणवत्ता के पल्स पोलियो अभियान चलाते रहना आवश्यक है। समय - समय पर ऐसे मौकों पर अभियान पोलियो की रोकथाम में सहायक होते हैं।

प्रतिरोध मार्च निकालने के बजाए जंगलराज के पीड़ित परिवारों से माफी मांगे राजद : उमेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने शुक्रवार को बयान जारी कर राजद को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि कानून-व्यवस्था पर प्रतिरोध मार्च निकालने के बजाए नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को जंगलराज के उन पीड़ित परिवारों से माफी मांगनी चाहिए जिन्हें लालू-राबड़ी के सरकार में सत्ता संरक्षित अपराधियों ने कई तरह की यातनाएं दी थी और आज भी उनका घाव भरा नहीं है। श्री कुशवाहा ने कहा कि राजद का प्रतिरोध मार्च जनता को दिग्भ्रमित करने का एक राजनीतिक हतकंडा मात्र है लेकिन यह पूरी तरह से बेअसर और विफल साबित होगा। बिहार की जनता राजद के असली चाल-चरित्र से वाकिफ है और उनके काला इतिहास से भी भली-भांति परिचित है। लालू-राबड़ी के शासनकाल में राज्य का कानून-व्यवस्था भगवान भरोसे था लेकिन आज मा0 मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में कानून का राज कायम है।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने वाले अब कानून के शिकंजे से नहीं बच सकते हैं। अपराध के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति नीतीश सरकार के सुशासन की पहचान रही है। जबकि लालू-राबड़ी के दौर में बिहार जंगलराज और भ्रष्टाचार का प्रतीक था। पूरे प्रदेश में सरकार पोषित गुंडों का बोलबाला और अपराधी बेलगाम थे। तब पटना हाईकोर्ट ने बिहार में जंगलराज का जिक्र करते हुए कहा था, बिहार में सरकार नहीं है, बिहार में जंगलराज कायम हो गया है। श्री कुशवाहा ने कहा कि वर्ष 2005 के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने नेतृत्व क्षमता से बिहार को जंगलराज के अंधकार से बाहर निकाला और सुशासन स्थापित किया है। बिहार में खौफ का वातावरण अब पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। कानून को हाथ में लेने वाले अपराधियों के खिलाफ प्रशासन कठोर कार्रवाई करती है।

इंडिया गठबंधन का प्रतिरोध मार्च आज : एजाज

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि बिहार में लगातार बढते अपराधिक घटनाओं व लचर कानून व्यवस्था तथा राज्य सरकार की विफलता के खिलाफ इंडिया गठबंधन के द्वारा शनिवार को यानी आज राज्य के सभी जिला मुख्यालयों पर प्रतिरोध मार्च किया जाएगा। प्रतिरोध मार्च के बाद इंडिया गठबंधन के नेताओं के द्वारा संयुक्त रूप से मांगो से संबंधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा जाएगा। एजाज ने आगे बताया कि पटना में भी आज राजद के जिला कार्यालय विधायक फ्लैट ,वीरचंद पटेल पथ से सुबह 10 बजे शुरू होगा। जो पटना के डाक बंगला चौराहा होते हुए जिला समाहरणालय (हिंदी भवन) तक जाएगा। इन्होंने यह भी बताया कि इस मार्च में महागठबंधन के सभी दलों के वरिष्ठ नेताओं के साथ पार्टी के पदाधिकारी और सक्रिय कार्यकर्ता भी भाग लेंगे।

बिहार को विशेष राज्य दर्जा देने की मांग पर जदयू की नियत साफ नहीं : राजद

पटना। राजद ने सत्ताधारी दल जदयू को निशाने पर लिया है। शुक्रवार को राजद के प्रदेश प्रवक्ता चित्तरंजन गगन दल के अन्य प्रवक्ता मृत्यंजय तिवारी, सारिका पासवान, प्रमोद कुमार सिन्हा एवं अरुण यादव के साथ पार्टी के प्रदेश कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा की तरह जदयू भी अब बिहार को विशेष राज्य दर्जा देने की मांग से पीछे हटने लगी है। इसीलिए उसके नेताओं की भाषा बदलने लगी है। अब वे बोल रहे हैं कि विशेष दर्जा नहीं तो विशेष पैकेज हीं दे दिया जाए। श्री गगन ने कहा कि विशेष पैकेज का मतलब यदि मोदी मॉडल है तो इससे बिहार को कुछ विशेष हासिल होने वाला नहीं है। यह केवल बिहार वासियों को गुमराह करने की कवायद समझी जाएगी।18 अगस्त 2015 को प्रधानमंत्री ने बिहार को 1 लाख 65 हजार करोड़ का विशेष पैकेज देने की घोषणा की थी। भाजपा और जदयू नेताओं के अनुसार प्रधानमंत्री द्वारा घोषित विशेष पैकेज बिहार को मिल भी चुका है। हालांकि जिस 1लाख 25 हजार करोड़ के विशेष पैकेज बिहार को दिए जाने का दावा भाजपा और अब जदयू भी करने लगी है। उसमें 1 लाख 10 हजार करोड़ की योजनाएं तो यूपीए सरकार की हीं देन है। इसे खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी हीं स्वीकार चुके हैं। यदि सही में जदयू की मंशा बिहार के विकास के प्रति नियत साफ है तो उसे केन्द्र पर दबाव बना कर बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलवाने के लिए पहल करना चाहिए। अभी हीं सुनहरा मौका है। यदि इसमें नीति आयोग बाधक है तो अब तो नीति आयोग में बिहार के तीन - तीन मंत्री शामिल हैं। अभी संसद का बजट सत्र शुरू होने वाला है। केन्द्र सरकार की नियत यदि साफ है तो इसी सत्र में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की घोषणा होनी चाहिए।अब यह जदयू को तय करना है कि वह बिहार की हिस्सेदारी चाहता है कि की राज भोगने के लिए केवल सत्ता में भागीदारी चाहता है।

नीतीश राज में महिलाओं को मिला हिम्मत और अधिकार: राजीव

पटना। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि लालू-राबड़ी काल में महिलाओं की जितनी प्रताड़ना हुई थी, वैसा आजाद भारत में कभी देखा नहीं गया। एक महिला मुख्यमंत्री होने के बावजूद बिहार की महिलाओं को कोई न तो आरक्षण का अधिकार मिलता था और न ही शिक्षा या सुरक्षा। उसपर से अपराधियों का मनोबल बढ़ा कर उन्हें घरों में रहने के लिए विवश कर दिया गया था। वहीं बाल विवाह और दहेज हत्या के मामले आम बन गये थे। दलितों, पिछड़ों व अतिपिछड़ों की बहू-बेटियों का तो और बुरा हाल था। सत्ता समर्थित गुंडे पसंद आने पर किसी को खुलेआम उठा लिया करते थे और पुलिस केस तक दर्ज नहीं करती थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में व्याप्त इस महिला विरोधी वातावरण का खात्मा श्री नीतीश कुमार जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद हुआ। उन्होंने न केवल महिलाओं के शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा व रोजगार के लिए प्रबंध किये बल्कि पंचायती चुनावों में 50 प्रतिशत का आरक्षण देकर उन्हें पुरुषों के बराबर खड़ा किया। उन्हीं की साइकिल, पोशाक व छात्रवृत्ति जैसी योजनाओं के कारण स्कूलों में लड़कियों की संख्या 12 प्रतिशत से बढ़कर 98 प्रतिशत हो चुकी है। उन्हीं के कारण लालू-राबड़ी राज में घरों में धकेली गयी महिलाएं आज सम्मान के साथ अपने अधिकारों का उपयोग कर समाज का नेतृत्व कर रही हैं। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने समाजिक मोर्चों पर भी महिलाओं को सशक्त किया है। बाल विवाह और दहेज प्रथा के खिलाफ लगातार अभियान चला कर उन्होंने महिलाओं को इन कुरीतियों के खिलाफ जागरूक किया है, वहीं शराबबंदी कानून लाकर उनके खिलाफ होने वाली घरेलू हिंसा को भी समाप्त किया है। हकीकत में राजद को बयानबाजी से उपर उठ कर नीतीश सरकार के इन कामों से सीख लेनी चाहिए।

राजद नेता गौतम यादव सैंकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल

● ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बलराम मंडल ने दिलाई सदस्यता

भाजपा की नीतियों के प्रति लोगों का बढ़ा है आकर्षण : बलराम मंडल

पटना। मुजफ्फरपुर के राजद नेता और समाजसेवी गौतम यादव शुक्रवार को अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा प्रदेश कार्यालय में ओबीसी मोर्चा द्वारा आयोजित एक मिलन समारोह में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। उन्हें भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बलराम मंडल ने भाजपा की सदस्यता दिलाई और पार्टी में स्वागत किया। इस मौके पर उपस्थित भाजपा के महामंत्री शिवेश राम, जगन्नाथ ठाकुर और ओबीसी मोर्चा के प्रभारी अचल सिन्हा ने भी गौतम यादव का पार्टी में स्वागत किया। इस समारोह को संबोधित करते हुए श्री मंडल ने कहा कि आज राजनीतिक दलों में भाजपा के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सबका साथ, सबका विकास की नीति को लोग पसंद कर रहे हैं, जिस कारण बड़ी संख्या में लोग भाजपा से जुड़ रहे हैं। उन्होंने राजद से आए गौतम यादव का भाजपा में स्वागत करते हुए कहा कि युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए भाजपा लगातार काम कर रही है। उन्होंने भाजपा की सदस्यता ग्रहण किये लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे भाजपा की नीतियों को लेकर घर -घर तक जाएं। इस मौके पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण किये गौतम यादव ने कहा कि भाजपा की नीतियों से आकर्षित होकर उन्होंने आज भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा यहां बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि आज वे गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि वे भाजपा के सदस्य हैं। वे किसी पद की लालच में नहीं बल्कि लोगों की सेवा के लिए यहां आए हैं।

पान की खेती को बढ़ावा देने के लिए सहायतानुदान का प्रावधान : मंत्री

● पान उत्पादक किसानों की समस्याओं के निराकरण हेतु दिये निदेश

● आच्छादन क्षेत्र का विस्तार करने की आवश्यकता

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कृषि मंत्री ने पान उत्पादक किसानों से किया सीधा संवाद

कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय की अध्यक्षता में शुक्रवार को कृषि भवन में पान की खेती को और अधिक लाभप्रद बनाने तथा इसमें आ रही तकनीकी समस्याओं के निराकरण विषय पर पान उत्पादक कृषकों के साथ एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंत्री ने पान उत्पादक किसानों से सीधा संवाद किया। मंत्री ने कहा कि युवा पान उत्पादक किसानों की हौसला देखकर मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है। उन्होंने कहा कि पान उत्पादक किसानों को अधिक आर्थिक लाभ पहुँचाने के लिए पान के आच्छादन क्षेत्र का विस्तार करने की आवश्यकता है। पान के प्रभेदों एवं गुणवत्तायुक्त बीज की उपलब्धता के साथ उत्पादन, भंडारण एवं विपणन की समुचित व्यवस्था हो, ताकि पान उत्पादक कृषकों को अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि कृषि विभाग, बिहार सरकार के द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 से 2025-26 के लिए पान विकास योजना के तहत कुल 42.50 हेक्टेयर में पान के क्षेत्र विस्तार करने हेतु 05 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान की गयी है। पान की खेती बिहार के मुख्यतः 15 जिले यथा औरंगाबाद, गया, नालन्दा, नवादा, शेखपुरा, वैशाली, सारण, मुंगेर, पूर्वी चम्पारण, खगड़िया, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, मधुबनी, दरभंगा एवं समस्तीपुर में की जाती है। पान की खेती के लिए बरेजा निर्माण किया जाता है। बरेजा का निर्माण सामान्यतः 100 वर्गमीटर, 200 वर्गमीटर एवं इसके गुणक क्षेत्रफल में बनाकर कृषकों द्वारा किया जाता है। उन्होंने कहा कि पान की खेती को बढ़ावा देने तथा कृषकों की आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से बरेजा के निर्माण तथा पान की खेती में सहायतानुदान का प्रावधान किया गया है, जिसके लिए प्रत्येक कृषक को क्षेत्र सत्यापन के आधार पर न्यूनतम 11,750 रुपए तथा अधिकतम 35,250 रुपए सहायतानुदान दिये जाने का प्रावधान है।

कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल के कहा कि पान के खेती करने वाले कृषकों को भी किसान क्रेडिट कार्ड प्रदान करने की व्यवस्था की जाये। उन्होंने बताया कि पान के अनुसंधान एवं इसकी तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने के दृष्टिकोण से नालन्दा जिले के इस्लामपुर प्रखण्ड में पान अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गयी है। पान अनुसंधान केन्द्र में शेडनेट में पान की खेती का प्रत्यक्षण तथा ऑयल एक्सट्रैक्शन यूनिट की स्थापना भी करायी गयी है। साथ ही, उद्यान महाविद्यालय, नूरसराय को पान पर अनुसंधान करने का निदेश दिया। पान उत्पादक एक-एक किसानों का सर्वेक्षण कराया जायेगा। पान से संबंधित योजना में पहले आओ, पहले पाओ को खत्म करते हुए लॉटरी के माध्यम से लाभुकों का चयन किया जायेगा। उन्होंने आगे बताया कि आधुनिक तौर पर पान की खेती पर विशेष ध्यान देने के लिए समुचित सिंचाई की व्यवस्था, शेडनेट, शीत भण्डारण, पान के लिए प्रसंस्करण यूनिट एवं विपणन केन्द्र के संबंध में विस्तृत अध्ययन करने का निदेश दिया। इस कार्यशाला में कृषि निदेशक मुकेश कुमार लाल, उद्यान निदेशक अभिषेक कुमार, कृषि मंत्री के आप्त सचिव अमिताभ सिंह, विभागीय वरीय पदाधिकारी एवं पान अनुसंधान केन्द्र, इस्लामपुर के वैज्ञानिकगण तथा पान उत्पादक किसान उपस्थित थे।

बिहार सरकार

भवन निर्माण विभाग
कार्यपालक अभियंता, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय

अल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–20 वर्ष 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, पाटलीपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक–29.07.2024 को 12.00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति कि तिथि एवं समय : दिनांक–30.07.2024 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक–30.07.2024 को 3.30 बजे अपराह्न से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान (क) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, भ0नि0वि0, पटना। (ख) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित भवन अवर प्रमंडल का कार्यालय, पटना।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) पर वर्णित स्थान पर।
7. कार्य का विवरणी

क्रम स0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य (ओ0ग्रास)	कार्य समप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	Renovation of Window, Shutter, Grill, Steel Jail With Aluminium frame at Apna Ghar. Patna for the year 2024-25	1479300.00	30000.00	2500.00	1 Month
2	Renovation of Shed, Grill, PCC and Other Work in Campus of Apna Ghar. Patna for the year 2024-25	1239800.00	25000.00	2500.00	1 Month
3	Renovation of RCC Bench and Bathroom Partition Work at Apna Ghar. Patna for the year 2024-25	744700.00	15000.00	1250.00	1 Month
4	Fixing of grill and sheet over boundary wall in JDU office (North and South side)at B.C Patel Path Patna for the year 2024 -25	1217600.00	25000.00	2500.00	1 Month
5	S/R to outer surface and compound wall of G.O Block No-"U" at New Punaichak, Patna for the year 2024-25	448400.00	9000.00	750.00	1 Month

निविदा की विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर देंखे।

PR- 004184 (B C D) 2024-25

कार्यपालक अभियंता
पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

Public Notice

It is for general information that I, Sahista Khatun D/o Md Mansoor, R/o P.C.C. Road Near Masjid Gosiya, Ward No-01Santhali, Semariya, PO Jharkhand-814142 declare that name of mine and my father has been wrongly written as Sarta and Mahesh in my PF Account PF Code No. UAN No. 101629516994. The actual name of mine and my father are Sahista Khatun and Md Mansoor which may be amended accordingly.

पूर्व मध्य रेल

ई-खुली निविदा सूचना

ई–खुली निविदा संख्याः–
एसजी–डब्ल्यु–दानापुर–ईआई–ओटी–01–2024–25

मुहरबंद निविदाएं भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य निष्पादन हेतु आमंत्रित किया जाता है। **(i) कार्य का नाम एवं स्थान और कार्य पूर्ण करने की अवधिः** बिहिया एवं बनाही स्टेशनों पर लगे पीआई से इलेक्ट्रॉनिक इन्टरलॉकिंग के लिये डिजाईन, मैनुफैक्चरिंग, सप्लाई, इंस्टॉलेशन, टेस्टींग एवं कमिशनिंग संबधित कार्य । खण्ड (दानापुर मंडल)। बारह (09) महीना । **(ii) अनुमानित लागतः** रूपये.15,09,25,457.05 (पंद्रह करोड़ नौ लाख पचीस हजार चार सौ संतावन रूपये पांच पैसे मात्र)। **(iii) अग्रधन जो जमा करना हैः** शून्य **(iv) निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय खोलने की तिथि एवं समयः** 14/08/2024 अपराह्न 12.00 तक एवं 14/08/2024 अपराह्न 12.30 बजे । **(v) वेव साईट एवं सूचना पट्ट का विवरण जहॉं से निविदा का पूर्ण विवरण देखा जा सकेः** www.ireps.gov.in, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार अभियंता/पूर्व मध्य रेल/हाजीपुर का कार्यालय सूचना पट्ट एवं उप–मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार अभियंता (कार्य)/पूर्व मध्य रेल, दानापुर के कार्यालय सूचना पट पर देखा जा सकता हैं।

उप–मुख्य मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार अभियंता (कार्य), पूर्व मध्य रेल/दानापुर

पीआर/00708/डीएनआर/एसएण्डटी/डब्ल्यू/टी/24–25/36

भवन निर्माण विभाग
बिहार सरकार
कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना का कार्यालय

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना, संख्या– 08 वर्ष 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक 30.07..2024 को 12:00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 31.07..2024 को 03:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 31.07..2024 को 03:30 बजे अपराह्न।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अंचल कार्यालय, दक्षिण बिहार भवन अंचल, पटना। (ख) प्रमंडल कार्यालय, केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित अवर प्रमंडल कार्यालय।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) के वर्णित स्थान (क) एवं (ख) पर।
7. कार्य का विवरणी :–

क्र०	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख रू० में)	अग्रधन की राशि (रू० में)	परिमाण विपत्र का मू० (रू० में) (अप्रत्यर्पणीय)	कार्य समाप्ति की अवधि
1.	Renovation of Residence No.- 5 at Polo Road, Patna for the year 2024-25. (Tiles Work, RCC, Shelves, Shed, Wood Work, Aluminum Work Repair etc.)	11.19	22,400=00	2,500=00	01 माह
2.	Renovation of Office Room, Bathroom, Kitchen, Shed in Residence No.- 5 at Polo Road, Patna for the year 2024-25.	14.86	29,800=00	2,500=00	01 माह

PR. No. 004266 (BCD) 2024-25

कार्यपालक अभियंता,
केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना

विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

संक्षिप्त खबरें

नियमों के उल्लंघन करने वाले 66 डी जे संचालकों पर प्राथमिकी

मुजफ्फरपुर।जिलान्तर्गत विभिन्न थाना क्षेत्र में मुहर्रम पर्व में जुलूस व अखाड़ा के दौरान अति उच्चस्वर में डी० जे० बजाने व हल्ला हुड़दंग करने एवं निर्गत लाइसेंस का अनुपालन नहीं करने वाले लाइसेंसधारी डी जे संचालकों के विरूद्ध अहियापुर, मिठनपुरा, काजी मोहम्मदपुर, बेला, कॉटी एवं बरूराज थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। यह जानकारी देते हुए एसएसपी कार्यालय से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि उक्त घटना के संदर्भ में निर्गत लाईसेंस का अनुपालन नही करने व सरकारी आदेशों का उल्लंघन करने पर उपरोक्त थानों में करीब 66 लाईसेंसधारी व्यक्तियों को नामजद व अन्य 220 के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी जिलांतर्गत विभिन्न थानों में जन्माष्टमी, चेहल्लुम, मिलाद-उन-नबी, दुर्गा पूजा मूर्ति विर्सजन एवं सरस्वती पूजा के अवसर पर निर्गत लाइसेंस का अनुपालन नहीं करने , सरकारी नियमों व आदेशो का उल्लंघन करने वाले लाइसेंसधारी डी०जे० संचालकों के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी है।

पुलिस ने शराब मामले में दो तस्कर को किया गिरफ्तार, एक फरार

मधुबनी रहिका थाना पुलिस ने शमकालीन अभियान के तहत अलग अलग जगहों से दो शराब तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया। रहिका थाना अध्यक्ष रविंद्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार शराब तस्कर की पहचान थाना क्षेत्र के सतधारा गांव निवासी विनोद पासवान को 30बोतल देशी नेपाली शराब के साथ एव शराब मामले में पूर्व से कांड में फरार अभियुक्त सप्ता गांव निवासी राजा यादव के पुत्र अजय यादव को गिरफ्तार कर लिया गया साथ ही सप्ता गांव पार्वती टोल से गुप्त सूचना के आधार पर शराब कारोबारी के घर छापेमारी कर 17लीटर देशी नेपाली शराब बरामद किया गया जबकि शराब कारोबारी भागने में सफल हो गया। फरार शराब कारोबारी के विरुद्ध उत्पाद मद्य निषेध अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तारी को लेकर लगातार छापेमारी जारी है जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

सशस्त्र सीमा बल 18 वी वाहिनी राजनगर के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया

मधुबनी कई दिनों से लगातार मुख्यालय व समस्त बाह्य सीमा चौकियो मे वृक्षारोपण किया जा रहा है सशस्त्र सीमा बल 18वी वाहिनी राजनगर के द्वारा वृक्षारोपण अभियान 2024 के अंतर्गत वाहिनी मुख्यालय एव समस्त बाह्य सीमा चौकियो मे वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान कुल 190 विभिन्न प्रकार के पौधो का सार्वजनिक स्थलो पर वृक्षारोपण किया गया। इस कार्यक्रम मे वाहिनी के कार्मिको के अतिरिक्त स्कुलो के बच्चो एव ग्रामीणो ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

सरकार अथवा सत्ता पोषित नहीं बल्कि समाज पोषित शिक्षा को स्थापित करना जरूरी : प्रो ओमप्रकाश

जुबली हॉल में आयोजित एक दिवसीय शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा। भारतीय शिक्षण मंडल-युवा आयाम, नयी दिल्ली और ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रस्तरीय शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता विजन फॉर विकसित भारत कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के जुबली हॉल में मानविकी संकायाध्यक्ष प्रो चंद्रभानु प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो सिंह ने कहा कि शोध की जड़ प्रविधि से मुक्त होकर स्वच्छंद चिंतन दृष्टि से समर्थ व प्रबुद्ध भारत का निर्माण संभव होगा। कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो ओमप्रकाश सिंह ने आजादी के बाद से लेकर अद्यतन शिक्षा जगत में हुई उथल पुथल के ऐतिहासिक क्रम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सरकार अथवा सत्ता पोषित नहीं बल्कि समाज पोषित शिक्षा को स्थापित करना जरूरी है। उन्होंने भारतीय शिक्षण मंडल द्वारा शिक्षण कार्य में शिक्षा की गुणवत्ता, नीति, पाठ्यक्रम, परिवर्तन, गुरुकुल पद्धति, चरित्र निर्माण आदि कारकों की विवेचना की। साथ ही युवाओं को बौद्धिक योध्दा की तरह तैयार होने का आहवान किया और कार्यशाला को आनंदशाला का पर्याय बताते हुए भारतीय ज्ञान व चिंतन परंपरा की पुनः स्थापना पर बल दिया।शुक्रवार को आयोजित एक - दिवसीय कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ कुलगीत से हुआ। दीप प्रज्वलन के साथ विश्वविद्यालय परीक्षा नियंत्रक प्रो विनोद कुमार ओझा ने स्वागत वक्तव्य से सभी अतिथियों का स्नेहिल अभिनंदन किया। प्रथम सत्र में भारतीय शिक्षण मंडल ,युवा आयाम के पोस्टर विमोचन के साथ संघ गीत का गायन हुआ। अतिथि वक्ता राजकुमार, डॉ अनिल कुमार ने भारत के स्वरूप निर्माण में भारतीय शिक्षण मंडल के युवा आयाम के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का दूसरा सत्र तकनीकी सत्र का रहा। इस सत्र की अध्यक्षता भारतीय शिक्षण मंडल उत्तर बिहार के प्रांत अध्यक्ष अजीत कुमार ने की। उन्होंने अध्यक्षीय संबोधन में शोध, शोध के स्वरूप, शोध की प्रकृति, शोध के समकालीन महत्व, शोध विषय व शोध प्रश्न, शोध की परिकल्पना आदि तकनीकी पक्षों पर गंभीरता से चिंतन प्रस्तुत किया। शोध विशेषज्ञ डॉ अंबालिका आर्यन, डॉ साकेत रमन ने शोध पत्र लेखन के स्वरूप व प्रकृति पर पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से शोध पर विस्तृत व्याख्यान दिया।कार्यशाला में स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष , विश्वविद्यालय पदाधिकारी,विश्वविद्यालय के कॉलेजों के प्रधानाचार्य, शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र- छात्रा उपस्थित थे।

धावा दल द्वारा 2 बाल श्रमिक कराए गए मुक्त

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। नगर निगम के विभिन्न दुकानों एवं प्रतिष्ठानों में धावा दल की टीम द्वारा सघन जाँच अभियान चलाते हुए आज दो बाल श्रमिक मुक्त कराए गये। यह जानकारी देते हुए श्रम अधीक्षक अजय कुमार ने बताया किसघन जाँच अभियान के दौरान धावा दल की टीम द्वारा सफिया लहठी दुकान, बैंक रोड एवम एम जे , ट्रेडर्स, बैंक रोड, मोतीझील , मुजफ्फरपुर से एक-एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया। इन्हें बाल कल्याण समिति के समक्ष उपस्थापित कर निदेर्शानुसार बाल गृह में रखा गया है । बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के तहत नियोजक के विरुद्ध संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है । श्रम अधीक्षक, अजय कुमार ने बताया कि बाल श्रमिकों से किसी भी दुकान या प्रतिष्ठान में कार्य कराना बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के अंतर्गत गैरकानूनी है तथा बाल श्रमिकों से कार्य कराने वाले व्यक्तियों को 20हजार रुपये से 50 हजार तक का जुमार्ना और 2 वर्षों तक के कारावास का प्रावधान है । उन्होंने जानकारी दी कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में अभी तक मुजफ्फरपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों से धावा दल के द्वारा अब तक 37 बाल श्रमिकों को विमुक्त कराकर उनका पुनर्वासन लगातार कराया जा रहा है धावा दल की टीम के द्वारा आज मुजफ्फरपुर नगर निगम के विभिन्न क्षेत्रों एवम सभी दुकान एवं प्रतिष्ठान में सघन जांच की गई तथा सभी नियोजको से किसी भी बाल श्रमिक को नियोजित नहीं करने हेतु एक शपथ पत्र भी भरवाया गया ।आज के इस धावा दल टीम के सदस्य के रूप में श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, मुरौल सुश्री रश्मि राज एवम श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, गायघाट, मोहम्मद अली, के साथ नगर थाना से कुंदन कुमार एवं अन्य शामिल थे।

उत्तर बिहार में अगले चार दिनों तक वर्षा की सम्भावना नहीं

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। उत्तर बिहार के लोगों को उमस भरी गर्मी से निजात पाने के लिए अभी कुछ दिन और इंतजार करना होगा।अगले चार दिनों तक अच्छी बारिश की सम्भावना नहीं है। 23एवं 24जुलाई के आसपास कहीं कहीं हल्की बारिश हो सकती है। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा , डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग ने 20 से 24जुलाई तक के लिए जारी मध्यावधि मौसम पूवार्नुमान में यह जानकारी दी है। मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.5 एवं 28.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 87 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 68 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.4 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.8 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 32.1 एवं दोपहर में 37.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में वर्षा नहीं हुई। पूवार्नुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अच्छी वर्षा की सम्भावना नहीं है। पूवार्नुमानित अवधि के ज्यादातर दिनों में आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है। 23-24 जुलाई के आसपास कहीं-कहीं हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। फिलहाल उमसभरी गर्मी बरकरार रहने की सम्भावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 37 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 26-30 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।पूवार्नुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन 12-16 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

श्रावणी मेला की सारी तैयारियां पूरी , उद्घाटन कल

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। एक महीने तक चलने वाले श्रावणी मेला की सारी तैयारी पूरी हो गई है। इस बार 22जुलाई से शुरू हो रहे श्रावणी मेला का उद्घाटन कल 21जुलाई को स्थानीय द्वारिकानाथ हाईस्कूल परिसर में किया जाएगा। जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन एवं एसएसपी राकेश कुमार ने आज मेला की तैयारी का जायजा लिया। इस दौरान कांवरिया पंथों का भी निरीक्षण किया गया। श्रावणी मेला के अवसर पर बाबा गरीब नाथ मंदिर में जलाभिषेक, दर्शन हेतु आने वाले श्रद्धालु भक्तों की सुविधा का कुशल एवं सुव्यवस्थित प्रबंधन तथा सुरक्षा एवं ट्रैफिक की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन एवं वरीय पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार ने अधिकारियों की टीम के साथ उद्घाटन स्थल डीएन हाई स्कूल से वैशाली -मुजफ्फरपुर बॉर्डर स्थित फकुली मोड़ तक कार्य की प्रगति का जायजा लिया तथा अधिकारियों को श्रद्धालु शिव भक्तों की सेवा में समर्पित एवं निष्ठा भाव से सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण रूप से जल्द पूरा करने का सख्त निर्देश दिया। इस क्रम में जिलाधिकारी ने कांवरिया मार्ग के पथों को सरल, सहज बनाने एवं निर्बाध गमनागमन हेतु सुरक्षा एवं ट्रैफिक की सुचारू एवं सुदृढ़ व्यवस्था रखने का निर्देश दिया।कांवरिया पथ पर श्रद्धालु भक्तों के निर्बाध मुवमेंट बनाये रखने तथा भीड़ प्रबंधन हेतु आवश्यकतानुसार ट्रॉली, ड्रॉप गेट, बैरिकेडिंग , नियंत्रण कक्ष , सी.सी. टीवी अधिष्ठापन की समुचित व्यवस्था की गई है।22मेडिकल टीम गठित कर 56 डॉक्टर, 150 पारा मेडिकल स्टाफ की तैनाती करते हुए पर्याप्त दवा की व्यवस्था की गई है।साथ ही आपात स्थिति का सामना करने के लिए अस्पतालों को अलर्ट मोड में रखने का सख्त निर्देश दिया गया है। सिविल सर्जन को डॉक्टर एवं स्वास्थ्य कर्मियों की उपस्थिति तथा मेडिकल टीम की सक्रियता की सतत एवं प्रभावी मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया गया है।कांवरिया पथ एवं ठहराव स्थल पर पानी, बिजली, शौचालय की निर्बाध व्यवस्था,ठहराव स्थल एवं कांवरिया पथ पर पानी, बिजली, शौचालय एवं प्रतिदिन नियमित साफ-सफाई की गुणवतापूर्ण व्यवस्था की गई है।

पानी के लिए न केवल नल की व्यवस्था की गई है बल्कि नल से निरंतर जल आपूर्ति रखने तथा जल की गुणवता भी कायम रखने का सख्त निर्देश दिया गया है। पूर्व वर्ष की भांति जगह-जगह चौक-चैराहों पर नियंत्रण कक्ष स्थापित कर सतत एवं प्रभावी मॉनिटरिंग की जाएगी ताकि कांवरिया पथ पर श्रद्धालु भक्तों को कोई असुविधा न हो तथा ठहराव स्थल पर किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। जिलाधिकारी ने जगह-जगह पर सी.सी.टीवी का अधिष्ठापन कर भीड़ प्रबंधन की सतत एवं प्रभावी मॉनिटरिंग करने को कहा। जिलाधिकारी के साथ नगर आयुक्त नवीन कुमार, नगर पुलिस अधीक्षक अवधेश दीक्षित, अपर समाहर्ता राजस्व संजीव कुमार, अपर समाहर्ता विधि-व्यवस्था सुधीर कुमार सिन्हा, सिविल सर्जन डॉ० अजय कुमार सहित कई अन्य विभागों के पदाधिकारीगण उपस्थित थें।

डॉ नरेन्द्र कुमार बालक के निधन पर आम व खास लोगों ने शोक जताया

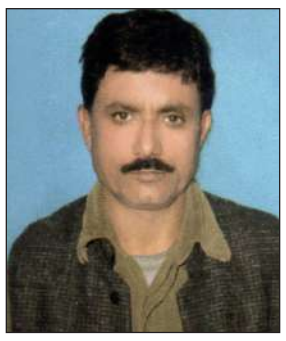

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा। एमएलएसएम कॉलेज के इतिहास विभाग के शिक्षक डा नरेन्द्र कुमार झा ह्यबालकह्ल का असामयिक निधन वृहस्पतिवार की देर शाम हो गया। 63 वर्षीय डा झा काफी समय से गंभीर रूप से बीमार चल रहे थे। उनके निधन की खबर मिलते ही बेनीपुर के विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी, विद्यापति सेवा संस्थान के महासचिव डा बैद्यनाथ चौधरी बैजू, मैथिली अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पं कमलाकांत झा, डा संजय कुमार झा, प्रो जीवकांत मिश्र आदि ने उनके पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक जताते हुए बेनीपुर के विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी ने उनके निधन को शैक्षणिक जगत के लिए अपूर्णीय क्षति बताते कहा कि स्वाभिमान और विश्वास से गहरा नाता रखने वाले समाजसेवी शिक्षक के रूप में उनकी कमी हमेशा खलेगी।

विद्यापति सेवा संस्थान के महासचिव डॉ बैद्यनाथ चौधरी बैजू ने उनके निधन को शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र के लिए अपूर्णीय क्षति बताते कहा कि उनके निधन से एक कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक एवं समाजसेवी को हमने समय से पहले खो दिया।

प्रो जीवकांत मिश्र ने कहा कि उनके निधन से एक जुझारू शिक्षक एवं समाजसेवी हमसे असमय बिछुड़ गया। संस्थान के मीडिया संयोजक प्रवीण कुमार झा, विधान परिषद सदस्य डा मदन मोहन झा,कमला कांत झा, पूर्व प्रधानाचार्य डा राम कुमार मिश्र, डा विद्यानाथ झा, विनोद कुमार झा, डॉ महेंद्र नारायण राम, प्रो चंद्रशेखर झा बूढाभाई, हरिश्चंद्र हरित, प्रो विजयकांत झा, डॉ गणेश कांत झा, आशीष चौधरी, नवल किशोर झा, दुगानंद झा, पुरुषोत्तम वत्स, पंकज कुमार ठाकुर, आदि ने भी शोक संवेदना प्रकट की।

डॉ अमलेन्दु शेखर मैथिली एसिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में हुये चयनित

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा। साहित्य अकादेमी, दिल्ली से सम्मानित मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ अमलेन्दु शेखर पाठक मैथिली के एसिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में चयनित हुए हैं। बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग, पटना ने इनका चयन करते हुए सेवा के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय निर्धारित किया है। डॉ पाठक पिछले कई दशक से मैथिली साहित्य भंडार को समृद्ध करने में अपना अवदान दे रहे हैं। कई पुस्तकों की रचना कर चुके हैं। इनकी प्रकाशित कृतियों में कविता संग्रह लाबनि परक दीप, बाल साहित्य भूतक बाबा और उपन्यास लालगाछी, निबंध संग्रह निबंध कल्प आदि प्रकाशित हैं।डॉ पाठक ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों का संपादन भी किया है। देश की सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य रहे डॉ पाठक कई संस्थाओं से संबद्ध रहे हैं। संप्रति डॉ पाठक कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के उपशास्त्री संस्कृत कॉलेज, पिंडारुच में प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आयोग की चयन सूची में मैथिली विषय में एसिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में इनका नाम प्रथम स्थान पर रहने को सभी सराह रहे हैं।

देवधा मध्य के स्वास्थ्य उप केंद्र सह हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर कई दिनों से है बंद : भाकपा माले

प्रातः किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर प्रखंड के अंतर्गत देवधा मध्य पंचायत के भगवती चौक के पोखर भिन्डा पर स्वास्थ्य विभाग के हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर कई दिनों से बंद है।आज का रशीद अंसारी के साथ क्षेत्र भ्रमण के दौरान देखा गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि सेन्टर कई दिनों से बंद देखा गया है जिसके कारण स्थानीय ग्रामीण क्षेत्रों के गांव मुहल्लों के लोगों को उपचार से बंचित होना पड़ता है। भूषण सिंह प्रखंड सचिव ने कहा कि महिनों पूर्व भाकपा माले जयनगर के द्वारा प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों के वर्षों से बंद पड़े सभी स्वास्थ्य उप केन्द्रों सह हेल्थ एंड वेलनेस सेन्टरों को चालू करने की मांग को लेकर लगातार आंदोलन चलाया गया था। और उक्त केंद्र पर सैकड़ों लोगों के साथ धरना भी दिया गया था। आंदोलन के दौरान स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों से वार्ता के बाद सभी ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य केंद्रों को नियमित चालू रखने की आश्वासन दिया गया था। और केंद्र को चालू भी देखा गया लेकिन अनुमंडल अस्पताल जयनगर के उपाधीक्षक डॉ. कुमार रौनित और प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रवि भूषण के जनविरोधी तथा कर्तव्यहीन व्यवहार के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य उप केंद्र सह हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बंद है। और अनुमंडल अस्पताल व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जयनगर का व्यवस्था बहुत खराब है। हमारी पार्टी भाकपा- माले उक्त जनविरोधी नीतियों का तीव्र निंदा करते हुए जिलाधिकारी मधुबनी एवं सिविल सर्जन मधुबनी से ग्रामीण क्षेत्रों के बंद सभी उप स्वास्थ्य केंद्रों तथा हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों को नियमित चालू कराने के साथ साथ जनविरोधी व कर्तव्यहीन उक्त डाक्टरों के उपर कठोर कार्रवाई करने कि मांग करती है।

नाव हादसे के 18 घंटे बाद लापता युवक का शव नदी में उपलाते हुए मिला

प्रातः किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। प्रखंड अंतर्गत तिलकेश्वर पंचायत के गोलमा गांव में कोसी नदी के उपधारा में 18 जुलाई को हुए नाव हादसे के 18 घंटे बाद शुक्रवार की सुबह 6 बजे लापता युवक का शव नदी में उपलाते हुए मिला। शव घटना स्थल से 150-200 मीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में मिला। शव मिलने की खबर आग की तरह फैल गया। देखते ही देखते वहां ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ी। मृतक के स्वजनों के पहुंचते ही वहां कोहराम मच गया। शव को नदी से बाहर निकाल कर इसकी सूचना तिलकेश्वर थाना पुलिस को दिया गया। सूचना मिलते ही थाना अध्यक्ष शैलेश कुमार मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर कागजी प्रक्रिया पूरी कर पोस्टमार्टम के लिए डीएमसीएच भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बीती गुरुवार की देर शाम लगभग 7.30 बजे तक दो एसडीआरएफ की टीम शव को तलाश में जुटे रहे। लेकिन अंधेरा होने की वजह से एसडीआरएफ की टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन रोक दिया। हालांकि ग्रामीणों ने घटना के बाद से लगातार शव के तलाश करते रहे। लेकिन काफी अंधेरा होने से ग्रामीण भी अपनी प्रयास छोड़ दिया। शुक्रवार की अहले सुबह ही ग्रामीण शव के तलाश में जुट गए। लगभग 6.30 बजे घटना स्थल से दक्षिण दिशा में करीब 150-200 मीटर की दूरी पर लोगों ने शव को उपलाते हुए देखा। पोस्टमार्टम कराने के बाद दरभंगा से दोपहर बाद शव गांव पहुंचते ही एक बार फिर स्वजनों में कोहराम मच गया। गांव के श्मशान घाट पर शव को नम आंखों से अंतिम संस्कार कर दिया गया। मृतक के बड़े भाई ने मुखाग्नि दी। मालूम हो कि पूर्वी प्रखंड के गोलमा गांव में बीती गुरुवार को लगभग 11.30 बजे कोसी नदी के उपधारा में हुए नाव हादसे में उक्त गांव के बिन्देश्वरी राय के 22 वर्षीय पुत्र राजा कुमार राय की डुबने से मौत हो गई थी। सीओ गोपाल पासवान ने राजा कुमार राय के शव मिलने की पुष्टि करते हुए कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलते ही आपदा प्रबंधन विभाग से मिलने वाले सहायता राशि का भुगतान कर दिया जाएगा।

बिहार ग्राम रक्षा दल के प्रदेश अध्यक्ष राम प्रसाद राऊत ने कहा बभनदेय पोखरा का होगा सीमांकन

प्रातः किरण संवाददाता

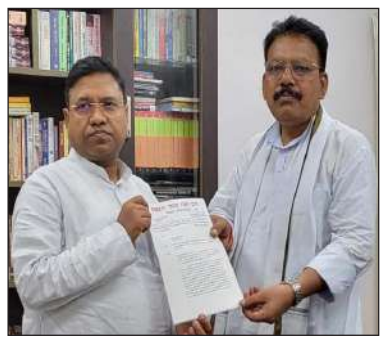

मधुबनी बिहार ग्राम रक्षा दल के प्रदेश अध्यक्ष राम प्रसाद राऊत ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा है कि 163,320 ,एक सौ तिरसठ दशमलह तीन सौ बीस लाख के लागत से मधुबनी जिला के अंतर्गत बासोपट्टी बाजार के निकट लगभग 52 एकड़ में फैला हुआ बभनदेय पोखरा का होगा सीमांकन उड़ाही जीर्णोद्धार सौंदर्यीकरण एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित दल के प्रदेश अध्यक्ष राऊत ने कहा है कि लघु जल संसाधन विभाग के पत्रं 2723 दिनांक 10,10,20 23 को अधीक्षण अभियंता मुख्यालय अनुश्रवण लघु जल संसाधन विभाग की प्रशासनिक स्वीकृति देने की अनुशंसा की गई हैं क्योंकि इस बभनदेय पोखरा के सीमांकन उड़ाही जीर्णोद्धार एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित करने की मांग को लेकर वर्षों से मैं संघर्षरत हुं इस पत्र के आलोक में माननीय मंत्री संतोष कुमार सुमन जी को मांग पत्रों के माध्यम से ध्यान को आकृष्ट किये जिसे माननीय मंत्री महोदय हृदय ने मांग पत्र को स्वीकार करते हुए कहा कि अति शीघ्र ही बभनदेय पोखरा के सीमांकन उड़ाही जीर्णोद्धार सौंदर्यीकरण एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित करने हेतु प्रशासनिक स्वीकृति की पहल करने का ठोस आश्वासन दिए है बासोपट्टी बाजार के सेट 52 एकड़ में फैला हुआ बभनदेय पोखरा के सीमांकन उड़ाही जीर्णोद्धार सौंदर्यीकरण एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित करना अति आवश्यक है,क्योंकि इस ऐतिहासिक एवं पवित्र बभनदेय पोखरा का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है, वर्षो से अपने उद्धारक की बाट जो रहा था लेकिन कहीं से भी इसकी सीमांकन, उड़ाही जीर्णोद्धार सौंदर्यीकरण एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित करने की उम्मीद स्थानीय लोगों में नहीं दिख रही थी जबकि वर्षो से सुबे बिहार में जल जीवन हरियाली योजना संचालित है वर्षो से उड़ाही नहीं होने के कारण गंदगियों अंबार लगा हुआ है जबकि लोक आस्था के महापर्व छठ सहित हिंदुओं के अन्य पूजा पाठ एवं धार्मिक अनुष्ठान में श्रद्धालु यही से जल लेकर जाकर पूजा संपन्न करते हैं कि इस ऐतिहासिक धरोहर के दुर्दशा के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधि निश्चित रूप से जिम्मेवार है 'इस बभनदेय पोखरा के सीमांकन उड़ाही जीर्णोद्धार सौंदर्यीकरण एवं पर्यटक क्षेत्र घोषित करने हेतु भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेत्री एवं बिहार विधान परिषद के सदस्या अनामिका सिंह जी के सराहनीय योगदान है । माननीय मंत्री संतोष कुमार सुमन एवं विधान परिषद सदस्य अनामिका सिंह जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूं और शीघ्र शिल्यान्यास करने का आग्रह भी करता हूं राऊत ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास हैं कि अब बभनदेय पोखरा का निश्चित जीर्णोद्धार एवं बासोपट्टी प्रखंड वासियों का कल्याण होगा।

हथियार का भय दिखाकर डकैतों ने लूटे लाखों के जेवरात व नगद

प्रातः किरण संवाददाता

मनीगाछी(दरभंगा)। थाना क्षेत्र के भंडारिसम गांव निवासी कमलेश झा के घर में गत रात डकैतों ने हथियार का भय दिखाकर लाखों रुपए मूल्य के जेवरात एवं नगद लूटकर फरार हो गए। घटना रात के करीब एक बजे की बतायी जाती है। कमलेश झा की पत्नी पुष्पा झा के अनुसार रात के करीब एक बजे पांच की संख्या में पिस्तौल एवं छूरे से लैस अपराधियों ने घर के पीछे से आंगन में प्रवेश कर घर के दरवाजे को धक्के मारकर खोला और चार की संख्या में भीतर प्रवेश कर मेरी कनपटी पर पिस्तौल तथा गर्दन पर छूरे को सटाकर मेरे गर्दन से सोने की दो भरी का चेन, दो कान बाली,दो हाथ की अंगूठी तथा गोदरेज से ढ़ाई भरी सोने की चूड़ी, चांदी का हाथ का मठ्ठा तथा करीब नौ हजार रुपए नगद के अलावा दो कीमती मोबाइल भी लेकर चले गए। सभी अपराधी बीस से तीस साल के थे और मुंह को मास्क एवं गमछा से ढ़के हुआ था। तथा आपस में सभी मैथिली भाषा में ही बात चीत कर रहे थे।उन्होंने बताया कि करीब सात भरी सोने तथा बीस भरी चांदी के जेवरात एवं नगद के अलावा अन्य सामानों की लूट की गई है। उन्होंने बताया कि घटना के वक्त वह अकेली थी और उनके पति कमलेश झा बाहर गए हुए थे। करीब एक घंटे तक लूटपाट करने के बाद सभी अपराधी रात करीब दो बजे घर के पश्चिम की ओर भाग निकले। घटना की जानकारी पाकर घटनास्थल पर पहुंची मनीगाछी की पुलिस ने अगल बगल के जंगलों में खोजबीन की लेकिन अपराधियों का कोई ठिकाना नहीं मिला। थानाध्यक्ष मृत्युंजय कुमार ने बताया कि घटना की जांच के लिए फोरेंसिक एवं टेक्निकल टीम को सूचित किया गया है।

वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच बजरंग बली मंदिर निर्माण का किया गया भूमिपूजन

प्रातः किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। प्रखंड के उसरी पंचायत अन्तर्गत छोटकी कोनिया गांव में शुक्रवार को वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच बजरंग बली मंदिर निर्माण का भूमिपूजन किया गया। पंडित उमेश झा ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच मुख्य यजमान शिव दुलार मुखिया एवं उनके अर्धांगिनी विमल देवी को संकल्प दिलाकर बजरंग बली की जय की उद्घोष के बीच मंदिर निर्माण का नींव रखी। तत्पश्चात ग्रामीण श्रीलाल मुखिया, रमाकांत मुखिया,किसन मुखिया, संजय मुखिया,राम भरोस दास,जीबछ मुखिया को बारी बारी से पंडित श्री झा ने मंत्रोच्चारण के साथ मंदिर निर्माण में पूर्ण सहयोग करने का संकल्प दिलाया। जन सहयोग से बजरंग बली के मंदिर निर्माण को लेकर ग्रामीणों में भारी उत्साह है। वार्ड नंबर 14 के सदस्य प्रतिनिधि रमाकांत मुखिया ने बताया कि एक वर्ष में मंदिर निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मंदिर निर्माण कार्य पूरा होने पर बजरंग बली के भव्य मूर्ति स्थापित किया जाएगा। मौके पर भारी संख्या में ग्रामीण महिला पुरुष उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

शौच करने के विवाद को लेकर हुई मारपीट, चार लोग हुए घायल

जमुई [झाझा] बलियाडीह गांव में एक व्यक्ति के साथ उसी गांव के कुछ लोगों के द्वारा बेरहमी से मारपीट करते हुए घायल कर दिया। घायल की पहचान नियाज अंसारी के रूप में हुई है। जिसका इलाज रेफरल अस्पताल झाझा में किया गया। जिसे डॉक्टर ने बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल ने बताया कि घर के बगल में शौच कर दिए जाने के विवाद की शिकायत करने पर इसराईल मियां, नियाज मियां, सजाद मियां एवं अन्य ईट पत्थर से चलाते हुए टांगी से प्रहार कर मुझे घायल कर दिया और जब घर के सदस्य सजीदा खातुन, नजमुन खातुन के साथ भी मारपीट किया।

ससुर- बहु के साथ घर के सदस्यों ने मारपीट कर किया घायल

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र अंर्तगत लहरनियाटांड गांव में घर के ही सदस्यों ने ससुर- बहु के साथ बेरहमी से मारपीट करते हुए दोनो को घायल कर दिया। घायल की पहचान कैलाश यादव और उसकी बहु बिंदु देवी के रूप में हुई है। घायल दोनो को इलाज के लिए परिजनों के द्वारा इलाज के लिए आनन फानन में रेफरल अस्पताल लाया गया जहां दोनो घायलों का डॉक्टर के द्वारा इलाज किया गया। घायल बिंदु देवी के पति रूपेश कुमार ने बताया कि मेमरा मंझला भाई बाबुलाल यादव पूर्व में भी जमीन हिस्सेदारी के विवाद को लेकर मेरे पिता के साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया था। शुक्रवार को भी मंझला भाई और उसकी पत्नी प्रमीर्ला देवी उसका बेटा रंजन कुमार, मंटू कुमार फिर से मेरे पिता पर मारपीट करने के लिए घर पर आया तभी मेरी पत्नी मारपीट को रोकना चाहा तो वे सभी लोग उसके साथ मारपीट करने लगा और जब मेरा पिता मेरी पत्नी को बचाने की कोशिश किया तो पिता के साथ भी मारपीट की घटना को अंजाम देते हुए दोनो को घायल कर दिया।

मामूली बात पर महिला के साथ हुई मारपीट

जमुई [झाझा] मामूली बात को लेकर बलियाडीह गांव में एक महिला के साथ उसी के गांव के कुछ लोगों ने मारपीट की घटना को अंजाम देते हुए घायल कर दिया। घायल महिला की पहचान नाजमन खातुन के रूप में हुई है। जिसे रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां घायल महिला का इलाज किया गया। घायल महिला के पुत्र नौशाद आलम ने बताया कि मामूली बात को लेकर गांव के ही रहने वाले सरफुद्धीन, एहसान, अरमान, सदाम सहित आधा दर्जनभर लोगों ने मेरी मां के साथ मारपीट कि घटना को अंजाम दिया।

गिद्धौर में ध्वस्त हुई परंपरागत सिंचाई व्यवस्था, मृत पड़ी है कई सिंचाई पैन

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर।प्रखंड के हजारों हेक्टेयर भूमि की सिंचाई करने वाले कई सिंचाई पैन आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है । एक समय की बात है। जब ये सभी सिंचाई पैन किसानों के सिंचाई का मुख्य साधन हुआ करती थी। सिंचाई पैन से किसानों द्वारा सिंचाई करने से जहां खेतों के प्यास बुझती थी वहीं इस परंपरागत सिंचाई व्यवस्था से जल स्रोतों का भी प्यास बुझाता था। जिससे भूमिगत जल स्तर बनी रहती थी परंतु आज वहीं सिंचाई पैन मृत्यु की गोद में सुला दी गई है। एक समय था जब किसानों की टोली इन सिंचाई पैन की खुद से मरम्मती किया करते थे इन कार्यों के कारण सामाजिक समरसता बनी रहती थी सभी जाति और समाज के लोगों की भागीदारी से इन सभी सिंचाई पैन को संचालित किया जाता था। जिससे समाज के बीच एक संबंध का संचार होता था लोगों के द्वारा इसे एक उत्सव के रूप में लिया जाता था।जनप्रतिनिधियों के द्वारा इनमें श्रमदान किया जाता था । परंतु आज के विकास के दौर में जमुई के बरनार नदी तथा और कई नदियों से जुड़ने वाली सिंचाई पैन की स्थिति यह है कि कुछ दिनों के बाद यह सिंचाई पैन सिर्फ सर्वे नक्शे पर नजर आएगी। आज इन सिंचाई पैन जिसमें लगभग सिंचाई पैन समाप्ति के कगार पर है। परंतु इसमें सरकार के द्वारा प्रतिवर्ष खुदाई तथा जीर्णोद्धार के नाम पर करोड़ों खर्च किए जाते हैं आज जो सिंचाई पैन अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। खैरा प्रखंड अंतर्गत निजुआरा सिंचाई पैन,प्रधान चक सिंचाई पैन,झींगोय सिंचाई पैन, गिद्धौर प्रखंड अंतर्गत मौरा पुवारी सिंचाई पैन,मौरा पछियारी सिंचाई पैन,धोबघट बुढ़िया सिंचाई पैन, सिमरिया सिंचाई पैन,कोल्हुआ सिंचाई पैन,रतनपुर सिंचाई पैन जो बरनार नदी से जुड़कर लाखों हेक्टेयर खेती हुआ करती थी वहीं ऊलाई तथा नागी नदी से जुड़कर नागी नदी से दादपुर तक सिंचाई करने वाले दादपुर सिंचाई पैन,जामु सिंचाई पैन,गंगरा के खेतों तक पहुंचने वाली गंगरा बड़की सिंचाई पैन, ढोलबाज गंगरा सिंचाई पैन,कुमरडीह बुढ़िया सिंचाई पैन, बंधौरा सिंचाई पैन,कसरौकी सिंचाई पैन,यह सभी सिंचाई पैन सैकड़ो वर्षों से जमुई के लोगों का पालन पोषण करती रही परंतु आज विकास के दौर में किसान सिंचाई पैन की जगह इलेक्ट्रिक मोटर से भूमिगत जल स्तर की निकासी कर खेती कर रहे हैं। जिससे दिन प्रतिदिन जलस्तर नीचे जा ही रही है जबकि सिंचाई पैन से भूमिगत जल स्तर बना रहता था। वही जमुई जिले में नदियों के लगातार दोहन और बालू उठाव के कारण नदियाँ गहरी हो गई है जिससे सिंचाई पैन का संचालित होना कठिन हो गया। सरकार के द्वारा खर्च किए गए राशि के बंदर बांट का असर इन सिंचाई पैन पर गहरी रूप से पड़ी है। आज जिले के किसान तथा कई समाज सेवी इसकी आवाज उठा रहे हैं परंतु सरकार का ध्यान इस पर नहीं जा रहा है। किसान नेता श्रवण यादव कुणाल सिंह व सच्चिदानंद मिश्र इस विषय पर लगातार आंदोलन कर रहे हैं परंतु इसका असर सरकार पर नहीं पड़ रहा है। आज के दौर में सिंचाई पैन को बचाना पर्यावरण की दृष्टि से अति आवश्यक हो गया है।

शराब पीकर हंगामा कर रहे सरकारी कर्मचारी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई झाझा पुलिस ने शराब पीकर हंगामा कर रहे एक सरकारी कर्मचारी को गिरफ्तार किया। जिसके निशानदेही पर उसके घर से पिस्टल, कारतूस सहित एक बोतल विदेशी शराब बरामद हुआ है। इस संदर्भ में पुलिस अनुमंडल कार्यालय में एसडीपीओ राजेश कुमार ने पीसी कर गिरफ्तारी के संदर्भ में पूरी जानकारी दिया। एसडीपीओ ने बताया कि शुक्रवार को डायल 112 की पुलिस को सूचना दिया गया कि पुरानी बाजार में एक युवक शराब पीकर हंगामा करते हुए अपनी पत्नी व बच्चों के साथ मारपीट कर रहा है। जिसके बाद झाझा पुलिस टीम द्वारा तत्क्षण सूचना का सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु पुरानी बाजार पहुंचकर युवक के घर पर पहुंचकर उसको गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार युवक की पहचान पुरानी बाजार के रहने वाले स्व. दिवाकर झा का पुत्र प्रवीण कुमार झा के रूप में हुई। वही प्रवीण के घर पर मौजूद पुरानी बाजार की रहने वाली पूजा देवी ने पुलिस को बताया कि प्रवीण सेवन कर गाली गलौज व मारपीट करने लगा एवं पिस्तौल अपनी अगुंली में नचाते हुए जान मारने की धमकी दे रहे थे। महिला के द्वारा बताए गए पूरी बात पर थानाध्यक्ष संजय सिंह, पुनि संजय कुमार यादव, पुअनि निधि कुमारी, कुंज बिहारी, नंदन कुमार के द्वारा पूरे घर की तलाशी ली गई ।

शहीद मंगल पाण्डेय के जन्म दिन पर किया वृक्षारोपण

प्रात : किरण संवाददाता

सोनो जमुई : पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की नारी शक्ति प्रांत टोली सदस्य तथा जमुई शहर की प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ ने कहा कि पर्यावरण संतुलन हेतु संसार के मानव को सतत वृक्षारोपण अभियान चलाना होगा , दूसरा कोई विकल्प नहीं हैं । जन्म दिन , वर्षगांठ , पुण्य तिथि आदि सुअवसर पर वृक्षारोपण सभी मानव को करनी चाहिए । जिसमें भारत में बालिका के जन्म दिन पर एक फलदार वृक्ष लगाना चाहिए क्योंकि कन्या बड़ी होकर 2 कुलों को जोड़ती है । जिस कारण कन्या को लक्ष्मी कहा जाता है अतः बच्ची के जन्म दिन पर एक वृक्ष अवश्य लगायें । जमुई स्थित शिशु रोग विशेषज्ञ के एक डॉक्टर ने कहा कि शिशु तो भगवान का रूप है लिहाजा पर्यावरण संरक्षण हेतु बच्चों के जन्म दिन पर वृक्षारोपण करना पुनीत कार्य हे । पर्यावरण भारती के संस्थापक सह पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के प्रांत संयोजक और अखिल भारतीय पेड़ उपक्रम टोली सदस्य रामबीलास साण्डिल्य ने बताया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद मंगल पाण्डेय जी का जन्म 19 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिला अन्तर्गत नगवा गांव में हुआ था । उनके पिता स्वः दिवाकर पाण्डेय धार्मिक व्यक्ति थे । वे सन 1849 में 22 वर्ष की उम्र में ब्रिटिश सेना में भर्ती हुए थे । श्री साण्डिल्य ने आगे बताया कि शहीद मंगल पाण्डेय द्वारा गाय की चर्बी मिले कारतूस को मुंह से काटने पर मना कर दिए थे । फल स्वरुप 2 अंग्रेज अफसरों ने मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार करने आगे आया । जिसमें ह्यूस्टन और बाऊ नामक अंग्रेज अफसर को मंगल पाण्डेय ने गोली चला कर मार डाले थे । जिस कारण उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए । फांसी की निश्चित दिन से 10 दिन पहले ही 8 अप्रैल 1857 को बंगाल के बैरकपुर में मंगल पाण्डेय को अंग्रेज शासन ने फांसी दे दिया । भारत माता के सपूत ओर देश की रक्षा करने वाले प्रथम शहीद मंगल पाण्डेय जी के जन्म दिवस पर पौधारोपण स्मरणीय कार्य है । पर्यावरण भारती के वृक्षारोपण कार्यक्रम में स्त्री रोग विशेषज्ञ , शिशु रोग विशेषज्ञ के अलावा स्वेता कुमारी , संगीता सिंह , कोमल कुमारी , प्रोफेसर राम जीवन साहू , राम बिलास साण्डिल्य , डॉक्टर बी० मोदी , डॉक्टर ए० मोदी , वीरेन्द्र बरनवाल , अमन कुमार नीरज , तेज नारायण ठाकुर , नरेश प्रसाद बरनवाल आदि लोगों ने भाग लिया । ज्ञात हो कि शहीद मंगल पाण्डेय का जन्म आज ही के दीन 19 जुलाई 1827 को हुई थी ।

सुशीला हेम्ब्रम के निधन पर लोगों ने दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] भारत संचार निगम लिमिटेड के सुपरीटेंडेंट के पद से सेवानिवृत स्थानीय आदिवासी महासभा के अध्यक्ष एवं एससी एसटी अत्याचार निवारण समिति के सदस्य सीताराम बेसरा की पत्नी सुशीला हेम्ब्रम का निधन हो गया है। जिसको लेकर तिलवरिया क्षेत्र में जिला परिषद सह अध्यक्ष शिक्षा समिति धर्मदेव यादव की अगुवाई में शोकसभा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें झारखंड से आए सामाजिक कार्यकर्ता बच्चू मरांड़ी सुरेंद्र यादव, मनिष टुडु, अधिवक्ता उमेश प्रसाद, राजेश साह ,पंसस बाबूलाल बेसरा आदि लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित किया। लोगों ने बताया कि सीताराम बेसरा के सामाजिक योगदान में सुशीला हेम्ब्रम बराबर की भागीदारी निभाने वाली एक सामाजिक कार्यकर्ता थी।

गुरू-शिष्य परम्परा पर संवाद कार्यक्रम की तैयारियां अंतिम चरण में, कुलपति करेंगे उद्घाटन

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा में आगामी 21 जुलाई (रविवार) को अपराह्न एक बजे से आयोजित होने वाले गुरू-शिष्य परम्परा विषयक संवाद कार्यक्रम की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। प्रधानाचार्य प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव ने शुक्रवार को कार्यक्रम का आमंत्रण पत्र जारी किया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के निमित्त सभी अतिथियों को आमंत्रण पत्र हस्तगत कराया जा चुका है। इसके अलावा वाट्सएप एवं ई. मेल से भी आमंत्रण-पत्र भेजा जा रहा है। उन्होंने बताया कि संवाद के उद्घाटनकर्ता-सह-मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. बी. एस. झा, विशिष्ट अतिथि के रूप में कुलसचिव डॉ. विपिन कुमार राय एवं मुख्य वक्ता पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. के. के. मंडल होंगे। तीनों की सहमति प्राप्त हो गई है। इसके अलावा जिले के सभी महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य भी सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम के संयोजक दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि कार्यक्रम की रूपरेखा तय कर ली गई है। प्रधानाचार्य द्वारा कुलपति एवं अन्य अतिथियों का महविद्यालय द्वार पर अगुवानी की जाएगी। एनसीसी कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा तथा एनएस के स्वयंसेवक तिलक लगाकर अभिनंदन करेंगे। तदुपरांत कुलपति द्वारा पुस्तकालय के सामने आंवला रोपकर ह्यएक गाछ गुरू के नामह्ण (ए ट्री नेम्ड आफ्टर द टीचर) अभियान की शुरूआत की जाएगी। उन्होंने बताया कि सभा भवन में पहुंचने के बाद कुलपति एवं अन्य अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम महाविद्यालय के संस्थापक कीर्ति नारायण मंडल के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि की जाएगी। अतिथियों का अंगवस्त्रम् एवं पुष्पगुच्छ से सम्मान किया जाएगा। अतिथियों द्वारा डॉ. कौशल किशोर सिंह की पुस्तक ह्यपाषाण गुरुह्ण का लोकार्पण भी किया जाएगा। अर्थपाल डॉ. मिथिलेश कुमार अरिमर्दन ने बताया कि रविवार को आयोजित होने वाले कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। शुक्रवार से रविवार तक किसी भी शिक्षक या कर्मी को सामान्यतः किसी भी प्रकार का अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा। इस अवसर पर बी. एड. विभागाध्यक्ष डॉ. जावेद अहमद, विवेकानंद आदि उपस्थित थे।

जन सुराज प्रमुख प्रशांत किशोर ने बिहार में कानून व्यवस्था पर उठाया सवाल? लालू और नीतीश राज्य पर बोला जुबानी हमला

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा पहुंचे जन सुराज अभियान के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने पदयात्रा के बाद आज मधेपुरा में प्रेस वार्ता की। जहां उन्होंने कहा कि बिहार में आगामी 2025 की विधानसभा चुनाव में जन सुराज सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। आगामी 2 अक्टूबर को जन सुराज अभियान को राजनीतिक दल के रूप में परिवर्तित कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि मैंने घोषणा की है कि मैं इस दल का नेता नहीं हूं। उन्होंने कहा कि हम पहले नेताओं को सलाह देते थे कि किस तरह से संगठित हों, किस तरह से चुनाव अभियान चलाया जाए। वहीं काम 2 अक्टूबर बनने वाले जन सुराज के लिए करेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो चुकी है। लॉ एंड ऑर्डर की जो एजेंसियां हैं उसका आधा समय शराबबंदी लागू करने, उसको लाने छिपाने में इस्तेमाल हो रहा है। उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं कि लालू यादव का राज अपराधियों का जंगल राज था। अब नीतीश कुमार का राज अधिकारियों का जंगल राज है। उन्होंने कहा कि बिहार में चपरासी से लेकर मुख्य सचिव तक सब की संख्या अगर जोड़कर देखा जाए तो 1.97% लोग ही सरकारी नौकरी करते हैं। जो लोग यह दावा कर रहे हैं कि सरकारी नौकरी से आपका जीवन बदल जाएगा। वह बिल्कुल आपको भरमा रहे हैं। आपको गलत सपना दिखा रहे हैं। पिछले 75 सालों में मात्र 1.97% लोगों को सरकारी नौकरी मिली है। यह सिर्फ समाज को लॉलीपॉप दिखाकर वोट लेने की राजनीति है। प्रशांत किशोर ने कहा कि पूरे दुनिया में ऐसा कहीं कोई प्रमाण नहीं है कि 13 करोड़ आबादी वाले राज्य में सरकारी नौकरी के जरिए बेरोजगारी दूर किया जा सकता है। दुनिया में इस बात का जरूर प्रमाण है कि अगर लोगों को अच्छी शिक्षा, स्किल और काम करने की सुविधा दे दी जाए तो उससे उसकी रोजी रोजगार मिल सकता है। बता दें कि प्रशांत किशोर जनसुराज अभियान के सूत्रधार हैं और बीते डेढ़ साल से पूरे बिहार में पदयात्रा कर रहे हैं। वहीं जन सुराज के मुख्य प्रवक्ता रंजीत सिंह ने कहा कि मधेपुरा समाजवाद की पवन धरती रही है, जिले में खासकर युवा और बुजुर्गों में काफी खुशी है लोग परिवर्तन चाहता है साथ हीं प्रशांत किशोर की बातों से काफी संतुष्ट है जिस तरह से पीके का कारवां पूरे बिहार में चल रहा है आने वाला समय जरूर परिवर्तित होगी ऐसा आम अवाम का भी मानना है।

10 दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का समापन

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा बीएन मंडल विवि के षैक्षणिक परिसर में 17 बिहार बटालियन एन.सी.सी. सहरसा के तत्वाधान में चल रहे 10 दिवसीय वार्षिक कैंप का शुक्रवार को कैडेटों के द्वारा शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन किया गया। 10 दिवसीय कैंप के दौरान कैडेटों को विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई। इसके अलावा हथियार चलाना, प्राथमिक चिकित्सा, स्वास्थ्य और स्वच्छता, आपदा से बचाव के तरीके और रक्षा बलों में कैरियर के अवसरों सहित प्रदर्षन और व्यावहारिक अभ्यास भी किए गये। इसके साथ-ही कैडेटों को अपनी सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास गतिविधियों के तहत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत अभियान, का जागरूकता फैलाने का भी मौका मिला। साथ-ही विभिन्न प्रकार के खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया, बेहतर प्रदर्शन करने वाले कैडेटों को पुरस्कृत किया गया। शिविर के समापन के दौरान कैंप कमान अधिकारी पी.के. चौधरी ने सभी कैडेटों को संबोधित करते हुए कहा कि इन 10 दिनों के प्रशिक्षण शिविर में कैडेट्स ने जो भी जानकारी हासिल की है उसका बेहतर ढंग से अनुश्रण करें एवं देष का एक जिम्मेदार नागरिक बनें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें। इसके साथ-ही सभी कैडेटों के उज्जवल सभी भविष्य की कामाना करते हुए कैडेटों को विदा किया। मौके पर डिप्टी कैंप कमांडर कैप्टन गौतम कुमार, ले. गुड्डु कुमार, ले. डॉ0 शुभाषिश दास, सेना मेडल सुबेदार मेजर मो0 रकीब, बीएचएम मोहन लाल लाम्बा, सुबेदार स्तानजिन मोसलम, हवलदार शैलेश सिंह, एवं यूडीसी कौशलेन्द्र कुमार आदि मौजूद थे।

मानव ने पहली बार सन 1969 में चंद्रमा पर कदम रखा: डॉ. गौरी शंकर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई:- चंद्र दिवस की पूर्व संध्या पर देर शाम चंद्र दिवस पर केकेएम कॉलेज के स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. (प्रो.) गौरी शंकर पासवान ने कहा कि चंद्रमा पृथ्वी का एकमात्र विशिष्ट उपग्रह है. चंद्रमा की धरती पर सबसे पहले मानव सन 1969 में कदम रखा था. इसी उपलक्ष में 20 जुलाई को चंद्रमा पर पहली बार इंसान के पहुंचने का वर्षगांठ मनाया जाता है. 16 जुलाई 1969 को अपोलो- 2 रॉकेट को अमेरिका ने लांच किया था, जिसमें तीन अंतरिक्ष यात्री- नील आर्मस्ट्रांग, माइकल कॉलिंग और एडमिन एल्डिन सवार थे. कमांडर आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा की धरती पर सबसे पहले कदम रखा था। तदोपरांत घोषणा की थी कि एक व्यक्ति के लिए यह एक छोटा सा कदम है, लेकिन मानवजाति के लिए जबरदस्त छलांग हैह्ण नासा एक बार फिर आगामी 2025 तक इंसानों को चांद पर उतारने का लक्ष्य रखा है. उन्होंने कहा कि चंद्र दिवस मनाने का सबसे उत्तम तरीका है,चांद पर इंसान के पहले कदम से संबंधित कथा,आलेख को पढ़ना और संबंधित फिल्में भी देखना है. चीन और अमेरिका के बीच छिड़ी चांद पर जाने की होड़ में भारत यानी इसरो के लिए अमेरिका रूस ने अपना दरवाजा भी खोल दिया है. चांद पर मूल्यवान और दुर्लभ संसाधन है - टाइटेनियम, हिलियम, थोरियम, यूरेनियम और जल आदि पाए जाते हैं जो चंद्र अर्थव्यवस्था के सूचक हैं। प्रो.पासवान ने कहा कि भारत की भी चांद पर कब्जा कर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अपना दबदबा बढ़ाने की प्रबल इच्छा रही है। अभी हाल ही में 14 जुलाई को चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण कर इसरो यानी भारत ने विकसित राष्ट्रों को न केवल चौंकाया बल्कि,चंद्रयान-3 जब 23- 24 अगस्त को चांद की दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट और सुरक्षित सफल लैंडिंग कराकर दुनिया में अंतरिक्ष महाशक्ति के क्षेत्र में चौथा देश बन गया, तो दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला संसार का पहला राष्ट्र बन गया है। चंद्रयान 3 साउथ पोल का अध्ययन कर प्रत्येक दिन नया-नया तस्वीर इसरो को भेज रहा है। हमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) पर गर्व है. एक दिन ऐसा भी समय आएगा कि भारत चांद पर पौधा और फसल उगाने में भी कामयाब होगा। उन्होंने कहा कि एक समय में भारत में जब अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरूआत की थी, तो कई विकसित देशों ने इसका मजाक उड़ाया था, लेकिन भारत कम बजट में भी उच्च अंतरिक्ष तकनीक को हासिल करने में सफलता प्राप्त कर अंतरिक्ष प्रक्षेपण में विकसित देशों को लोहा मनवा दिया है। आज भारत श्रेष्ठ अंतरिक्ष तकनीक वाले देशों के कतार में शुमार हो चुका है।

हत्यारे ने सनोज तांती की हत्या कर शव को सिंधिया नदी तट पर फेंका

● हत्यारे को गिरफ्तार करने में जुटी पुलिस

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई:- जिले के लक्ष्मीपुर थानान्तर्गत सिंघिया गांव के पास गुरुवार को एक व्यक्ति का शव मिलने की सूचना थानाध्यक्ष आलोक कुमार प्राप्त हुआ। तत्क्षण पुलिस के वरीय पदाधिकारियों द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण किया गया। मृत शव की पहचान सनोज ताँती पिता बनारसी ताँती ग्राम महुआगढ़ थाना लक्ष्मीपुर के रूप में की गई है।
शव को अन्त्य परीक्षण के लिए सदर अस्पताल भेजा गया है। घटनास्थल पर वैज्ञानिक साक्ष्य संकलन के लिए विधि विज्ञान प्रयोगशाला की टीम बुलाई गई है। जमुई पुलिस की तकनीकी टीम द्वारा घटनास्थल से मोबाइल टावर डंप एकत्रित किया गया है। पुलिस को शुरूआती अनुसंधान में अपराधियों के विरुद्ध महत्वपूर्ण सुराग मिले हैं। पुलिस शीघ्र घटना के उद्भेदन एवं अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए तत्पर है। ज्ञात हो कि सनोज तांती 14 जुलाई को अपने पड़ोसी से कुछ कहा सूनी हुई थी और पड़ोसी ने सनोज तांती को देख लेने की धमकी दी।18 जुलाई को सनोज तांती की हत्या कर शव को सिंधिया नदी तट के किनारे हत्यारों ने फेंक दिया।जिसे लक्ष्मीपुर पुलिस अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल जमुई भेज दिया। वहीं एसडीपीओ सतीश सुमन के नेतृत्व में टीम गठित कर अनुसंधान आरंभ कर दिया गया है और जल्द ही हत्यारे पुलिस की गिरफ्त में होंगे।

डाक विभाग की योजनाओं की पूर्ण जानकारी साझा करने को लेकर आयोजित हुआ डाक चौपाल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] डाक सेवाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचे इसको लेकर झाझा डाकघर में डाक चौपाल का आयोजन किया गया। जिसमें अलग विभाग के कर्मी के अलावे अन्य कई गणमान्य लोग उपस्थित हुए। डाक निरीक्षका अभिषेक कुमार ने बताया कि डाक विभाग लगातार लोगों के बीच बेहतर सेवा देने के लिए प्रयत्नशील है। डाक विभाग के द्वारा कई ऐसी जनकल्याणकारी योजना लोगों के बीच पूरी विश्वास के साथ चलाया जा रहा है जिसका लाभ भी लोगों को मिल रहा है। डाक निरीक्षक ने बचत योजनाओं सहित डाक बीमा के बारे मे बताया। उन्होनें बताया कि डाक चौपाल का आयोजन करने का मकसद लोगों में बैंकिंग और बीमा के बारे में साक्षर करना था। डाक चौपाल के माध्यम से हर घर को डाक विभाग से जोड़ा जा रहा है ताकि हर लोग डाक घर से जुड़कर संचालित हो रही महत्वपूर्ण योजना के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर डाक विभाग के किसी भी योजना से वंचित न हो पाए। उन्होनें बताया कि आज डाक विभाग लोगों को तमाम सुविधा प्रदान कर रही है। बच्चों की शिक्षा से लेकर सुकन्या योजना, वरिष्ठ नागरिक बचत खाता, आपीपीबी खाता, डाक निर्यात केंद्र आदि की जानकारी देने के साथ अन्य योजना से लोगों को जोड़ा जा रहा है। मौके पर उपस्थित लोगों से उनकी समस्या भी सुनी गई और उसका समाधान करने का भरोसा भी डाक निरीक्षक के द्वारा किया गया। डाक चौपाल में उपडाकपाल सुधीर प्रसाद सिन्हा, डाक सहायक गोपाल कुमार, नरेंद्र कुमार यादव, सेवानिवृत वरिष्ठ नागरिक सीपी यादव, शंकर यादव सहित अन्य कई लोग मौजूद थे।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता की तैयारी जारी

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा में 22 जुलाई, 2024 (सोमवार) को पूर्वाह्न 11:30 बजे से श्री कीर्ति नारायण मंडल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का का आयोजन किया जाएगा। नगर अध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि प्रतियोगिता आयोजन की तैयारियां चल रही हैं। इसको लेकर कार्यकताओं द्वारा सघन जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने सभी महाविद्यालयों एवं विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा कोचिंग संस्थानों के निदेशकों से अनुरोध किया है कि वे अपने संस्थान के विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु प्रेरित करने का कष्ट करेंगे। प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सीनेटर रंजन यादव, एवं विभाग संयोजक सौरभ यादव बताया कि कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सहयोग राशि मात्र दस रुपए रखी गई है। जिला संयोजक नवनीत सम्राट एवं नगर मंत्री अंकित आनंद ने बताया कि इस प्रतियोगिता का समापन समारोह सह प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह 26 जुलाई को ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में ही आयोजित किया जाएगा।

कुमरसार कांवरिया सेवा शिविर में भाग लेने 25 जुलाई को निकलेगी सत्य साईं सेवादल की टोली

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर/जमुई। बीते गुरुवार की देर शाम गिद्धौर के एक निजी भवन में श्री सत्य साईं सेवा समिति गिद्धौर की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता संगठन के जिलाध्यक्ष मुन्ना कुमार ने की। बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष ने बताया कि सावन के पावन महीने में सुल्तानगंज से बाबा बैद्यनाथ धाम जाने के रास्ते में कुमरसार स्थित श्री सत्य साईं बाबा के सेवा आश्रम में कांवरिया सेवा शिविर में भाग लेने के लिए संगठन के जमुई जिला की टोली 25 जुलाई की सुबह निकलेगी जो27 जुलाई तक बाबा बैद्यनाथ धाम जाने वाले कांवरियों की सेवा करेगी और 28 जुलाई को वापस आयेगी। इसमें जमुई जिला सत्य साईं सेवा संगठन के अंतर्गत गिद्धौर, झाझा एवं कन्हाईफरका समिति के सेवादल हिस्सा लेंगे। उक्त बैठक में संगठन के बिहार प्रदेश आईटी कॉर्डिनेटर सुशांत साईं सुंदरम, जमुई जिला आध्यात्मिक प्रभारी योगेश कुमार, गिद्धौर समिति कन्वेनर पवन कुमार, युवा प्रभारी रितेश कुमार अध्ययन केंद्र प्रभारी मुकेश कुमार, शशि साईं, मनीष केशरी, मंटू रावत, रॉकी कुमार सहित गिद्धौर समिति के अन्य सेवादल व साईं भक्त मौजूद रहे।

सम्पादकीय

स्थानीय आरक्षण की सियासत

न जाने क्यों कर्नाटक सरकार को स्थानीय आरक्षण वाला विधेयक फिलहाल स्थगित करना पड़ा! कर्नाटक सरकार की नीयत और उसके मंसूबे विधेयक में साफ झलकते हैं, जिसे राज्य कैबिनेट ने पारित किया था। पारित विधेयक भारतीय संविधान की भावना और उसका अक्षरशः उल्लंघन है, क्योंकि अनुच्छेद 19 (1) के तहत देश का प्रत्येक नागरिक, देश के किसी भी हिस्से में, कारोबार या नौकरी कर, अपनी आजीविका कमा सकता है। किसी भी क्षेत्र की भाषा, जाति, धर्म और राज्यवाद उस पर प्रतिबंध नहीं थोप सकते। इसी तरह स्थानीय भाषा और नागरिकता के आधार पर आरक्षण तय करना भी असंवैधानिक है। कर्नाटक कैबिनेट ने जो बिल पारित किया था, उसके मुताबिक निजी क्षेत्र के उद्योगों, फैक्टरियों और अन्य कंपनियों में प्रबंधकीय श्रेणी के पदों पर 50 फीसदी आरक्षण कन्नड़भाषी लोगों के लिए होगा। गैर-प्रबंधकीय पदों के लिए कन्नडवालों के लिए 75 फीसदी आरक्षण होगा। सरकार से अनापत्ति प्रमाण-पत्र तभी मिलेगा, जब इस आरक्षण की पुष्टि हो जाएगी। कन्नड़ भाषा का ज्ञान, कन्नड़ परिवार में जन्म आदि शर्तें आरक्षण के लिए अनिवार्य हैं। यदि किसी पद के लिए पात्र, योग्य, कुशल कर्मचारी न मिले, तो यह दायित्व भी कंपनी का होगा कि वह अपात्र व्यक्ति को भी अपने साथ रखे और तीन साल के अंतराल में प्रशिक्षित करे। रोजगार और नियुक्ति कन्नडवाले को ही मुहैया की जाएगी। दरअसल कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु सूचना प्रौद्योगिकी का गढ़ है। वहां 67,000 से ज्यादा देशी-विदेशी आईटी कंपनियां काम कर रही हैं। उन कंपनियों में नौकरी सिर्फ योग्यता के आधार पर मिलती है, क्योंकि काम ही तकनीकी और प्रौद्योगिकी का है।

बेंगलुरु में देश के अन्य क्षेत्रों और विदेशों से भी लोग आईटी की नौकरी करने आते हैं और बेंगलुरु के युवा विदेशों में भी नौकरी करने जाते हैं। क्या ऐसे क्षेत्र में आरक्षण तर्कसंगत है? बेंगलुरु के अलावा मुंबई हमारे देश का नंबर एक महानगर है, जहां देश के कोने-कोने से लोग नौकरी करने आते हैं। वहां मराठा के नाम पर ऐसा आरक्षण नहीं है कि अन्य भारतीयों के लिए दरवाजे बंद कर दिए जाएं। कर्नाटक कोई पहला राज्य नहीं है, जहां कैबिनेट ने स्थानीय आरक्षण का बिल पारित किया है। इससे पहले आंध्रप्रदेश (2019) और हरियाणा सरकार (2020) अपने भाषायी और स्थायी नागरिकों के लिए 70-75 फीसदी आरक्षण का कानून बना चुकी हैं। बीते साल नवंबर में पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट ने स्थानीय आरक्षण की व्यवस्था और कानून को खारिज कर दिया था। आंध्र उच्च न्यायालय ने भी स्थानीय आरक्षण को ह्यअसंवैधानिकह्न करार दिया था, जबकि यह बिल आंध्र विधानसभा में मई, 2019 में पारित किया जा चुका था। दरअसल यह भी आरक्षण के बुनियादी मुद्दे सरीखा है। यह भरपूर सियासत भी है। सरकारें स्थानीय आरक्षण को इसलिए लागू करना चाहती हैं, क्योंकि वे अपने मतदाता को रोजगार मुहैया कराना चाहती हैं। यह लाभ उन्हें बाहर के लोगों से नहीं मिल सकता, लेकिन सवाल यह भी है कि कन्नड़वाले बाहर के क्षेत्रों में भी काम करने जाते हैं। हरियाणा के असंख्य लोग दिल्ली और अन्य शहरों में व्यापार करते हैं, नौकरियां करते हैं। क्या उन सभी को प्रतिबंधित किया जा सकता है? यह अवधारणा भी संविधान के खिलाफ है। दरअसल बेरोजगारी पूरे देश की भीषण समस्या है। सरकारों और राजनीतिक दलों के लिए गंभीर चुनौती है। अब भी बेरोजगारी की राष्ट्रीय दर 9 फीसदी के करीब है, जो भयानक है। ऐसे आरक्षण से देश में इंस्पेक्टर राज की वापसी भी हो सकती है, क्योंकि नौकरशाहों को जिम्मेदारी दी जाएगी कि औसत कंपनी में कितने स्थानीय कर्मचारी हैं अथवा नहीं हैं! जिस आयाम को नजरअंदाज किया जाता रहा है, वह है-निजी क्षेत्र पर प्रभाव। अब तक यह साफ हो चुका है कि भारत में केंद्र या राज्य सरकारें देश के बेरोजगार युवा को नौकरी या रोजगार देने में असमर्थ हैं, लिहाजा समाधान के तौर पर निजी क्षेत्र की ओर देखा जा रहा है। स्थानीय आरक्षण के लगातार दबाव से उस क्षेत्र की गतिशीलता और उत्साह या प्रगतिशीलता भी ठंडी पड़ेगी, जो नई प्रौद्योगिकी के हब बने हुए हैं। सियासत के अलावा कोई और रास्ता निकाला जाए, ताकि रोजगार भी मिलें और निजी क्षेत्र पर भी उलटा असर न पड़े।

इसलिए जरूरी है बफर स्टॉक

प्रियंका सौरभ

गेहूं और चने की खुले बाजार में बिक्री से अनाज और दालों की बढ़ती महंगाई को रोकने में मदद मिली है। बढ़ते जलवायु-संचालित आपूर्ति झटकों और मूल्य अस्थिरता के बीच बफर स्टॉक को अन्य प्रमुख खाद्य पदार्थों तक बढ़ाना समझदारी है।

मूल्य वृद्धि को कम करने के लिए बफर स्टॉक को चावल, गेहूं और चुनिंदा दालों के अलावा तिलहन, सब्जियों और यहां तक कि दूध पाउडर को भी शामिल किया जाए। भविष्य में बाजार स्थिरीकरण के लिए पर्याप्त बफर स्टॉक बनाने के लिए अधिशेष वर्षों के दौरान खरीद बढ़ाने की वकालत की जाती है। बफर स्टॉकिंग जलवायु परिवर्तन से प्रेरित कृषि अनिश्चितताओं से प्रभावित मूल्य अस्थिरता को कम कर सकता है, जिससे उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों को लाभ होगा।

दरअसल बफर स्टॉक आवश्यक वस्तुओं के भंडार हैं जो आपूर्ति और मांग में उतार-चढ़ाव को प्रबंधित करने के लिए बनाए रखे जाते हैं। भारत में चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74) के दौरान शुरू बफर स्टॉक खाद्य सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और मूल्य नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय खाद्य निगम द्वारा बनाए गए चावल और गेहूं के बफर स्टॉक प्रतिकूल परिस्थितियों के दौरान इन प्रमुख वस्तुओं की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा और मूल्य स्थिरता का समर्थन होता है। बफर स्टॉकिंग खाद्य पदार्थों की कीमतों में अत्यधिक अस्थिरता को रोकने का एक साधन हो सकता है, मुद्रा बाजार के मुकाबले आरबीआई के विदेशी मुद्रा भंडार के समान। जलवायु-संचालित मूल्य अस्थिरता में वृद्धि-जो अंततः न तो उपभोक्ताओं और न ही उत्पादकों की मदद करती है-केवल खाद्य बफर नीति के मामले को मजबूत करती है।

आपूर्ति को बढ़ावा देने और कीमतों को स्थिर करने के लिए कमी की अवधि के दौरान बफर स्टॉक जारी किया जाता है, जिससे उपलब्धता सुनिश्चित होती है। उदाहरण के लिए 2019 में प्याज की कीमत में उछाल के दौरान भारत सरकार ने आपूर्ति बढ़ाने, कीमतों को नियंत्रित करने और मुद्रास्फीति को रोकने के लिए बफर स्टॉक जारी किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्याज सस्ता बना रहे। बफर स्टॉक बनाए रखने से सरकार आपूर्ति की कमी के दौरान कीमतों में भारी वृद्धि को रोक सकती है, जिससे बाजार की मांग संतुलित रहती है। उदाहरण के लिए 2020 में सरकार ने कीमतों को स्थिर करने के लिए बफर स्टॉक से दालें जारी कीं, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उत्पादन में कमी के बावजूद दालें उपलब्ध और सस्ती बनी रहें।

बफर स्टॉक बाजार में आपूर्ति और मांग की गतिशीलता को विनियमित करके अत्यधिक मूल्य में उतार-चढ़ाव को सुचारु बनाने में मदद करते हैं। बफर स्टॉक कमी के दौरान बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर मुद्रास्फीति को कम करते हैं, जिससे कीमतों में अत्यधिक वृद्धि को रोका जा सकता है। उदाहरण के लिए 2021 में गेहूं और चावल के स्टॉक को जारी करने से भारत में बढ़ती खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद मिली, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि मुख्य अनाज उपभोक्ताओं के लिए किफायती रहे। बफर स्टॉक स्थिर बाजार सुनिश्चित करके, अधिक आपूर्ति के कारण कीमतों में गिरावट को रोककर और मूल्य स्थिरता प्रदान करके किसानों की सहायता करते हैं। उदाहरण के लिएः सरकार ने अतिरिक्त दूध खरीदा और किसानों के लिए दूध की कीमतों को स्थिर करने के लिए इसे स्किम्ड मिल्क पाउडर (एसएमपी) में बदल दिया, जिससे अधिक आपूर्ति के कारण वित्तीय नुकसान को रोका जा सके।

बफर स्टॉक आवश्यक खाद्य पदार्थों तक निरंतर पहुंच सुनिश्चित करते हैं, जिससे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए महामारी के दौरान, गरीबों के लिए भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने, भूख को रोकने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया गया था। बफर स्टॉक कीमतों को स्थिर करके और बाजार संतुलन बनाए रखकर आर्थिक झटकों को रोकते हैं, जिससे आर्थिक स्थिरता में योगदान मिलता है। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में 2018 के सूखे के दौरान बफर स्टॉक जारी करने से कीमतों को स्थिर करने और आर्थिक स्थिरता का समर्थन करने में मदद मिली, जिससे क्षेत्र मंक आर्थिक संकट को रोका जा सका। बफर स्टॉक जलवायु-प्रेरित आपूर्ति झटकों के कारण खाद्य उपलब्धता पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करते हैं, जिससे जलवायु लचीलापन बढ़ता है। अधिशेष वर्षों के दौरान अतिरिक्त उपज की खरीद करके बफर स्टॉक किसानों को एक स्थिर बाजार और उचित मूल्य प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण आर्थिक स्थिरता में योगदान मिलता है।

फिर आतंकी हमलें, सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जाये

ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आतंकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आतंकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आतंकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है। ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संतप्त परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।

ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

लगातार जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही आतंकी घटनाएं चिन्ता का कारण बन रही है। डोडा जिले में एक आतंकी हमले में कैप्टन समेत सेना के चार जवानों और जम्मू कश्मीर के एक पुलिसकर्मी का बलिदान अब यही दर्शा रहा है कि शांति एवं अमन की ओर लौटा जम्मू-कश्मीर एक बार फिर आतंकवादी आघातकारी घटनाओं की भेंट चढ़ रहा है, इन घटनाओं का माकुल जबाव नहीं दिया गया तो यह घाटी एक बार फिर खूनी घाटी बन जायेगी। क्योंकि कुछ ही दिनों पहले कठुआ में एक सैन्य अफसर सहित पांच जवान आतंकियों का निशाना बन गए थे। इसके पहले भी जम्मू संभाग में ही सेना के कई जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं। ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आतंकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आतंकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आतंकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है।

ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संतप्त परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।

डोडा वारदात की जिम्मेदारी लेने वाले कश्मीर टाइगर्स जैसे आतंकी संगठनों की ताजा बौखलाहट की एक बड़ी वजह जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली को लेकर बढ़ी सरगर्मी है। राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन के लिए अगले चंद महीनों में ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में, आतंकियों की बेचैनी समझी जा सकती है कि जिस तरह लोकसभा चुनाव में घाटी में लोग मतदान केंद्रों पर उमड़ पड़े और दशकों पुराना रिकॉर्ड टूटा, अगर विधानसभा चुनाव में लोगों का उत्साह और बढ़ा, तो जिन ह्यस्लीपर सेल्सह्न की बदौलत वे दहशत का अपना पूरा कारोबार चलाते हैं, वे भी मुख्यधारा के प्रति आकर्षित होकर, उनके खिलाफ हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने घाटी के बजाय जम्मू संभाग में अपनी सक्रियता बढ़ाई है, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित किया जा सके और सीमा पार के आकाओं से मदद हासिल करने का सिलसिला जारी रहे।

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा के आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। जम्मू-कश्मीर का माहौल सुधरने के बाद वहां के बाजार, पर्यटक स्थल गुलजार हुए हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था सुधर रही है। इसलिए देशद्रोही नहीं चाहते कि कश्मीर में शांति आए और वहां पर निर्वाचित सरकार काम करे। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। क्या इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया है? जो सरकार पाकिस्तान में घूस कर बदला ले सकती है, वह सरकार अब तक शांत क्यों है? ऐसा क्यों हो रहा है, इसकी तह तक जाने की जरूरत है। आतंकी जिस तरह अपनी रणनीति बदलकर सुरक्षा बलों को कहीं अधिक क्षति पहुंचाने में समर्थ दिखने लगे हैं, वह किसी बड़ी साजिश का संकेत है। एक ओर सीमा पार से होने वाली आतंकियों की घुसपैठ पर प्रभावी नियंत्रण करना होगा, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को नए सिरे से सबक भी सिखाना होगा। यह इसलिए अनिवार्य हो गया है, क्योंकि पिछले कुछ समय में आतंकी हमलों में बलिदान होने वाले सैनिकों की संख्या कहीं अधिक बढ़ी है।

पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। एक आंकड़े के अनुसार पिछले तीन वर्ष में करीब 50 जवानों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं। आतंक को करारा जवाब केवल तभी नहीं दिया जाना चाहिए, जब एक साथ बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों के जवानों को बलिदान देना पड़े। वास्तव में हमारे एक भी सैनिक का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। डोडा की घटना के बाद यह जो कहा जा रहा है कि सैनिकों के बलिदान का बदला लिया जाएगा, उसे न केवल पूरा करके दिखाया जाना चाहिए, बल्कि आतंकियों, उनके आकाओं और उन्हें सहयोग-समर्थन देने वालों पर ऐसा करारा प्रहार किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी हरकतों से हमेशा के लिए बाज आएं। पाकिस्तान भले ही आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा हो, लेकिन वह जम्मू कश्मीर में पहले की तरह ही आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगा हुआ है। उसकी घरेलू व विदेश नीति ह्यकश्मीरह्न पर ही आधारित है। चूंकि इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन उसे उकसाने में लगा हुआ होगा, इसलिए भारत को कहीं अधिक सतर्क रहना होगा।

केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया। लेकिन वहां विकास एवं शांति स्थापना का ही परिणाम रहा कि चुनाव में लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर लोकतंत्र में अपना विश्वास व्यक्त किया। बढ़ती आतंकी घटनाओं पर गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह नजर बनाए हुए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुरक्षा बल आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देगा लेकिन रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि सुरक्षा बलों को आतंकियों के प्रति अपनी रणनीति बदलनी होगी और आतंकी जिन बिलों में छिपे होंगे उन्हें वहां से निकालकर ढेर करना होगा। आतंकवाद पर अंतिम प्रहार करने की तैयारी करनी होगी और साथ ही आतंकियों के मददगारों की भी पहचान करनी होगी, तभी आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया जा सकता है।

पुलिस के आला अधिकारी यदि यह कह रहे हैं कि घाटी के नागरिक समाज में पाकिस्तानी घुसपैठ को बढ़ावा देने में कतिपय राजनीतिक दलों का रुख भी जिम्मेदार रहा है, तो क्या यह आधारहीन है? इसका मुकाबला हर स्तर पर हम एक होकर और सजग रहकर ही कर सकते हैं।

आइए हम सब खेल का उत्सव मनाएं- खेल ही ज्ञान है!

जैसे ही बच्चों ने जादुई पिटारा खोला, जो पूर्व-प्राथमिक स्तर के शिक्षण-शिक्षा से जुड़ी सामग्री है, तो उन्होंने औपचारिक तरीके से पुस्तकों और फ्लैशकार्ड को एक-एक करके ध्यान से देखा। लेकिन जब उनकी नजर नीचे पड़े खिलौनों पर पड़ी, तो उनकी आंखें चमक उठीं और वे उसके चारों ओर ऐसे इकट्ठा हो गए, जैसे बच्चे जन्मदिन-केक के चारों ओर जमा हो जाते हैं। उन्होंने बॉक्स से अपने पसंदीदा खिलौने उठाए- गुड़िया, कठपुतली आदि और एक-दूसरे के साथ खुशी व्यक्त करते हुए अपनी दुनिया में इस तरह मग्न हो गए कि मंच और समारोह पीछे छूट गए। इसने आश्चर्य, जिज्ञासा और खुशी पैदा की। पांच सौ से ज्यादा प्रशासकों, शिक्षाविदों और शिक्षकों की प्रतिष्ठित सभा ने अपने बचपन को याद करते हुए तालियां बजाईं और मुस्कान बिखेरी। जुलाई 2024-25 में नए स्कूल वर्ष की शुरूआत के मौके पर भारत भर की कक्षाओं में चमकती आंखें, हंसी, खिलखिलाहट, बातचीत, नन्हें पैरों की पदचाप और कभी-कभी रोने की आवाजें सुनाई देती हैं। आइए हम नए शिक्षण वर्ष को प्रत्येक बच्चे के लिए स्वागत योग्य, आनंदमय और चंचल बनाकर मनाएं। खेल बच्चों के लिए स्वाभाविक है और समग्र विकास (शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषाई, संज्ञानात्मक और सांस्कृतिक) के लिए एक शक्तिशाली उपाय है।

श्री संजय कुमार

माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा 20 फरवरी 2023 को जादुई पिटारा (जादू बॉक्स) के शुभारंभ के अवसर पर कुछ बच्चों को बॉक्स का अनावरण करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया था। जैसे ही बच्चों ने जादुई पिटारा खोला, जो पूर्व-प्राथमिक स्तर के शिक्षण-शिक्षा से जुड़ी सामग्री है, तो उन्होंने औपचारिक तरीके से पुस्तकों और फ्लैशकार्ड को एक-एक करके ध्यान से देखा। लेकिन जब उनकी नजर नीचे पड़े खिलौनों पर पड़ी, तो उनकी आंखें चमक उठीं और वे उसके चारों ओर ऐसे इकट्ठा हो गए, जैसे बच्चे जन्मदिन-केक के चारों ओर जमा हो जाते हैं। उन्होंने बॉक्स से अपने पसंदीदा खिलौने उठाए- गुड़िया, कठपुतली आदि और एक-दूसरे के साथ खुशी व्यक्त करते हुए अपनी दुनिया में इस तरह मग्न हो गए कि मंच और समारोह पीछे छूट गए। इसने आश्चर्य, जिज्ञासा और खुशी पैदा की। पांच सौ से ज्यादा प्रशासकों, शिक्षाविदों और शिक्षकों की प्रतिष्ठित सभा ने अपने बचपन को याद करते हुए तालियां बजाईं और मुस्कान बिखेरी। जुलाई 2024-25 में नए स्कूल वर्ष की शुरूआत के मौके पर भारत भर की कक्षाओं में चमकती आंखें, हंसी, खिलखिलाहट, बातचीत, नन्हें पैरों की पदचाप और कभी-कभी रोने की आवाजें सुनाई देती हैं। आइए हम नए शिक्षण वर्ष को प्रत्येक बच्चे के लिए स्वागत योग्य, आनंदमय और चंचल बनाकर मनाएं। खेल बच्चों के लिए स्वाभाविक है और समग्र विकास (शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषाई, संज्ञानात्मक और सांस्कृतिक) के लिए एक शक्तिशाली उपाय है। यह बच्चों को एक सुरक्षित, मजेदार और बगैर रोक-टोक वाली जगह में जिज्ञासु होने, खोज करने और प्रयोग करने की अनुमति देता है। हाल ही में, भारत और दुनिया ने 11 जून को संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया, जिसमें विशेष रूप से बच्चों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने के लिए खेल के महत्व को मान्यता दी गई है। भारत ने भी खेल पर जोर दिया है और इसे संस्थागत बनाने में अग्रणी रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 और राष्ट्रीय पूर्व-प्राथमिक स्तर पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2022 (एनसीएफ-एफएस) ने पहली बार पूर्व-प्राथमिक स्तर (3-8 वर्ष की आयु) के लिए एक पाठ्यक्रम रूपरेखा की परिकल्पना की और इसे तैयार किया। एनसीएफ-एफएस का मुख्य परिवर्तनकारी पहलू ह्लखेल के माध्यम से सीखनाह्व है, जो अपने आप पता चल जाने वाली बातों को वैधता प्रदान करता हैः यानी, जब बच्चे खेलते हैं, तो वे सीखते हैं। सीखना केवल तब नहीं होता, जब बच्चा लिख रहा होता है। सीखने की एक विशेष शैली को लागू न करने की जरूरत है, क्योंकि सीखने वालों की संख्या जितनी अधिक होती है, सीखने के उतने ही अधिक तरीके भी मौजूद होते हैं। खेल में बातचीत, कहानी सुनाना, खिलौने, गीत और कविताएं, संगीत और शारीरिक सक्रियता, कला और शिल्प तथा इनडोर और आउटडोर खेल शामिल होते हैं।

यह आपसी संपर्क छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के बीच एक मजबूत बंधन बनाता है। ऐतिहासिक रूप से, देखभाल के एक हिस्से के रूप में खेल सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू हुआ। सभ्यता की विरासत लोरियों, बच्चों की कहानियों, खेलों, खिलौनों, कविताओं और पहेलियों के समृद्ध और विविधतापूर्ण भंडार में दिखाई देती है। एनसीएफ-एफएस की परिवर्तनकारी प्रकृति का प्रतीक एनसीईआरटी का जादुई पिटारा है, जिसे फरवरी 2023 में जारी किया गया। जादुई पिटारा किसी भी स्कूल में पूर्व-प्राथमिक स्तर के लिए आवश्यक सामग्री का उदाहरण है। यह विविधतापूर्ण है और ऐसी सामग्री विकसित करते समय ध्यान में रखी जाने वाली संवेदनशीलता (आयु-उपयुक्त, संवेदी अनुभव और स्थानीय) को प्रदर्शित करता है। पिटारे में खिलौने, खेल, पहेलियां, कठपुतलियां, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, कहानी की किताबें, प्लेबुक और शिक्षक-पुस्तिकाएं हैं। प्रत्येक खिलौना और खेल को एक निश्चित सीखने के परिणाम से जोड़ा गया है। देश भर के हितधारकों ने जादुई पिटारा में उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत परिवर्तनकारी शिक्षण-शिक्षा से जुड़ी सामग्री की सराहना की है। राज्यों द्वारा अपने स्थानीय संदर्भ और परिवेश के लिए बॉक्स की सामग्री को अनुकूल बनाने के प्रयास जारी हैं। यह मानते हुए कि हम अब डिजिटल युग में रह रहे हैं और प्रौद्योगिकी-सक्षम चैनल, जादुई पिटारा की पहुंच और प्रभाव को बढ़ा सकते हैं, शिक्षा मंत्रालय ने फरवरी 2024 में ई-जादुई पिटारा का शुभारंभ किया, ताकि यह भौतिक जादुई पिटारा का पूरक बन सके और विभिन्न माध्यमोंः कंप्यूटर, स्मार्ट-व फीचर-फोन, टेलीविजन और रेडियो आदि, के जरिये पहुंच को लोकतांत्रिक बनाया जा सके। बच्चों को कहानियां सुनाने तथा खेल-खेल में सीखने की गतिविधियों में उन्हें शामिल करने के जुड़े सवाल पूछने के लिए; देखभाल करने वाले अब चैट और वॉयस सुविधाओं के माध्यम से जनरेटिव एआई का लाभ उठाते हुए वर्चुअल सहायक के साथ बातचीत कर सकते हैं।

गुरुपूर्णिमा - शिष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन !

श्रीमती प्राची जुवेकर

गुरुपूर्णिमा, शिष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन है, यह गुरु और गुरु तत्व का उत्सव है। यह गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जो हमें मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं व हमारा हाथ पकड़ कर हमें वहां तक ले जाते हैं। इस दिन गुरु-शिष्य परंपरा के संस्थापक आदि गुरु महर्षि व्यास की पूजा की जाती है। इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। इस वर्ष गुरु पूर्णिमा 21 जुलाई 2024 को रविवार के दिन मनाई जाएगी। गुरु ईश्वर का साकार रूप होते है। हिंदू संस्कृति ने गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया है; क्योंकि गुरु साधक को ईश्वर प्राप्ति के लिए साधना सिखाते हैं, उससे करवाते हैं और उसे ईश्वर प्राप्ति में मदद करते हैं। गुरु विभिन्न तरीकों से शिष्यों का मार्गदर्शन करते हैं और जीवन भर लगातार उन पर अपनी कृपा बरसाते हैं।

गुरु के ऋण को चुकाना असंभव है, किन्तु हम विनम्रतापूर्वक गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं ! गुरु पूर्णिमा पर गुरु तत्व अन्य दिनों की तुलना में एक हजार गुना अधिक कार्यरत होता है। इसलिए सेवा और त्याग भी हजार गुना अधिक फलदायी होता है। गुरुपूर्णिमा शिष्यों को गुरु तत्व की सेवा करने और गुरु की कृपा प्राप्त करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। सभी गुरु, बाह्य रूप से स्थूल शरीर से अलग होते हुए भी, आंतरिक रूप से एक हैं। जिस प्रकार गाय के प्रत्येक थन से एक समान शुद्ध दूध निकलता है, उसी प्रकार प्रत्येक गुरु में गुरुत्व एक समान होता है, उसी प्रकार उनसे निकलने वाली आनंद की तरंगें भी एक समान होती हैं। जैसे समुद्र की लहरें किनारे की ओर आती हैं, वैसे ही ब्रह्म/ईश्वर यानी गुरु की लहरियाँ समाज की ओर आती हैं। जिस प्रकार सभी तरंगों में जल का स्वाद एक समान है, उसी प्रकार सभी गुरुओं में तत्त्व एक ही है, ब्रह्म। गुरु का महत्व : इस जीवन में छोटी-छोटी चीजों के लिए भी, हर कोई किसी न किसी से मार्गदर्शन लेता है, चाहे वह शिक्षक, डॉक्टर, वकील आदि हों। फिर जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले गुरु के महत्व की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। संत और गुरु : सकाम और निष्काम की प्राप्ति के लिए संत बहुत कम मार्गदर्शन देते हैं।

कुछ संत लोगों की व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के साथ-साथ बुरी शक्तियों के कारण होने वाले कष्टों को दूर करने के लिए भी काम करते हैं। ऐसे संतों का यही काम है। जब कोई संत किसी साधक को अपना शिष्य स्वीकार कर लेते हैं तो वह उसका गुरु बन जाता है। गुरु ही निष्काम (ईश्वर) की प्राप्ति का पूर्ण मार्गदर्शन करते है। एक बार जब कोई संत गुरु के रूप में कार्य करना शुरू कर देते हैं, तो जो लोग उसके पास अपनी सकाम समस्याओं को हल करने के लिए आते हैं, उनका मार्गदर्शन करने की इच्छा धीरे-धीरे कम हो जाती है और अंततः समाप्त हो जाती है; लेकिन जब वे किसी को अपना शिष्य स्वीकार करते हैं तो उसका पूरा ख्याल रखते हैं। प्रत्येक गुरु संत है; लेकिन प्रत्येक संत गुरु नहीं होते । हालाँकि, संतों के अधिकांश गुण गुरु पर लागू होते हैं।

गुरुपूजन : दैनिक स्नान के उपरांत पूजन के समय उपासक गुरुपरंपरासिद्धार्थं व्यासपूजां करिष्ये । का उच्चारण करता है और गुरु की पूजा शुरू करता है। एक धुला हुआ वस्त्र बिछाकर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशाओं में चंदन से रेखाएँ खींची जाती हैं (प्रत्येक में 12 रेखाएँ)। यह महर्षि व्यास का आसन होती है। ब्रह्मा, परात्परशक्ति, व्यास, शुकदेव, गौड़पाद, गोविंदस्वामी और शंकराचार्य का आह्वान किया जाता है और उन्हें व्यासपीठ पर आमंत्रित किया जाता है। उन सभी को षोडशोपचार पूजा अर्पित की जाती है। इस दिन दीक्षा गुरु और माता-पिता की पूजा करने की प्रथा है। यदि भारत को किसी एक शब्द से परिभाषित किया जा सकता है तो वह है गुरु-शिष्य परंपरा। गुरु की शरण में जाना ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। गुरु शिष्य के जीवन में अज्ञानता के अंधकार को नष्ट कर उसे परब्रह्म के शाश्वत प्रकाश से मिला देता है। संतों और विद्वानों ने सदियों से गुरु के गुणों का गुणगान किया है।

संक्षिप्त खबरें

जंगली जीवो के घरों में निकल आने का सिलसिला जारी मगरमच्छ का किया रेस्क्यू

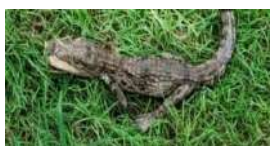

बगहा। वाल्मीकिनगर परिक्षेत्रों स्थित रिहायशी इलाकों में जंगली जीवो के निकलने का सिलसिला जारी है। कहीं जंगली सांप तो कहीं मगरमच्छ बदस्तूर निकल आ रहे हैं। गत दिनों सुबह के मोर्निंग वॉक के समय वाल्मीकि सभागार कन्वेंशन सेंटर के सामने मगरमच्छ के बच्चे को बरामद किया गया था।ठीक इसके दो दिन बाद वाल्मीकिनगर के बिसहा गांव निवासी राजेश कुमार के घर से व्यस्क मगरमच्छ का रेस्क्यू कर गंडक नदी में छोड़ दिया गया। बतादें की बरसात के कारण ये जीव सरकते हुए रिहायशी इलाके की तरफ चले आते हैं। रेंजर राजकुमार पासवान ने बताया कि कहीं भी इस तरह की घटना को देखें तो तुरंत वन विभाग को सूचित करें।

गौरी केडिया बुटीक कलेक्शन प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

छपरा कार्यालय। गौरी केडिया बुटीक कलेक्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन उपमेयर रागिनी कुमारी तथा गौरी केडिया ने दीप प्रज्जवलित कर राजस्थान होटल के सभागार में किया गया। उपमेयर रागिनी कुमारी ने अपने सम्बोधन में कहा छपरा में ऐसे प्रदर्शनी की आवश्यकता थी एक जगह पर सभी तरह के कलेक्शन मौजूद हो। गौरी केडिया बुटीक कलेक्शन ने प्रदर्शनी लगा कर इस कमी को पूरा किया है। एक से बढ़कर एक कलेक्शन की प्रदर्शनी लगाई गई है जो सबको पसन्द आएँगी। गौरी केडिया ने बताया यह प्रदर्शनी अभी दो दिन के लिए लगाई गई है। मैंने काफी मेहनत करके बनारस के एक्सक्लूसिव कलेक्शन को इस प्रदर्शनी में शामिल किया है जो छपरा के लोगो को काफी पसन्द आ रहा है। समाजसेवी रोटरी क्लब सारण के संस्थापक अध्यक्ष श्याम बिहारी अग्रवाल ने बताया गौरी केडिया कलेक्शन बनारस घराने का एक नामी ब्रांड है। छपरा जैसे शहर में इस ब्रांड के कलेक्शन को काफी पसन्द किया जा रहा है। इसमें साड़ी, सुट, कुर्ती, कुर्ता पायजामा, बेडसीट आदि का काफी अच्छा कलेक्शन है। इस अवसर पर कौशल किशोर जालान, सुमित के डिया, गोविन्द अग्रवाल, शकुन्तला देवी, संगीता जालान, गंगा चौधरी, राज जालान, ज्योति अग्रवाल, श्वेता माहेश्वरी आदि शहर के गणमान्य उपस्थित हुए।

पिस्टल के बल पर बाइक लूट

एकमा। पिस्टल के बल पर बाइक लूट लेनें का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में पीड़िता ने थाना क्षेत्र के पचुवां गांव निवासी अब्दुल गफ्फार के पुत्र मंसूर आलम ने अज्ञात अपराधियों पर प्राथमिक की दर्ज कराई है। अपनी दर्ज प्राथमिकी में कहां है कि हम अपने पत्नी के साथ बाइक से सिवान जिले के चैनपुर से इलाज कराकर अपने घर वापस लौट रहे थे। इसी बीच आमडाढी गांव के समीप रेलवे ओवरब्रिज के पास पहुंचा तो इसी समय एक स्प्लेंडर पर तीन अज्ञात व्यक्ति सवार होकर मुझे ओवरटेक कर पिस्टल का भय दिखाकर मेरा अपाची मोटरसाइकिल जिसका नंबर बीआर जीरो फोर एम 1349 लूट लिया। जब हम हो हल्ला किया तो तीनों अपराधी बाइक लेकर रसूलपुर की ओर फरार हो गए। तीनों अपराधी जिंस एवं टी-शर्ट पहने हुए थे। पुलिस ने प्राथमिक दर्ज कर मामले की जांच में जुट गई है।

पीडीएस दुकानों पर शिविर लगाकर 31 जुलाई तक आयुष्मान कार्ड बनाया जायेगा

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन-आरोग्य योजना अंतर्गत पात्र लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाने के लिये 18 जुलाई से 31 जुलाई तक सभी पीडीएस दुकानों पर विशेष अभियान का आयोजन किया जा रहा है। राज्य में आयुष्मान भारत-जन आरोग्य योजना का क्रियान्वयन पात्र लाभार्थियों को प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपये तक निःशुल्क चिकित्सा प्रदान करने हेतु किया जा रहा है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (ठञअ) के लाभार्थियों को सम्पूर्ण रूप से स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने के क्रम में प्रथम लक्षित परिवारों को आच्छादित करने के उपरांत ठञअ के डेटाबेस में शेष बचे लाभार्थियों को मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में शामिल करते हुये इसका संचालन आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के एकीकृत प्लेटफॉर्म पर किया जा रहा है। ठञअ से आच्छादित शत प्रतिशत परिवारों का आयुष्मान कार्ड बनाने के उद्देश्य से इस विशेष अभियान का अयोजन किया जा रहा है। इस विशेष अभियान के तहत जिला के सभी जनवितरण प्रणाली की दुकानों पर सभी पात्र लोगों का आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। इस विशेष अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर आज जिलाधिकारी श्री अमन समीर ने विभिन्न संबंधित विभागों के पदाधिकारियों के साथ बैठक किया। सिविल सर्जन, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी आईसीडीएस एवं डीपीएम जीविका को आशा, आंगनबाडी सेविका/सहायिका एवं जीविका दीदियों के माध्यम से जमीनी स्तर पर इस अभियान का प्रचार-प्रसार सुनिश्चित कराने को कहा गया। जिला पंचायत राज पदाधिकारी को सभी मुखिया एवं पंचायत स्तरीय जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद कर इस अभियान के बारे में जानकारी देने को कहा गया ताकि जनप्रतिनिधियों के स्तर से भी पात्र लोगों को इस अभियान की जानकारी दी जा सके। सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों एवं अंचलाधिकारियों को भी स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक कर प्रचार-प्रसार का निदेश दिया गया। सभी मार्केटिंग ऑफिसर को पीडीएस डीलरों के साथ आज ही बैठक कर संपूर्ण प्रक्रिया का विधिवत एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कराने का निदेश दिया गया। सभी पीडीएस दुकानों के साथ सी.एस.सी. के वी.एल.ई.(विलेज लेवल इंट्रेप्रेनेर) की टैगिंग की गई है। वीएलई द्वारा सम्बद्ध पीडीएस दुकान पर जाकर पात्र लोगों का आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। जहाँ वीएलई उपलब्ध नहीं है वहाँ पंचायत के कार्यपलाक सहायकों की टैगिंग करने का निदेश जिला पंचायत राज पदाधिकारी को दिया गया। सभी प्रखंडों के वरीय प्रभारी पदाधिकारी इस अभियान के क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण हेतु सबंधित प्रखंड के नोडल पदाधिकारी बानाये गये हैं। लोग आयुष्मान भारत एप्प के माध्यम से स्वतः लॉगिन कर निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन कर स्वयं भी अपना आयुष्मान कार्ड बना सकते हैं। जिलाधिकारी ने अभियान के पहले दिन (गुरुवार) की उपलब्धि पर गहरी नाराजगी व्यक्त किया। डिस्ट्रिक प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर आयुष्मान भारत को प्रतिदिन का प्रगति प्रतिवेदन वीएलई वार उपलब्ध कराने का निदेश दिया। बैठक में सिविल सर्जन, जिला आपूर्त्ति पदाधिकारी, जिला पंचायत राज पदाधिकारी, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी आईसीडीएस, डीपीएम हेल्थ, डीपीएम जीविका सहित अन्य पदाधिकारी तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अंचलाधिकारी, एमओआईसी एवं अन्य पदाधिकारी जुड़े थे।

शराब उन्मूलन को ले ग्रामीण क्षेत्रों में चला जागरूकता अभियान

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम)।मझौलिया प्रखण्ड के माधोपुर, बखरिया सहित अन्य दलित बस्ति में नशा उन्मूलन, बाल शोषण रोकथाम को लेकर, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के बैनर तले, पारा विधिक स्वयंसेवक अवधेश कुमार गुप्ता के द्वारा जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए स्वयंसेवक ने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य दलित, महादलित बस्ती में, बच्चों में बढ़ रहे नशा कि लत, बच्चों के प्रति बढ़ रहे हिंसा, अपराध, बाल शोषण, बाल विवाह से बचाव के लिए बच्चों व उनके अभिभावकों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि छोटे छोटे बच्चों को इन बुराइयों के अलावा, गुड टच व बैड टच के बारे में समझाना भी हैं ताकि वह इन चीजों को समझ सकें और अपने माता - पिता या परिजन को अपने साथ हो रहे शोषण, अपराध के बारे जानकारी दे सके। उन्होंने कहा कि आजकल ज्यादातर बच्चों के ऊपर शोषण, हिंसा व अत्याचार हो रहे हैं, हमें इन बुराइयों से बचना है, कम उम्र में हो रहे बच्चों की शादी को रोकना है। बच्चों में बढ़ रहे नशा करने कि लत को दूर करने के लिए सभी को जागरूक रहने कि जरूरत है। उन्होंने कहा कि अगर घर की महिलाएं चाहे तो नशा मुक्ति व शराब बंदी को पूर्ण रूप से सफल बनाया जा सकता है। अगर घर में कोई पुरूष शराब पीकर आ रहा है या नशीला पदार्थ की खरीद विक्री कर रहा है तो, उसका जोरदार विरोध करें। तथा तत्काल इसकी सूचना अपने थानाध्यक्ष, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, चौकीदार इत्यादि को दे।

नीतीश कुमार की सुशासन व विकास की तथाकथित छवि ढह रही है : महागठबंधन

20 जुलाई को जिलाधिकारी के समक्ष होगा आक्रोश मार्च

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया मोहन सिंह।राज्य में दलित-गरीबों-महिलाओं-अल्पसंख्यकों पर दमन, चौतरफा हिंसा और अपराध के खिलाफ राज्य स्तरीय कार्यक्रम के तहत भाकपा माले जिला कार्यालय बेतिया में महागठबंधन नेताओं की बैठक हुआ, बैठक में 20 जुलाई को शहीद पार्क से आक्रोश मार्च निकल कर जिला पदाधिकारी के समक्ष होगा बैठक में भाकपा माले जिला कमिटी सदस्य सुनील कुमार राव, इंकलाबी नौजवान सभा जिला अध्यक्ष फरहान राजा, राजद युवा जिला अध्यक्ष संजय यादव, कांग्रेस जिला कार्यालय सचिव राहुल कुमार वीआईपी जिला अध्यक्ष विजय चौधरी आदि नेताओं ने मिटिंग को संबोधित किया। नेताओं ने कहा कि वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी के पिता की नृशंस हत्या स्तब्ध करने वाली है. नेताओं ने कहा कि अपराध का ग्राफ बढ़ रहा है और अपराधी बेलगाम और बेखौफ है। 67 साल का वृद्ध जो बिहार के एक बड़े नेता के पिता हैं, उनकी हत्या रात में नृशंसता पूर्वक कर दी जाती है,तो आमलोग की हालत क्या होगी। चुनाव के बाद दर्जनों हत्याएं हुई हैं और दलितवंचितों के ऊपर हमले बढ़े हैं। सुशासन के नाम पर आई सरकार जंगल राज का प्रतिनिधि बन गई है और भाजपा साथ रहते हुए आग में रोटी सेंकने का काम कर रही है।पुल टूट रहे हैं,परीक्षा का प्रश्न पत्र लीक हो रहे हैं और अपराध बढ़ रहे हैं,लगता है कि सरकार का इकबाल ही गिर गया है।

ट्रक ने बाइक सवार को रौदा, एक की मौत 1 गंभीर रुप से घायल

- मौके पर आक्रोशित लोगों ने की आगजनी एवं सड़क जाम, घंटों आवागमन बाधित

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)।शुक्रवार को नगर के छावनी के पास खड़ी ट्रक ने बाइक सवार को रौंद दिया जिससे घटना स्थल पर ही एक युवक की मौत हो गई। वही एक व्यक्ती गंभीर रुप से घायल हो गया हैं।घटना की सुचना पर पहुंची बेतिया पुलिस ने मृत व्यक्ति के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं गंभीर रुप से घायल व्यक्ति को उपचार के लिए बेतिया जीएमसीएच अस्पताल भेज दिया। घटना के सम्बन्ध में बताया जाता है कि घायल गुलफाम अंसारी जो कि पोलंबर मिस्त्री का कार्य करता है बाइक से आर्यन कुमार पोलम्बर मिस्त्री को छोड़ने छावनी जा रहा था। छावनी में रेलवे गुमटी बंद होने के कारण ओवरब्रिज के नीचे खड़ा था। उसी दरम्यान एक खड़ी ट्रक ढुल गई और अपने चपेट में ले लिया।इस दौरान ट्रक की चपेट में आने से बानूछापर हाजमा टोला वार्ड 27 निवासी रामायण साह के 19 वर्षीय पुत्र आर्यन कुमार की घटना स्थल पर ही मौत हों गई। वहीं पोलंबर मिस्त्री गुलफाम अंसारी गंभीर रुप से घायल हो गए हैं जिनका उपचार बेतिया जीएमसीएच अस्पताल में जारी हैं। वहीं आक्रोशित लोगों ने घटनास्थल पर आगजनी कर सड़क जाम किया जिससे घंटो आवागमन बाधित रहा। मौके पर कालीबाग, मनुआपुल एवं बानुछापर थाने की पुलिस मामले को शांत कराने में जुटे।

जिलाधिकारी के जनता दरबार में कई मामलों का हुआ ऑन-द-स्पॉट समाधान

जिलाधिकारी ने समस्याओं के समाधान हेतु अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम)। जिलाधिकारी कार्यालय प्रकोष्ठ में शुक्रवार को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जनता दरबार का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी, श्री दिनेश कुमार राय ने लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों को बारी-बारी से सुना। जनता दरबार में कई समस्याओं एवं शिकायतों का ऑन-द-स्पॉट समाधान कराया गया। साथ ही कई मामलों में संबंधित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को फोन कर समस्याओं का समाधान करने के लिए शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी के जनता दरबार में कुल-50 मामले आए। जिन मामलों का समाधान आज नहीं हो सका, उसे संबंधित विभाग/अधिकारियों को भेजते हुए त्वरित गति से नियमानुकूल समाधान कराने हेतु निर्देशित किया गया। शुक्रवार को जनता दरबार में जिन लोगों द्वारा अपनी समस्याओं से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया उनमें छोटेलाल प्रसाद, लखन साह, रूबी देवी, हृदया मांझी, रमेश पासवान, विपिन बिहारी प्रसाद, सुभाष महतो, शेख तैयब, मनोज प्रसाद, झुनी देवी आदि के नाम शामिल हैं। इस अवसर पर अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह, अपर समाहर्ता, विभागीय जांच कुमार रविन्द्र, अपर समाहर्ता-सह-जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी अनिल कुमार सिन्हा, अपर समाहर्त्ता, आपदा प्रबंधन रामानुज प्रसाद सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी, बेतिया सदर विनोद कुमार, जिला भू अर्जन पदाधिकारी अमरेंद्र कुमार, वरीय उप समाहर्ता विपिन कुमार यादव, जिला परिवहन पदाधिकारी ललन प्रसाद, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटना में एक युवक की हुई मौत, दूसरा घायल

प्रात: किरण, संवाददाता

दरियापुर।स्थानीय थाना क्षेत्र के शीतलपुर-परसा पथ पर दरियापुर बाजार के समीप अज्ञात वाहन ने बाइक सवार सगे भाइयों को ठोकर मार दी।जिसमें दोनों घायल हो गए।जिसमें इलाज के क्रम में छोटे भाई की पीएमसीएच में गुरुवार की देर शाम मौत हो गई।मृतक 22 वर्षीय अमरजीत कुमार मठ केवटिया के चंदेश्वर राय का पुत्र था।मृतक के पिता ने बताया कि गुरुवार की सुबह वह अपने बड़े भाई नीतीश कुमार के साथ बाइक से दरियापुर बाजार पर सामान खरीदने जा रहा था।तभी अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक में ठोकर मार दी।जिसमें नीतीश आंशिक व अमरजीत बुरी तरह घायल हो गया।लोगों ने उसे इलाज के लिए स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया।जहां इलाज के बाद चिकित्सकों ने उसे पीएमसीएच रेफर कर दिया।जहां इलाज के क्रम में ही उसकी मौत हो गई।मौत की सूचना मिलते ही उसके घर में कोहराम मच गया।सुबह में शव थाने पर पहुंचा।जहां से पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेजा।पूर्व जिला पार्षद राजनाथ राय,लक्ष्मण ब्यास सहित कई गण्यमान्य लोग मृतक के घर पहुंचे और परिजनों को सांत्वना दी।मृतक दिल्ली में एक कपड़ा मिल में काम करता था।एक माह पूर्व ही घर आया था।वह तीन भाइयों में सबसे छोटा था।लोगों को कहना है कि मृतक बहुत ही मिलनसार लड़का था।

जंगली हाथियों का वीटीआर जंगल मे हो रहा है लगातार मूवमेंट्स, वनकर्मी मॉनेटरिंग में लगे

प्रात: किरण, संवाददाता

बगहा। वीटीआर वन प्रमंडल 2 के वाल्मीकिनगर वन क्षेत्र में नेपाल स्थित चितवन राष्ट्रीय निकुंज से भटककर आए हाथियों की चहलकदमी इन दिनों बराबर बनी हुई है।बतादें की शुक्रवार को गनौली वन क्षेत्र के टी 41 व टी 3 के जंगल में हाथियों के पगमार्क वन कर्मियों को मिलने की सुचना हैं।बताते चलें कि गत एक सप्ताह पहले टाइगर रिजर्व में पहुंचे हाथियों का मूवमेंट्स टाइगर रिजर्व में देखा जा रहा है । वनकर्मियो की टीम हाथियों के पगमार्क के सहारे मॉनिटरिंग में लगी हुई हैं। हालांकि अब तक जंगली हाथियों के द्वारा किसी भी प्रकार के नुकसान पहुंचाने की सूचना नहीं है। वही टाइगर रिजर्व के पालतू हाथियों को सुरक्षा हेतु कौशल विकास केंद्र परिसर में रखा गया है। इस बाबत पूछे जाने पर वन संरक्षक सह क्षेत्र निदेशक डॉक्टर नेसामणि ने दूरभाष पर बताया कि बारिश के कारण हाथियों के पगमार्क जंगल में स्पष्ट नहीं हो पा रहे हैं। जिससे उनकी क्लियर लोकेशन नहीं मिल पा रही है। सुचना के मुताबिक ऐसा संभावना है कि हाथियों की गतिविधि सोनहा जंगल की तरफ हो सकती है। वनकर्मी लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। टाइगर रिजर्व की भरपूर हरियाली चितवन के जंगली हाथियों को खूब लुभाती है। जिस कारण नियमित अंतराल पर चितवन जंगली हाथी सरहदों को पार कर टाइगर रिजर्व में प्रवेश कर जाते हैं और दो-चार दिनों तक लगातार विचरण कर नेपाल की तरफ वापस चले जाते हैं।

इंडो नेपाल सीमा गंडक बराज एसएसबी कैम्प में सीमा मित्रों के साथ बैठक संपन्न

प्रात: किरण, संवाददाता

बगहा। एसएसबी 21 वीं बटालियन के इंडो नेपाल सीमा पर स्थित एसएसबी बी समवाय के साथ सीमा मित्रो की शुक्रवार को बैठक हुई। जिसमें सावन के महीना में भीड़ भाड़ के कारण सुरक्षा में सहयोग,बाढ़ से बचाव, सर्प दंश से बचाने के उपाय, नागरिक कल्याण योजना में युवा के लिए रोजगार के अवसर नागरिक के लिए व मवेशी के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई और साथ ही सीमा मित्रों से सहयोग की अपील की गई। बतादें की इंडो नेपाल सीमा पर तैनात एसएसबी के जवानों के द्वारा समाज से जुड़े सरोकारों के लिए कई कार्यक्रम चलाए जाते रहे है। इस कार्यक्रम में एसएसबी बी कम्पनी के इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार मंडल,एएसआई गिरवीर सिंह,मुखिया पन्ना लाल साह, मुख्य प्रतिनिधि रमेश महतो दरुआबारी समेत सभी वार्ड सदस्य के अलावा समाजसेवी विजय कुमार झा एवम अन्य गण्यमान्य लोग शामिल हुए।

डाक चौपाल का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

जलालपुरे जलालपुर बाजार स्थित बाल विकास निकेतन के प्रांगण में सारण डाक प्रमंडल द्वारा डाक चौपाल का आयोजन वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता जे पी सेनानी ललनदेव तिवारी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सहायक डाक अधीक्षक निरज कुमार ने डाक विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि डाक विभाग में, आवर्ती खाता, बचत खाता, पेंशन योजना खाता, किसान विकास पत्र, राष्ट्रीय बचत पत्र , सुकन्या समृद्धि योजना खाता, पी एल आई, ग्रामीण डाक जीवन बीमा, आई पी पी बी बैंक खाता आसानी से खोला जाता है तथा आयुष्मान एवं आधार कार्ड भी प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा बनाया जाता है। कार्यक्रम का संचालन भारतीय ग्रामीण डाक कर्मचारी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश्वर कुंवर ने किया। इस अवसर पर रमेश तिवारी, कन्हैया सिंह तुफानी, धर्मेन्द्र यादव एवं उतम बैठा मुखिया, अनिल कुशवाहा सरपंच, अवधेश सिंह, रामेश्वर सिंह काका, शैलेंद्र सिंह, राहुल मेहता, तरुण कुमार, नगनारायण सिंह, अमितांशु भूषण मिश्र, सूरज पासवान, बिनोद साह सनत तिवारी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन बाल विकास निकेतन के निदेशक नागेन्द्र सिंह अधिवक्ता ने किया।

डाक चौपाल लगाकर डाक कर्मियों द्वारा योजनाओ की दी गई जानकारी

- चौपाल में उमड़ी हुई थी लोगो की भारी भीड़

प्रात: किरण, संवाददाता

अमनौर प्रखंड के अमनौर पर्यटक स्थल बड़ा पोखरा के सेमिनार सभागार में शुक्रवार को डाक चौपाल का आयोजन किया गया।इस मौके पर स्थानीय जनप्रतिनिधि प्रबुद्ध गण्यमान लोग शिक्षाविद समेत सैकड़ो आम ग्रामीण जनता शामिल हुए। कार्यक्रम का प्रारम्भ बीपीआरओ जितेंद्र कुमार के कर कमलो द्वारा किया गया। पूर्वी अनुमंडल मढ़ौरा डाक अधिकारी दीपक साह ने डाक विभाग के योजनाओ के बारे में बिंदुवार जानकारी दी ।डाक चौपाल के द्वारा सरकारी सेवाएं आपके द्वारा कार्यक्रम के तहत पेमेंट बैंक सेवाएं, वित्तीय सेवाएं, ई-कॉमर्स और निर्वात सेवाए, नागरिक केंद्रित सेवाएं आईपीपीबी बचत खाता महिला सम्मान बचत खाता किसान सम्मान निधि के बारे में बिस्तार से बताया गया। सुकन्या समृद्धि खाता जो खाता बालिका के जन्म लेने से उसकी आयु 0- 10 वर्ष तक की आयु तक खोला जा सकता है.1 वर्ष में न्यूनतम रुपए 250 और अधिकतम रुपए 1.5 लाख जमा किया जा सकता है. ब्याज दर 8.2% एवं 18 वर्ष उम्र या शादी के समय परिपक्व हो जाएगा. ग्रामीण डाक जीवन बीमा के बारे में जानकारी प्रदान की गई। जिसमे प्रमुख योजनाएं आजीवन बीमा, बंदोबस्ती बीमा, प्रत्याशित बंदोबस्ती बीमा, परिवर्तनीय आजीवन बीमा, युगल सुरक्षा चिल्ड्रन पॉलिसी के बारे में ग्रामीणों को जानकारी दी गई। उम्र 5 वर्ष तक के बच्चे का आधार कार्ड बनाने के लिए मुफ्त कैम्प लगाया गया था। उक्त मौके पर अमनौर हरनारायण मुखिया प्रतिनिधि राजीव सिंह मुखिया प्रतिनिधि दिलीप साह , पूर्व जिला परिषद विक्रमा मांझी सच्चिदानंद शर्मा संजय कुमार सिंह,स्वामी शरण तिवारी, मनीष सिंह,सुबोध सिंह, आलोक सिंह, भारतेन्दु विमल, विशाल कुमार समेत सैकड़ो लोग मौजूद थे।

जिला पदाधिकारी के द्वारा लोक शिकायत के 06 मामलों की सुनवाई करते हुए किया समाधान

सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें: जिला पदाधिकारी

- बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम- 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी, सारण अमन समीर के द्वारा शुक्रवार को कार्यालय कक्ष से बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में शिकायतों की सुनवाई की गई और शिकायत का निवारण किया गया।

जिला पदाधिकारी के द्वारा आज लोक शिकायत के कुल 06 मामलों की सुनवाई की गई जिसमें 02 मामलों पर अंतिम रूप से आदेश पारित किया गया तथा शेष 04 मामलों में पूर्ण प्रतिवेदन के साथ अगली तिथि पर लोक प्राधिकार को उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी अमन समीर ने कहा कि लोक शिकायतों का ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण निवारण अत्यावश्यक है। लोक प्राधिकारों को तत्परता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने कहा कि बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें।

कटाव को लेकर ग्रामीणों ने किया सड़क जाम और प्रदर्शन, पुलिस प्रशासन ने समझाबुझा कर जाम खुलवाया

प्रात: किरण, संवाददाता

बगहा। बगहा स्थित गंडक नदी से कटाव तेज हो गया है ।जलस्तर में गिरावट के कारण लगातार हो रहे कटाव के बाद आक्रोशित लोग सड़क पर उतर आये हैं ।एनएच 727 गोरखपुर बेतिया मुख्य सड़क पर मंगलपुर के पास कटावरोधी कार्य की धीमी गति और बचाव कार्यों कि गुणवत्ता से नाराज ग्रामीण आक्रोशित होकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं ।कटाव की सूचना मिलते ही वाल्मीकिनगर के जेडीयू विधायक रिंकू सिंह मौके पर पहुंचे फिर क्या लोगों का आक्रोश देखकर माननीय ने जल संसाधन विभाग के अभियंताओं को जमकर फटकार लगाई । इसके बाद विधायक नें कटाव से बचाव कार्य में तेजी लाने के साथ साथ मजबूती का निर्देश दिया। बतादें कि बगहा में गंडक नदी कटाव कर लगातार आगे बढ़ रही है जिससे ग्रामीणों में दहशत का माहौल है । फिलहाल मंगलपुर के साथ साथ धनहा के रंगळलही में दबाव बना हुआ है जिससे लोगों के घर बार कटने का खतरा तेज हो गया है। यहीं वजह है कि लोग हल्ला बोल बांस बल्ली लगाकर मुख्य सड़क जाम कर विरोध प्रदर्शन करने लगे हैं तों माननीय का गुस्सा भी अभियंता पर भड़क उठा और खरी खोटी सुना डाला।

संक्षिप्त खबरें

ट्रक से कुचलकर बाइक सवार की मौत

आरा। जिले के गीधा थाना क्षेत्र के कायमनगर अंडरपास के समीप सीमेंट लदी ट्रक ने एक बाइक सवार को बुरी तरह कुचल दिया जिससे उसकी घटनास्थल पर दर्दनाक मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार मृतक उदवंतनगर थाना क्षेत्र के सरथुआ निवासी रामईश्वर सिंह का 40 वर्षीय पुत्र संतोष सिंह यादव बताया जाता है। मृतक अपने घर सरथुआ से गीधा इंडस्ट्रियल एरिया के एक गैस कम्पनी में काम करने आ रहा था। इसी दौरान तेज गति से आ रही ट्रक ने बाइक सवार युवक को जोरदार टक्कर मारते हुए उसे कुचल दिया जिससे उसकी मौत हो गई। घटना के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया है। घटना के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए आरा भेज दिया।

इसुआपुर में पुल पुलियों के निर्माण पर दिया गया बल

इसुआपुर। प्रखंड विकास कार्यालय इसुआपुर के सभागार में शुक्रवार को प्रखंड प्रमुख मितेंद्र प्रसाद यादव की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। बैठक में प्रभारी बीडीओ सह राजस्व पदाधिकारी पूजा रॉय ने उपस्थित जनप्रतिनिधियों को बताया कि ग्रामीण कार्य विभाग एवं पथ प्रमंडल सारण द्वारा निर्मित सड़क में अतिरिक्त पुल पुलियों के निर्माण के लिए प्रस्ताव की मांग की गई है। जिसके लिए जनप्रतिनिधियों से दो दिनों के अंदर इस संबंध में अपना प्रस्ताव उपलब्ध कराने को कहा गया। वहीं जनप्रतिनिधियों से खतियानी रैयतों को संधारित जमाबंदी में आधार सिडिंग कार्य तथा आयुष्मान कार्ड को बनवाने में भी उनके द्वारा सहयोग किए जाने की अपील गई। वहीं प्रभारी पंचायती राज पदाधिकारी आकांक्षा के द्वारा उपस्थित जनप्रतिनिधियों से अपने-अपने पोषक क्षेत्रों में सोलर स्ट्रीट लाइट का कार्य सुनिश्चित किए जाने की बात कही गई। बैठक में प्रधान लिपिक केसरी सिंह, उप प्रमुख प्रतिनिधि डब्लू ओझा, मुखिया अजय राय, धनंजय पांडेय, विजय सिंह, पन्नालाल राय, अजय साह, सूरज लाल श्रीवास्तव, सुरेंद्र राम, हरे राम राम, मुकेश चौरसिया व अन्य थे।

सेमिनार में कुलपति ने दिया व्याख्यान

छपरा कार्यालय। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, विलासपुर में आयोजित द्विसाप्ताहिक क्षमता संवर्धन कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में सारगर्भित व्याख्यान दिया। युवा समाज विज्ञान प्राध्यापकों के क्षमता संवर्धन हेतु आयोजित इस सेमिनार का थीम ह्ल21वीं सदी की जरूरतों के मुताबिक समाज विज्ञान की शोध कार्यप्रणालीह्व थी। इस थीम पर माननीय कुलपति महोदय ने अपने व्याख्यान में कई विषयगत संदर्भो की चर्चा करते हुए 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप शोध पाठ्यक्रम तैयार करने पर बल दिया। माननीय कुलपति महोदय के व्याख्यान को वहां उपस्थित शैक्षणिक जगत के लोगों द्वारा काफी सराहा गया। कार्यशाला के अध्यक्ष गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, विलासपुर के माननीय कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल हैं जबकि मुख्य अतिथि आईजीएनटीयू विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रकाशमणि त्रिपाठी और विशिष्ट अतिथि प्रो. ए. एस. रणदिवे, कुलसचिव, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय थे।

संकायाध्यक्ष कार्यालय का कुलपति ने किया उदघाटन

छपरा कार्यालय। शुक्रवार को जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति प्रोफेसर परमेंद्र कुमार बाजपेई ने संकायाध्यक्ष ,समाज विज्ञान के ऑफिस का उद्धाटन किया। मालूम हो कि स्थापना काल से जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा में संकाय अध्यक्ष का कोई भी ऑफिस नहीं था। कुलपति ने पहली बार सभी संकाय को ऑफिस अलॉट कर रहे हैं जिसकी पहली उद्घाटन सोशल साइंस संकाय का किया गया है। इस अवसर पर सोशल साइंस संकाय के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ अनिल कुमार सिंह द्वारा लिखित पुस्तक स्वामी विवेकानंद राष्ट्रवादी चिंतन का का विमोचन किया गया। यह पुस्तक एडिटोरियल इंडिया दिल्ली के द्वारा प्रकाशित की गई है। प्रोफेसर अनिल कुमार सिंह द्वारा लिखित 14वां पुस्तक है। जिसका विमोचन कुलपति प्रोफेसर परमेंद्र कुमार वाजपेई ने किया है। इस अवसर पर चारों संकाय के डिन सभी विभाग के विभागअध्यक्ष एवं शिक्षक शोधार्थी उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रोफेसर सैयद राजा प्रोफेसर सुधीर कुमार सिंह,प्रोफेसर कुमार मोती, प्रोफेसर संजय कुमार, डॉ नीरज कुमार, डॉ रत्नेश्वर नाथ तिवारी आदि थे. कुलपति प्रोफेसर प्रमेन्द्र कुमार बाजपेई ने पुस्तक पर विस्तार से अपनी बात रखी।

डॉ. रजनीश कांत को लंदन में मिला वर्ल्ड बुक ऑफ रेकॉर्ड्स का सम्मान

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा जिले के काइरोप्रैक्टर डॉ। रजनीश कांत ने सात समुंदर पार वर्ल्ड बुक ऑफ रेकॉर्ड्स सम्मान प्राप्त कर बिहार का मान बढ़ाया। उन्हें यह सम्मान 18 जुलाई को ब्रिटिश पार्लियामेंट लंदन में आयोजित समारोह के दौरान मिला। इस मौके पर उनके साथ दुनिया की चिकित्सा क्षेत्र की कई बड़ी हस्तियां भी मौजूद रहीं। इससे पूर्व उन्हें 29 जून को दुबई के पाम अटलांटिस होटल में एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से भी सम्मानित किया जा चुका है। डॉ। रजनीश कांत को काइरोप्रैक्टर के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान दिया गया।

अवार्ड पा कर डॉ. रजनीश कांत ने कहा कि यह फिजियोथेरेपी, ऑस्टियोपैथी और

काइरोप्रैक्टर उपचार का एक ऐसा रूप है, जहां हम हर तरफ से इलाज करवाकर निराश हो चुके लोगों का इलाज करते हैं और उन्हें ठीक करके घर भेजते हैं, जिसमें इसमें न तो किसी दवा का प्रयोग किया जाता है और न ही किसी विशेष प्रकार की सर्जरी की जाती है। अब तक इस पद्धति से कमर दर्द, पैर दर्द, नस दर्द, गैस्ट्रिक, सिर दर्द, कमर दर्द, बदहजमी जैसी कई प्रकार की बड़ी बीमारियों का सफलतापूर्वक इलाज किया जा चुका है। बिहार के भोजपुर जिले के आरा शहर के बेगमपुरा मोहल्ले जैसी छोटी जगह से आने वाले डॉक्टर रजनीश कांत बहुत ही कम उम्र में सफलता के शिखर पर पहुंच गए हैं।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई ऐसी चिकित्सा प्रणाली भी हो जिसमें दवा की एक भी खुराक के बिना कोई बीमारी जड़ से ठीक हो जाए? यह कर दिखाया आरा भोजपुर के बेगमपुरा मोहल्ले के निवासी फिजियोथेरेपिस्ट, ऑस्टियोपैथ और कायरोप्रैक्टर डॉ। रजनीश कांत ने। उन्होंने ऐसी चिकित्सा पद्धति से देश-विदेश में लोगों का इलाज कर चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति का बिगुल फूंक दिया है। उनकी वैद्य प्रणाली से अब तक देश-विदेश के हजारों लोग लाभान्वित हो चुके हैं। वह इस चिकित्सा प्रणाली से बिहार में हर महीने की पहली तारीख को 100 मरीजों का मुफ्त इलाज करते हैं।

आज के आधुनिक युग में जहां हर जगह पैसे की भूख है, वहीं समाज के गरीब तबके को मुफ्त चिकित्सा प्रदान करने के कारण डॉ। रजनीश कांत को हर जगह सम्मानित किया जा रहा है। वह सिर्फ महीने की पहली तारीख को ही नहीं बल्कि उनके क्लीनिक पर आने वाले गरीबों से भी उनकी हालत देखकर इलाज के लिए पैसे नहीं लेते हैं। बहुत कम समय में सबसे ज्यादा मरीजों का इलाज करने का रिकॉर्ड भी उनके नाम है। इन सभी उपलब्धियों के कारण विश्व प्रसिद्ध संस्था एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और वर्ल्ड बुक ऑफ रेकॉर्ड्स से सम्मानित किया गया।

आरा सदर अस्पताल में वृद्ध से निबंधन के नाम पर पैसे मांगने का आरोप

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जिले के आरा सदर अस्पताल में निबंधन शुल्क के नाम पर अधिक पैसे की वसूली का मामला प्रकाश में आया है। सदर अस्पताल आरा में ओपीडी निबंधन काउंटर पर आपरेटर द्वारा वृद्ध मरीज से पांच रुपये लिए जाने को लेकर भुक्तभोगी ने सिविल सर्जन, डीएम, स्वास्थ्य मंत्री और मुख्यमंत्री को आवेदन दिया है। जबकि सीनियर सिटीजन मुफ्त में निबंधन होना है ऐसे में वृद्ध से 5 रुपये पैसे जाने से गुस्साए वृद्ध ने शिकायत दर्ज कराई है। कोईलवर के गीधा थाना क्षेत्र के कायमनगर निवासी धर्मात्मा शर्मा ने सिविल सर्जन को भेजे गए आवेदन में कहा है कि सदर अस्पताल आरा में निबंधन काउंटर पर नियम का उलंघन कर मरीजो से अवैध राशि ली जा रही है। वृद्ध धर्मात्मा शर्मा ने बताया कि 16 जुलाई को इलाज के लिए सदर अस्पताल आरा गया था। जहां रोग का हाल बताने के बाद निबंधन के लिए पांच रुपये आपरेटर को दिया। जिन्हें तीन रुपये लौटाने को कहा तो खुल्ला नहीं होने की बात कह पैसा नहीं लौटाये, जबकि काउंटर से टेबल पर पांच रुपये का खुल्ला दिख रहा था। कर्मी को कई बार पैसे देने का आग्रह के बाद भी तीन रुपये वापस नहीं किया गया। जब ओपीडी का रसीद मिला तो उस पर सीनियर सिटीजन का शुल्क शून्य अंकित था। भुक्तभोगी धर्मात्मा शर्मा ने वरीय अधिकारियों से इसकी जांच की मांग कर उचित मुआवजा दिलाने की मांग के साथ दोषी कर्मी पर करवाई की बात कह रहे हैं।

गंगा से कटाव की हो रोकथाम : राजेश्वर पासवान

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुर:लोजपा रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान एवम प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी के निर्देश पर पूरे बिहार के पार्टी जिला प्रभारियों एवम जिला अध्यक्षों को अपने जिले में बाढ़ और सुखाड़ की समीक्षा करने, उसकी रोक थाम हेतु जिला प्रशासन को लिखित आवेदन देने हेतु निर्देशित किया गया है,उसी क्रम में भोजपुर लोजपा रामविलास जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान ,अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव संतोष पासवान ,सोहरा पंचायत के मुखिया सह जिला अध्यक्ष पंचायती राज प्रकोष्ठ लोजपा रामविलास भोजपुर मोहन शर्मा,वीरकुवर सिंह विश्व विद्यालय के पार्टी छात्र अध्यक्ष विकाश सिंह,जिला महासचिव प्रमोद पासवान,जिला मीडिया प्रभारी प्रकाश कुमार का शिष्टमंडल संभावित बाढ़ ग्रस्त इलाका दामोदरपुर जवाइनिया , सलेमपुर, पिपरपाती ,बलुवा , हेतमपुर ,सोहरा , महुली,महुली घाट, सिन्हा,नेकनाम टोला आदि गांवों में जाकर संभावित बाढ़ ग्रस्त इलाका गंगा नदी से कटाव से प्रभावित होने वाले गांवो का दौरा किया गया । दौरा के दरम्यान राजेश्वर

पासवान जिला अध्यक्ष ने कहा कि गंगा के जल स्तर में बढ़ोतरी हो रही है ,गंगा के किनारे बसने वाले गांव गंगा नदी की कटाव से परेशान है। अगर जिला प्रशासन जियो बैग के द्वारा तत्काल रोक नही लगाती है तो बहुत सारे गांव उनके गोद में चले जायेंगे,सोहरा में पवन सिंह के खेत से मझौली हॉस्पिटल तक और हेतमपुर मठिया से लेकर सुरेश यादव का डेरा महुली तक,महुली घाट के पास एवम सिन्हा घाट के पास जियो बैग देना अति आवश्यक है, जिला अध्यक्ष से दामोदरपुर निवासी जय किशुन पासवान और मुन्ना पासवान ने कहा कि जवानियां गांव के पास कटाव हो रहा है वहा जियो बैग के माध्यम से ठोकर देना अति आवश्यक है अन्यथा पूरा गांव काल के गाल में समा जाएगा , विगत वर्ष बाढ़ से प्रभावित क्षति ग्रस्त बांध की मरम्मत करना भी अति आवश्यक है। मुखिया मोहन शर्मा का कहना है कि जहा जहा जिला प्रशासन द्वारा जियो बैग दिया गया है वहा वहा कटाव रुक गया है लेकिन जहा जहा जियो बैग नही दिया गया है वहा कटाव हुआ है ।सोहरा बांध का भी कटाव हो गया है जिसको ठीक करना बहुत जरूरी है नही तो दर्जनों गांव बाढ से प्रभावित हो सकते है ।ग्रामीण रामाकांत पांडे कहते है कि हेतमपुर गांव 75 वर्षो से तबाह है पहले हेतमपुर गांव गंगा उस पार था लेकिन गंगा की तबाही से हम लोग इस पर आए लेकिन जिला प्रशासन इस पर ध्यान नहीं देंगी तो मेरा गांव काल के गाल में समा जाएगा। अन्य ग्रामीणों ने श्री पासवान से ससमय पर जियो बैग एवम टूटे बांध की मरम्मती करवाने हेतु जिला प्रशासन से मिलने को कहा । राजेश्वर पासवान ने कहा कि शिष्टमंडल जिला पदाधिकारी से मिलकर इस समस्या का निदान किया जाएगा और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चिराग पासवान एवम प्रदेश अध्यक्ष श्री राजू तिवारी जी को भी पत्र के माध्यम से अवगत कराया जाएगा ।शिष्टमंडल के अलावे अन्य ग्रामीणों में सोनू शर्मा, रामाकांत पांडे, जागा सिंह,अखिलेश सिंह,मनोज यादव,शिवकुमार पासवान,मुखदेव पासवान,हरदेव पासवान,संजय शर्मा,विकाश सिंह आदि दर्जनों लोग शामिल थे।

मातृभूमि सेवा संघ क्लब द्वारा 551 वृक्ष लगाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

बड़हरा प्रखंड के नथमलपुर पंचायत के ज्ञानपुर गांव मातृभूमि सेवा संघ क्लब द्वारा 551 वृक्ष लगाया गया कुछ फलदार कुछ छायादार आम अमरूद आंवला गागल नींबू जामुन श्रीफल बर पीपल महुबानी सिसो नीम...

क्लब सदस्य के द्वारा संकल्प पूरा किया गया जिसमे (क्लब अध्यक्ष छोटन सिंह , ने बताया कि वृक्ष लगाने से वातावरण शुद्ध होता है अशुद्ध हवा मिलती है हर लोगों को अपने-अपने घर के पास सिक्स लगावे पौधारोपण करें और मैं सभी अपने गांव के लोगों से कहना चाहता हूं कि अपने-अपने वृक्ष लगाने का कार्य करें वृक्ष लगाने

से स्वस्थ रहता है शरीर भी अच्छा रहती है इसलिए हम लोग हर गांव में हर शहर में वृक्ष लगाने का कार्य आज हम लोग 551 पौधारोपण किया लालजी पांडे, अजीत सिंह , सूरज सिंह, झगरु,लकी,सूगा, अभय विकी,कृष्णा,गोलू,आदर्श, करिया, मनीष, राहुल, अक्लेश,करीमन, विवेक, रफ्तार. जैसे में स्कूल, मंदिर, सड़क के किनारे और सामाजिक स्तर पर भी लगाया गया है।

महिला वार्ड पार्षद के साथ आरा नगर आयुक्त ने किया अभद्र व्यवहार , नगर आयुक्त के खिलाफ वार्ड पार्षदों ने किया हंगामा

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। नगर निगम में महिला वार्ड पार्षद वार्ड नंबर 22 रेखा जैन के साथ नगर आयुक्त ने अभद्र व्यवहार करते हुए चेंबर से बाहर जाने के लिए कहने लगे। जिस पर वार्ड पार्षदों के सदस्यों ने नगर आयुक्त के चेंबर के बाहर हो हंगामा होने लगा, जिसमें नगर आयुक्त निरोज कुमार भगत के खिलाफ मोर्चा खोल डाला। नगर आयुक्त के द्वारा किसी भी तरह का विकास कार्य नही होने को लेकर वार्ड पार्षदो ने हंगामा शुरू कर दिया। पार्षदो के द्वारा बताया गया कि नगर आयुक्त को जिस कार्य मे अपना फायदा होता है, वही कार्य कराते है। बोर्ड में कई योजना का पास होने के बाद भी वह कार्य नही कराते है। ई रिक्शा नगर निगम में मंगाने के बाद भी नगर आयुक्त के मन के मुताबिक डील नही होने के कारण वापस कर दिया गया।पूर्व में नगर आयुक्त के द्वारा सीसीटीवी कैमरा में बड़ा घोटाला किया गया।

जिसको लेकर महापौर के द्वारा जांच के लिए मुख्यमंत्री, प्रधान सचिव से लेकर विजलेंस तक शिकायत करने के बाउजूद अभी तक कोई कार्यवाई नही किया गया। नगर आयुक्त ने कैमरा घोटाले में करीब 1 करोड़ 60 लाख रुपए का घोटाला करने की बात सामने आ रही है। आरा नगर निगम में योजना का कार्य व अन्य कार्य नही कराया जा रहा है। जिसमे कई संवेदक के द्वारा धरना पूर्व में भी दिया गया था। महापौर इंदु देवी ने कहा कि आरा नगर निगम में भ्रष्टाचार नहीं होने दिया जाएगा। नगर आयुक्त के खिलाफ कई शिकायत मिल रही थी। जिसमें आज नगर आयुक्त के उनके चेंबर में सभी वार्ड पार्षदों के साथ वार्ता की गई।

आरा नगर निगम के वार्ड नंबर 41 के गायत्री देवी ने कहा कि सीसीटीवी कैमरा आरा शहर में लगाया गया है, जो बहुत ही घटिया क्वालिटी का है। उसका भुगतान लगभग लगभग चार करोड़ का है। एक कमरे की कीमत लगभग 1 लाख 76 हजार के करीब है नगर आयुक्त के द्वारा कितनी भारी संख्या में इसकी लूट की गई है। वही सुपर शक्कर मशीन जो आउट फॉल नाला उसकी सफाई करने के लिए बनाई गई थी, लेकिन दुर्भाग्य है कि 1 दिन में नहीं चला और उस मशीन को वापस करने के लिए पूर्व के नगर आयुक्त के द्वारा कहा गया है । तत्कालीन नगर आयुक्त के द्वारा उसका भुगतान भी किया गया है मोटा रकम लेकर यह बहुत ही निंदनीय है। नगर निगम को नगर आयुक्त के द्वारा लूटते नहीं देंगे।

वार्ड नंबर 40 के वार्ड पार्षद राजीव कुमार ने कहा कि हमने कहा कि हमारे वार्ड में काम नहीं हो रहा है तो आखिर किस कारण से नहीं हो रहा है। जब एस्टीमेट बन गया तो यह बोले थे कि चुनाव आचार संहिता के बाद 10 दिनों के बाद आप लोगों का टेंडर जाएगा। और काम होगा और इन्होंने अचानक कह रहे हैं कि टेंडर अब नहीं होगा। इस पर हम लोग बिरोध करते हैं और नहीं काम होगा तो एक बड़ा आंदोलन हम लोग करने का काम करेंगे। वार्ड नबर 33 के प्रतिनिधि मुन्ना महतो ने कहा कि हमारे 22 नंबर के वार्ड पार्षद रेखा जैन उनके चेंबर में गए और उनके साथ अभद्र व्यवहार करके चैंबर से बाहर निकलवा दिया गया। पूरे पार्षद जितने भी पार्षद से आक्रोशित हो गए और उनके भ्रष्टाचार के खिलाफ लूटने नही दिया जाएगा। आज तक 2 महीना हो गया लगभग आचार संहिता खत्म हुए अभी तक एक भी योजना पास नहीं किया गया है। टेंडर नही करके विभागीय कार्य के लिए उनके पास रुपए है। टेंडर भेजने के लिए पैसा नहीं दे रहे है।

आंगनबाड़ी केंद्र पर अन्न प्रासन्न दिवस के उपलक्ष में 6 माह के बच्ची को किया गया मुंह जूठी कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुर। समेकित बाल विकास परियोजना आरा ग्रामीण के तहत आंगनबाड़ी रामापुर संदिया पूर्वी कोड 92 पर अन्न प्रासन्न दिवस के उपलक्ष में 6 माह के बच्ची को मुंह जूठी किया गया ।कार्यक्रम की शुरूआत उपस्थित महिलाओं ने ढोल झाल बजाकर सोहर से शुरूआत की इसके बाद सुनीता तिवारी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी आरा ग्रामीण,रंभा कुमारी महिला प्रयवेक्षिका,मंजू देवी सेविका ने सयुक्त रूप से उपस्थित महिलाओं के 6 माह के बच्ची शिवानी कुमारी को खीर खिला कर मुंह जूठी किया। सीडीपीओ सुनीता तिवारी ने कहा कि 6 माह के बच्चे को मा की दूध के अलावे ऊपरी आहार बहुत ही जरूरी है ।बच्चे को दूध के आलावे नरम,मुलायम,मोटे अन्नाज,खीर मूंग का दाल,खिचड़ी ,अंडा के अंदर वाला पीला भाग खिलाने की आदत डालना चाहिए ताकि बच्चे को खाने की आदत पड़े और वह बच्चा मजबूत हो सके

।उपस्थित गर्वभति - धात्री महिलाओं से उन्होंने मोटे अनाज के साथ साथ हरी सब्जी ,सुपाच्य खाद्य पदार्थ लेने की सलाह दी। आज की महिला अपने बच्चो को स्तन का दूध नहीं पिलाना चाहती है वे ऊपरी दूध ही पिलाती है जिसके कारण बच्चो पर दुष्प्रभाव पड़ता है। मां का दूध ही बच्चो का सर्वोत्तम आहार है। समय समय पर गर्भवती महिला को जांच कराते रहना चाहिए टिका लेते रहना है,बच्चे को भी प्रत्येक केंद्र पर पड़ने वाले टिका लेना चाहिए। केंद्र पर मिलने वाले बच्चे को भोजन एवम घर ले जाने वाले राशन के विषय में पूछा गया तो उपस्थित लाभार्थी महिलाओं ने बताया कि विभाग द्वारा जब जब आंगनबाड़ी केंद्र को राशि मुहैया कराई जाती है राशन वितरण किया जाता है तथा बच्चो को नियमित खाना भी खिलाया जाता है। सेविका मंजू देवी और सहायिका पूनम देवी का कार्य हमेशा संतोष प्रद रहता है इन दोनो से हम सभी ग्रामीण महिलाओं का कोई शिकायत नही है।

कार्यक्रम में पोषक क्षेत्र की सनामुखी देवी,गीता देवी,सुनैना देवी,सविता देवी,अति सुंदर देवी आदि दर्जनों महिला उपस्थित थी।

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति को एक पेड़ लगाना चाहिए : बीडीओ

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुर। जिला गंगा समिति भोजपुर के द्वारा गंगा ग्राम में चलाए जा रहे विशेष अभियान एक पौधा मां के नाम के तहत बड़हरा प्रखंड के सोहरा पंचायत के सोहरा गंगा ग्राम में 500 छायादार और फलदार पौधे का वितरण किया गया। वितरण किए गए पौधे में आम अमरूद, शीशम ,सागवान, महगनी ,अर्जुन आंवला ,नींबू,और, ग्रीन सिमर के पौधे उपलब्ध थे ।

इस कार्यक्रम के मौके पर मोहित भारद्वाज प्रखंड विकास पदाधिकारी बड़हरा अमित कुमार सिंह जिला परियोजना अधिकारी भोजपुर उपस्थित रहे ।मोहित भारद्वाज ने कहा कि पौधे

लगाना एक छोटा सा प्रयास हो सकता है, लेकिन इसके परिणाम विशाल होते हैं। आज वर्तमान समय में हर व्यक्ति को एक पौधा तो जरूर लगाना ही चाहिए साथ ही साथ पौधे लगाने के उसकी रक्षा करना भी जरूरी है हर पौधा हमारे जीवन में संतुलन और स्थिरता लाता है। हमें अपने बच्चों को भी पौधारोपण के महत्व के बारे में सिखाना चाहिए ताकि वे भी इस प्रयास में शामिल हों और अपनी धरती को हरा भरा बनाए बनाएं।

जिला परियोजना पदाधिकारी अमित कुमार सिंह ने कहा कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने और धरती के श्रृंगार के लिए पौधा रोपण करना बहुत आवश्यक है। धरती पर जितने ज्यादा पेड़-पौधे होंगे। वातावरण उतना ही शुद्ध रहेगा और अच्छी बरसात होगी। हर व्यक्ति को एक-एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उनके संरक्षण की जिम्मेदारी लेना चाहिए। आज के आयोजन को सफल बनाने में स्वच्छता पर्यवेक्षक अजीत कुमार ,मिल्खा सिंह युवा क्लब के अध्यक्ष रवि रंजन कुमार, सचिव लव कुमार , श्री निवाश ,चंदन कुमार ,दीपक चौधरी ,रमेश ठाकुर मां गंगा युवा क्लब के अध्यक्ष चंदन कुमार सिंह सचिव मनीष कुमार सिंह इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

कलयुगी बेटों ने अपनी बुजुर्ग मां को किया घर से बेदखल

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। ये कलयुग है साहब, यहां कुछ भी संभव है। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के बंसाडिह की रहने वाली 80 वषीर्या राधा देवी अब असहाय हो चुकी है। उनकी आंखे साथ छोड़ चुकी है, पैदल चलने के लिए भी सहारे की जरूरत पड़ती है। इस उम्र में ऐसी बुजुर्ग महिला को कलयुगी पुत्रों ने मरने के लिए छोड़ दिया। जब रेल की सवारी करके राधा देवी रक्सौल पहुंची, तो यहां उन्हें माहेर ममता निवास में सहारा मिला। यह कहानी है राधा देवी की, जिनको गुरूवार के दिन रक्सौल स्टेशन से रेस्क्यू किया गया है। राधा देवी को अकेले देखकर राजकीय रेल

पुलिस के द्वारा इसकी सूचना माहेर संस्था को दी गयी और संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा स्टेशन से उन्हें रेसक्यू किया गया। इसकी जानकारी देते हुए माहेर ममता निवास के स्थानीय प्रबंधक विरेन्द्र कुमार व स्वच्छ रक्सौल संगठन के अध्यक्ष रंजीत सिंह ने संयुक्त रूप से बताया कि राधा देवी के पति नहीं है। तीन बेटों में एक की मौत हो गयी है, बाद में दो बेटों के द्वारा इनको प्रताड़ित किया जाने लगा, जिसके बाद यह घर छोड़कर ट्रेन से रक्सौल आ गयी थी। इन्हें अब माहेर ममता निवास में रखा गया है, जहां इनकी उचित देखभाल की जायेगी। इस संबंध में जीआरपी के प्रभारी थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि एक बुजुर्ग महिला को माहेर भेजा गया है, जो सद्भावना एक्सप्रेस से रक्सौल आयी थी। उनके साथ कोई नहीं था। स्वच्छ रक्सौल संगठन के रंजीत सिंह ने बताया कि एक नेपाली नाबालिग युवती को भी रेस्क्यू किया गया है, जो बहकावे में आकर घर से भाग आयी थी और दिल्ली जाने की तैयारी में थी।

कार्यशाला में जेपीविवि के कुलपति ने लिया हिस्सा

छपरा कार्यालय। राज्यपाल-सह-कुलाधिपति के आदेशानुसार, नई दिल्ली में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सभागार में कुलपतियों के लिए आयोजित "उच्च शिक्षा के लिए भारतीय भाषा में पुस्तक लेखन" विषयक एक दिवसीय कार्यशाला में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई के साथ प्रो. एल के पांडे, कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं प्रो. ए के सिंह, कुलपति, पटना विश्वविद्यालय, पटना ने बिहार राज्य का प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत सरकार के शिक्षा राज्य मन्त्री डॉ सुकांत मजूमदार द्वारा किया गया। डॉ मजूमदार ने उनके मन्त्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कियान्वयन हेतु किये जाने वाले प्रयासों की चर्चा करते हुए इसके सफल कियान्वयन में भारतीय भाषाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषायें संस्कृति की वाहक हैं। भारतीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तक निर्माण एक महत्वपूर्ण कदम है। डॉ मजूमदार द्वारा इस अवसर पर भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री जी द्वारा "अस्मिता" नामक भारतीय भाषाओं को पाठ्यक्रम में समाहित करने के पोजेक्ट की भी जानकारी दी गयी ।कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष पद्म पुरस्कार प्राप्त आचार्य चमक कृष्ण शास्त्री ने पाठ्यक्रम, पठन-पाठन एवं शिक्षण में भारतीय भाषाओं की उपादेयता स्थापित करते हुए शिक्षा-समागम में माननीय प्रधान मन्त्री जी द्वारा 100 भारतीय भाषाओ की पुस्तकें राष्ट्र को समर्पित करने के बारे में बताया। इस बर्ष यह लक्ष्य 1800 पुस्तकों का है। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के लिए यह अत्यंत ही गौरव का विषय है कि पिछले शिक्षा-समागम में माननीय प्रधान मन्त्री जी द्वारा जिन 100 पुस्तकों को ई पोर्टल (ई-कुम्भ) में अपलोड किया गया है, उनमें से 38 पुस्तकों का अनुवाद समन्वय में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई द्वारा किया गया था।

जयप्रकाश विश्वविद्यालय और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के बीच हुआ एमओयू, शैक्षणिक और शोध कार्यों में करेंगे एक-दूसरे का सहयोग

छपरा। जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई जी के प्रयासों से अकादमिक क्षेत्र में विश्वविद्यालय को एक और उपलब्धि हासिल हुई है। जयप्रकाश विश्वविद्यालय और नामचीन केंद्रीय विश्वविद्यालय गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुआ है। इसके साथ ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच संयुक्त पाठ्यक्रमों के संचालन सहित अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त हो गया है। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ के विलासपुर में स्थित गुरु घासीदास विश्वविद्यालय केंद्रीय विश्वविद्यालय है और राष्ट्रीय मूल्यांकन (नैक) द्वारा

इसे ए++ की उच्च रेटिंग प्राप्त है। इस यूनिवर्सिटी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कैटेगरी-1 विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। जाहिर है कि इतने बड़े और नामचीन विश्वविद्यालय के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर होने से एक ओर जहां जयप्रकाश विश्वविद्यालय के गौरव में वृद्धि हुई है, वहीं विश्वविद्यालय क्षेत्रान्तर्गत आनेवाले छपरा, सीवान एवं गोपालगंज जिलों के छात्र-छात्राओं को गुरु घासीदास विश्वविद्यालय जैसे संस्थान के पाठ्यक्रम और फैकल्टी का लाभ मिलेगा। दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शैक्षणिक एवं शोध संबंधी कार्यों में एक-दूसरे का सहयोग और मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा।

जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई की व्यक्तिगत पहल से यह संभव हो सका है। दोनों विश्वविद्यालय शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में एक-दूसरे का मार्गदर्शन और सहयोग करेंगे। जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा से कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेयी ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किया। इस एमओयू से दोनों विश्वविद्यालयों के शिक्षकों को भी अनेक शैक्षणिक लाभ प्राप्त होंगे। इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयों के मध्य लघुकालिक पाठ्यक्रम, सेमिनारों, सम्मेलनों, शिक्षण और अनुसंधान परियोजनाओं, गतिविधियों का आदान प्रदान किया जायेगा। दोनों विश्वविद्यालयों ने विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षणिक और अनुसंधान विकास के लिए अपनी विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने के लिए संयुक्त रूप से सहमति जताई है।

इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने से जयप्रकाश विश्वविद्यालय में हर्ष है तथा विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों ने कुलपति को साधुवाद दिया है।

मिडिल क्लास व्यक्ति की तरह जिंदगी जीता हूं

विजेता पंकज त्रिपाठी अपने किरदार को बेहतरीन तरीके से निभाने के लिए जाने जाते है। वह लग्जरी लाइफस्टाइल जीने के बजाय साधाराण जिंदगी जीना पसंद करते है। अपने लाइफस्टाइल को लेकर पंकज ने बात की। उन्होंने कहा, आपने देखा होगा कि मैं अपनी निजी जिंदगी में कैसा हूं। मैं एक मिडिल क्लास व्यक्ति हूं। मेरा काम भले ही ऐसा न लगे, लेकिन मेरे जीने का तरीका वास्तव में वैसा ही है... मैं अपनी जिंदगी को बिल्कुल ऐसे ही एन्जॉय करता हूं। एक्टर ने कहा, मैंने अपना काम कम कर दिया है, ताकि मैं अब जिंदगी को बेहतर तरीके से बैलेंस कर सकूं। मैं अभी घर पर हूं। जब तक मेरी पत्नी मुझसे परेशान नहीं हो जाती, मैं घर पर ही रहूंगा... अभी मैं कम काम कर रहा हूं। पहले मैं ज्यादा काम करता था और बहुत बिजी रहता था... मैं कुछ समय के लिए कम काम करूंगा। एक्टर का मानना है कि स्क्रीन पर ज्यादा एक्सपोजर से लोग बोर हो जाएंगे और मैं भी। पंकज ने कहा, प्रमोशन के बाद मैं निकलना पसंद करता हूं। मुझे अपनी जगह पर रहना पसंद है।

उन्होंने आगे कहा, जब बात मेरे प्रोजेक्ट्स की आती है तो मैं सबसे कम जानकारी रखने वाला व्यक्ति हूं, क्योंकि मैं काम करके वापस घर भागता हूं। निर्माता जानते हैं कि मुझे कोई जानकारी नहीं चाहिए, तो फिर क्यों बताएं? पंकज ने कहा, मैं काम करता हूं और घर आ जाता हूं। जब फिल्म के लिए एडिटिंग होती है या नहीं, तो वे कॉल करते हैं और कहते हैं कि उन्हें किसी शूट के लिए डेट चाहिए, तो मैं हां कह देता हूं। मुझे कोई आइडिया नहीं होता। मिर्जापुर 3 में पंकज को बहुत कम स्क्रीन स्पेस दिया गया था।, इस सीरीज में उन्होंने कालीन भैया की भूमिका निभाई थी। यह पूछे जाने पर कि कालीन भैया को इतना पसंद क्यों किया जाता है, पंकज ने कहा, वह एक नए तरह का डॉन है। ट्रेडिशनल डॉन नहीं। वह शालीन व्यक्ति है, लेकिन उसका काम अजीब है। उनमें एक खास तरह की कॉमेडी थी, जो इस सीजन में नहीं थी, क्योंकि वह लो लाइफ में है।

यूं ही नहीं ग्लोबल स्टार हैं प्रियंका चोपड़ा, हर रोल में खुद को किया साबित

इंडस्ट्री में देसी गर्ल के नाम से मशहूर प्रियंका चोपड़ा अपना 42वां जन्मदिन मना रही हैं। वह एक ग्लोबल स्टार हैं। इस मुकाम पर पहुंचना आसान नहीं था। इसके पीछे उनकी कड़ी मेहनत और लगन रही है। 2016 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। आज वह सक्सेसफुल मॉडल, एक्टर, सिंगर, प्रोड्यूसर, एंटरप्रेन्योर और मां हैं। उनके जन्मदिन के मौके पर एक्ट्रेस के लाइफ के बारे में बताते हैं। प्रियंका ने 2002 में साउथ सुपरस्टार विजय दलपति तमिल फिल्म थमिजहन से अपना एक्टिंग करियर शुरू किया। साल 2003 में बॉलीवुड में एंट्री ली। वो सनी देओल और प्रीति जिंटा की फिल्म द हीरो- लव स्टोरी ऑफ ए स्पाई में दिखीं। इसके बाद अक्षय कुमार और लारा दत्ता स्टारर हिट फिल्म अंदाज में नजर आईं। इस मूवी के लिए उन्हें बेस्ट फीमेल डेब्यूटेंट का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला। साल 2004 में प्रियंका चोपड़ा ने प्लान, किस्मत और असंभव और मुझसे शादी करोगी जैसी फिल्मों में काम किया। साल 2005 में अक्षय कुमार और करीना कपूर की ऐतराज में नेगेटिव रोल निभाकर प्रियंका ने अलग पहचान बनाई। इसके लिए उन्हें बेस्ट एक्टर इन नेगेटिव रोल का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला। इसके बाद उनकी कई फिल्मों को पसंद किया गया। जिनमें सलाम-ए-इश्क, बिग ब्रदर, द्रोणा, गॉड तुस्सी ग्रेट हो, लव स्टोरी 2050 में देखा गया। लेकिन उनकी फिल्म फैशन ने बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ डाले। मधुर भंडारकर की इस फिल्म में प्रियंका ने मेघना का रोल निभाया, जिसके लिए उन्हें नेशनल अवॉर्ड (बेस्ट एक्ट्रेस) मिला। प्रियंका की हिट फिल्मों में डॉन 2, बर्फी, अग्निपथ, तेरी मेरी कहानी, जंजीर, कृष 3, बाजीराव-मस्तानी, गुंडे, मेरी कॉम, दिल धड़कने दो जैसी फिल्मों का हिस्सा रहीं। इन फिल्मों में प्रियंका के निभाए किरदारों ने उन्हें एक अलग मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया। एक्टिंग से अलग भी उन्होंने खुद को साबित किया। उन्होंने विदेशी म्यूजिक कंपनी सीएए (क्रिएटिव आर्टिस्ट एजेंसी) के साथ बतौर सिंगर काम किया। प्रियंका ने हॉलीवुड में भी अपनी पहचान बनानी शुरू की। वह अमेरिकन थ्रिलर सीरीज क्वांटिको में एलेक्स पैरिश के रोल में नजर आईं। वह बेवॉच, इज नॉट इट रोमांटिक, द व्हाइट टाइगर और द मैट्रिक्स रिसरेक्शन में जैसी हॉलीवुड फिल्मों का हिस्सा रहीं। वह 2023 में रिलीज हुई सीरीज सिटाडेल में एक्शन अवतार में नजर आईं। 2018 में उन्होंने जीवन की नई पारी शुरू की। निक जोनास से उदयपुर में शाही शादी की। तब भी लोगों ने दोनों के बीच उम्र के फासले पर सवाल उठाए लेकिन प्रियंका चुप रहीं। साल दर साल दोनों के बीच की बॉन्डिंग ने सारे दावों को ध्वस्त कर दिया है। विदेशी परिवार में अब देसी गर्ल बिलकुल रम गई हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो प्रियंका चोपड़ा फरहान अख्तर के निर्देशन में बनने वाली फिल्म जी ले जरा में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में कैटरीना कैफ, आलिया भट्ट और प्रियंका चोपड़ा लीड रोल में हैं।

विक्की कौशल की फेवरेट एक्ट्रेस हैं कियारा

विक्की कौशल इन दिनों अपनी आगामी फिल्म बैड न्यूज को लेकर चर्चा में चल रहे हैं। विक्की, तृप्ति और एमी विर्क इस फिल्म का जोरो-शोरो से प्रचार भी कर रहे हैं। यह फिल्म 19 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अब हाल ही में, एक इंटरव्यू में विक्की ने कियारा आडवाणी की तारीफों के पुल बांधे हैं। विक्की ने कियारा की तारीफ करते हुए कहा कि कियारा उनकी पसंदीदा अभिनेत्री हैं। विक्की ने यह भी कहा कि इंडस्ट्री में कियारा उनकी फेवरेट हैं।

क्या जल्द शादी करने वाली हैं श्रद्धा?

श्रद्धा कपूर इन दिनों अपनी फिल्म स्त्री के मोस्ट अवेटेड सीक्वल स्त्री 2 की रिलीज के लिए तैयार हैं। 15 अगस्त को सिनेमाघरों में आने वाली इस फिल्म में अभिनेत्री कॉमेडी और हॉरर का तड़का लगाने के लिए तैयार हैं। निजी जीवन की बात करें तो श्रद्धा के बारे में पिछले काफी समय से यह अफवाह है कि वह स्क्रिप्ट राइटर राहुल मोदी को डेट कर रही हैं। अब स्त्री 2 के ट्रेलर लॉन्च के मौके पर उन्होंने अपनी शादी के प्लान के बारे में खुलकर बात की है। फिल्म स्त्री 2 के कलाकार और क्रू आज मुंबई में ट्रेलर लॉन्च इवेंट के लिए एक साथ आए। श्रद्धा कपूर गोल्डन-रेड साड़ी, ग्लैमरस मेकअप और बंधे बालों में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। अपने रिश्ते और शादी के प्लान के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए, अभिनेत्री ने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया। उन्होंने कहा, वह स्त्री है, उसे जब दुल्हन बनना है वो बनेगी। इससे पहले श्रद्धा ने इंस्टाग्राम पर राहुल मोदी के साथ अपने रिश्ते को आधिकारिक तौर पर जाहिर किया था। उन्होंने राहुल के साथ एक सेल्फी पोस्ट की और एक मजेदार कैप्शन भी लिखा। तस्वीर में श्रद्धा और राहुल सफेद रंग के कपड़ों में नजर आ रहे थे, जिसमें श्रद्धा, राहुल के हाथ में हाथ डाले नजर आई थीं। इस तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, दिल रख ले, नींद तो वापस दे दे यार। श्रद्धा ने इस पोस्ट के साथ बैकग्राउंड में फिल्म इश्क का गाना नींद चुराई मेरी भी इस्तेमाल किया था।

जान्हवी की फिल्म उलझ के ट्रेलर पर पाकिस्तान में मनाई जा रही खुशी

अभिनेत्री जान्हवी कपूर की फिल्म उलझ का ट्रेलर कल मंगलवार 16 जुलाई को रिलीज हो चुका है। अभिनेत्री की इस स्पाई सस्पेंस थ्रिलर फिल्म को आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म राजी बनाने वाली कंपनी जंगली पिक्चर्स ने प्रोड्यूस किया है। यह फिल्म 2 अगस्त को पर्दे पर आएगी। फिलहाल ट्रेलर ने दर्शकों के मन में फिल्म के प्रति दिलचस्पी जगा दी है। भारत में तो जान्हवी की इस फिल्म को लेकर जो उत्साह है सो है, लेकिन चर्चा पाकिस्तान तक छिड़ गई है। यूं तो फिल्म, साहित्य और कलाएं सरहद को नहीं मानतीं। एक देश की फिल्म की चर्चा दूसरे देश में होना नई बात नहीं। लेकिन, बात अगर भारतीय फिल्म की पाकिस्तान में हो रही है और वह भी फिल्म की रिलीज से पहले हो रही हो तो यह जरूर एक खबर बन जाती है। तो ऐसा ही कुछ जान्हवी कपूर की फिल्म उलझ के ट्रेलर के साथ हो रहा है। कुल दो मिनट और 33 सेकंड के इस ट्रेलर में एक जगह पाकिस्तान की झलक नजर आ गई है। फिल्म में जान्हवी कपूर देश की सबसे युवा डिप्टी हाई कमिश्नर सुहाना भाटिया की भूमिका में हैं। ट्रेलर में वह आईएसआई के अंदर सेंधमारी करने के लिए भेजी गई भारतीय अंडरकवर एजेंट की रूप में दिखी हैं। ट्रेलर में एक जगह पाकिस्तान की सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के झंडों वाली रैली की झलक भी दिखाई गई है। हालांकि, झलक सिर्फ कुछ सेकंड की ही है, लेकिन इस पर सोशल मीडिया पर लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया देनी शुरू कर दी है।

कंगना ने इमरजेंसी फिल्म को लेकर साझा किया अपडेट

कंगना रणौत की फिल्म इमरजेंसी का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। यह फिल्म इसी साल रिलीज होगी और कंगना ने फिल्म को लेकर एक अपडेट साझा किया है। कंगना रणौत ने बताया कि फिलहाल इस फिल्म का पोस्ट प्रोडक्शन काम चल रहा है। कंगना के प्रोडक्शन हाउस मणिकर्णिका के इंस्टाग्राम हैंडल से स्टोरी साझा की गई है, जिसे कंगना ने भी साझा किया है। इसके साथ कंगना ने लिखा है, आज अपनी साउंड टीम के साथ मिक्सिंग स्टूडियो जाना हुआ, सभी ने शानदार काम किया है। कंगना की यह फिल्म 6 सितंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

ऋचा-अली के आंगन में गूंजी किलकारी, कपल ने किया बिटिया का स्वागत

अली फजल और ऋचा चड्ढा के यहां किलकारी गूंजी है। ऋचा चड्ढा मां बन गई हैं। उन्होंने पहली संतान के रूप में बिटिया को जन्म दिया है। ऋचा और अली ने यह खुशखबरी बेबी गर्ल के जन्म के दो दिन बाद फैंस के साथ साझा की है। कपल के यहां 16 जुलाई को बेटी का जन्म हुआ। पूरा परिवार बेहद खुश है।

ऋचा चड्ढा ने खुशखबरी साझा करते हुए कहा, हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि 16 जुलाई को हमारे यहां बेटी का आगमन हुआ। बच्ची बिल्कुल स्वस्थ है। हमारा पूरा परिवार बहुत खुश हैं। हम अपने शुभचिंतकों के प्रति शुक्रगुजार हैं, जो उन्होंने इतना प्यार और आशीर्वाद दिया। ऋचा चड्ढा और अली फजल ने वर्ष 2022 में शादी की। इससे पहले दोनों ने कई वर्ष तक एक-दूसरे को डेट किया। दोनों की मुलाकात फिल्म फुकरे के सेट पर 2012 में पहली बार हुई थी। वहीं, से दोनों एक-दूसरे के करीब आए। हालांकि, लंबे वक्त तक इन्होंने अपना रिलेशनशिप सीक्रेट रखा।

दिलजीत दोसांझ-अर्जुन रामपाल की फिल्म पंजाब 95 को सीबीएफसी से झटका

दिलजीत दोसांझ अभिनीत पंजाब 95, 1984 से 1994 तक पंजाब विद्रोह के अशांत वर्षों के दौरान खालरा की न्याय की निडर खोज पर प्रकाश डालती है। सीबीएफसी ने हाल ही में फिल्म की जांच की और इसके संवेदनशील कंटेंट पर चिंताओं का हवाला देते हुए एक, दो नहीं 85 कट लगाए। इतना ही नहीं जानकारी तो यह भी है कि सीबीएफसी इस फिल्म को रिलीज सर्टिफिकेट देने में झिझक रही है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म निर्माता अनिच्छा से व्यापक एडिटिंग के लिए सहमत हुए। हालांकि, सीबीएफसी आज के समय में राजनीतिक रूप से आरोपित घटनाओं के चित्रण पर आपत्ति व्यक्त करते हुए, फिल्म को रिलीज प्रमाणपत्र देने के बारे में सतर्क है। यह पंजाब 95 के लिए पहला झटका नहीं है, जिसका नाम पहले घल्लूघारा था। 2022 के अंत में, फिल्म को छह महीने की लंबी प्रमाणन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, जिसके दौरान सीबीएफसी ने 21 कट की मांग की और यहां तक कि शीर्षक परिवर्तन पर भी जोर दिया। 1990 के दशक के अमृतसर, पंजाब की पृष्ठभूमि पर आधारित पंजाब 95 में खालरा को एक समर्पित बैंक कर्मचारी से कार्यकर्ता बने व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों के बीच न्याय के लिए प्रयास करते हैं। उनकी खोज गहरे रहस्यों को उजागर करती है और उन खतरों को उजागर करती है जो यथास्थिति को चुनौती देने का साहस करते हैं।

संक्षिप्त खबरें

राजद के शिष्ट मंडल ने नगर आयुक्त को सौंपा ज्ञापन

सदर मुंगेर। राष्ट्रीय जनता दल के शिष्टमंडल जिसमें राजद के राज्य परिषद सदस्य सह प्रदेश सचिव युवा राजद बिहार मुंगेर नगर निगम के नगर आयुक्त निखिल धनराज से मिलकर उन्हें एक ज्ञापन सौंपा है। इस ज्ञापन में नेता द्वय ने मुंगेर पूर्वी किला गेट पर स्थित सरकारी बस स्टैंड एवं डीजे कालेज रोड स्थित सरकारी बस डीपो को अतिक्रमण मुक्त कराकर कर्मचारियों एवं यात्रियों के सुविधा से लैस सरकारी भवनों का पुनः निर्माण कराने की मांग को लेकर एक ज्ञापन सौंपा है। राजद नेताओं ने नगर आयुक्त को मिलकर आगे कहा कि मुंगेर प्रमंडल मुख्यालय एवं जिला मुख्यालय का केंद्र है। यहां पूर्व में इस बस स्टैंड व डीपो से यात्रियों, कर्मचारियों की सुविधा से लैस होकर पुराने बिहार के विभिन्न जिलों के लिए बस सेवा उपलब्ध होता था साथ ही बस डीपो का अपना पैट्रोल पंप, स्टाफ क्वार्टर साथ, यात्री सेड व टिकट काउंटर का भी व्यवस्था था। इतना ही नहीं यात्रियों के लिए सुलभ शौचालय, पेशाब घर एवं पीने के लिए शुद्ध पेयजल की भी व्यवस्था किया जाना चाहिए था।

जीतन सहनी की हत्या दुर्भाग्यपूर्ण : प्रदेश प्रधान महासचिव

सदर मुंगेर। विकासशील पार्टी के संरक्षक एवं बिहार सरकार के पूर्व मंत्री मुकेश सहनी के पिता जीतन सहनी की निर्मल हत्या अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। लोजपा (रामविलास) के अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रधान महासचिव सह-मुख्य प्रवक्ता विनय कुमार गुड्डू ने कहा कि सुशासन की सरकार ऐसी घटना से बदनाम हो रही है अपराधियों ने ऐसे जघन्न अपराध कर सरकार को चुनौती देना चाहती है ऐसी घटना से प्रतीत हो रहा है कि मुकेश सहनी एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति लोजपा (रामविलास) की पार्टी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करती है और बिहार सरकार से दोषियों के विरुद्ध करवाई कर सजा देने की मांग करती है जिससे पिछड़ा समाज भयभीत महसूस नहीं हो सके। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की घटनाओं में राजनीतिक नहीं होनी चाहिए सभी को इमानदारी से इस हत्याकांड में दोषियों को सजा दिलवाने की बात होनी चाहिए।

22 जुलाई से लगेगा कांवरिया शिविर

सदर मुंगेर भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी जमालपुर की उप शाखा बरियारपुर के द्वारा बुधवार के दिन आशा टोला प्रमोद सिन्हा के आवास पर एक बैठक किया गया। इसकी अध्यक्षता संयोजक डॉ महादेव नंद कुमार ने की। बैठक में कई बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया। मुख्य रूप से 22 जुलाई को दुर्गा स्थान आशा टोला में कांवरिया सेवा शिविर लगाया जायेगा और निःशुल्क सेवा दिया जायेगा। सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि एक माह शिविर लगाया जाए जिसमें कांवरिया को जल सेवा चिकित्सा सेवा एवं आवास सेवा दिया जाएगा मौके पे कोषाध्यक्ष डॉ दिवा कांत प्रसाद, डॉ रवि कुमार मोना, डॉ सुनील कुमार, प्रकाश मंडल नागेश्वर मंडल, सुखुकलाल मंडल व अन्य सदस्य उपस्थित थे।

अवैध संबंध में युवक की हत्या कर शव को फेंका

हवेली खड़गपुर(मुंगेर) । पुलिस सूत्रों ने बताया कि हरदा निवासी शिवकुमार का अवैध संबंध नंदलालपुर निवासी राम प्रवेश की पत्नी से था। रामप्रवेश ने शिवकुमार की हत्या करने के बाद लाश को सड़क के किनारे फेंक दिया। घटना के बाद रामप्रवेश और उसकी पत्नी फरार है। थाना अध्यक्ष ने बताया कि पुलिस की छानबीन में इस बात का खुलासा हुआ है कि मृतक के बहनोई फंदुश के बहन की शादी नंदलालपुर निवासी राम प्रवेश के साथ हुआ था लेकिन शादी से पहले से ही रामप्रवेश की पत्नी से शिवकुमार का अवैध संबंध था शिवकुमार उसके घर पर आता जाता था और रात भर वहां रहता था घटना के बाद से रामप्रवेश और उसकी पत्नी फरार बताई जा रही है मृतक के पिता अशोक यादव के अनुसार शिवकुमार की तीन भाइयों में सबसे बड़ा था जो प्राइवेट वाहन चलाकर परिवार का चलाने में सहयोग करता था मंगलवार की शाम 7:00 बजे घर से निकला था।

बाइक सवार ने चार राउंड फायरिंग कर फरार

तारापुर (मुंगेर)। तारापुर थाना क्षेत्र के मोहनगंज श्रवण किराना स्टोर के सामने बीते गुरुवार के देर शाम 9 बजे दो बाइक पर चार सवार आए। सड़क पर ही गाड़ी रोक कर गाली गलौज किया और चार चक्र फायरिंग कर भाग गए। गोली की आवाज से उस स्थान पर दहशत की स्थिति उत्पन्न हो गया। ग्रामीणों ने इस घटना की सूचना पुलिस फोन से पुलिस को दिया। एसडीपीओ सिंधु शेखर सिंह, इंस्पेक्टर चंदन कुमार घटनास्थल पर पहुंचे और पुलिस ने घटनास्थल पर से एक खोखा बरामद किया है। पुलिस लोगों से पूछ-ताछ कर घटना की जानकारी प्राप्त कर रही है। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को भी खंगालने में पुलिस जुटी है।

जनता दरबार में 250 लोगों के मामले को जिलाधिकारी ने गंभीरता पूर्वक सुना

प्रातः किरण संवाददाता

गया। शुक्रवार को आयोजित जिला पदाधिकारी का जनता दरबार मे जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने उपस्थित लगभग 250 व्यक्तियों के मामले को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित पदाधिकारियों को प्राप्त आवेदनों को जांच यथाशीघ्र कराते हुए जांच प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। कई मामलों में जिला पदाधिकारी द्वारा जिले के वरीय पदाधिकारी यथा उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी संबंधित प्रखंड के नामित जिला स्तरीय पदाधिकारी आदि द्वारा मामले को जांच करना का भी जिम्मा दिया गया है। प्रधानमंत्री आवास, मुख्यमंत्री आवास योजना से संबंधित आए मामलों को जिला पदाधिकारी ने उप विकास आयुक्त को संबंधित आवेदनों को यथाशीघ्र जांच कराते हुए पात्रता रखने वाले व्यक्तियों को प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ देने हेतु अग्रेतर कार्य करने का निर्देश दिया है। कई व्यक्तियों ने भूमि विवाद, आपसी बटवारा, अतिक्रमण, जमीन संबंधी दिक्कतें आदि से संबंधित आवेदन दिए हैं। उन सभी आवेदन के आलोक में जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी तथा थानाध्यक्ष एवं अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के अध्यक्षता में थाना स्तर एवं अनुमंडल स्तर पर हर शनिवार को आयोजित होने वाले जनता दरबार में दोनों पक्षों के व्यक्तियों को बुलाकर संबंधित मामलों को प्राथमिकता देते हुए निराकरण कराने का निर्देश दिए हैं। जमीन से संबंधित अत्यधिक मामले को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने आए आवेदनों को सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता को निर्देश दिया कि अच्छे तरीके से आए आवेदनों को जांच करते हुए संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमानुसार उचित कार्रवाई करने हेतु आदेशित करें। इसके साथ ही प्राप्त कई आवेदनों के विरुद्ध वरीय पदाधिकारी नामित कर जांच हेतु निर्देशित किया है। साथ ही जांच पदाधिकारी को निर्देश दिया है कि प्राप्त आवेदन को अधिकतम सात दिनों में जांच करते हुए दोषी कर्मी, पदाधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई हेतु प्रेषित करें कई व्यक्ति परिमार्जन के संबंध में आवेदन दिए जिसपर जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं राजस्व पदाधिकारी को सख्त निर्देश दिया कि परिमार्जन हेतु लंबित आवेदनों को तेजी से निष्पादन करें। जमीन से संबंधित आये मामलों में डीएम ने सभी अंचलाधिकारी को कहा कि ये आम जनता ज्यादातर गाँव के ही होते हैं और किसान होते हैं, इन्हें सरकारी कागजी प्रक्रिया के बारे में हर तरह से मदद करें। जरूरत पड़े तो ग्रामीणों की जो उनकी समस्या है उसके आलोक में उन्हें आवेदन लिखवाने में मदद करे और किसी को बेवजह दौड़ना न पड़े इसका पूरा ख्याल रखें। मानपुर से आये आवेदक रवि कुमार ने बताया कि नौरंगा पंचायत के बहोरा बिगहा में नाला का निर्माण अतिआवश्यक है, डीएम ने प्रखंड विकास पदाधिकारी मानपुर को निर्देश दिया कि उक्त स्थल का निरीक्षण करते हुए नाला निर्माण हेतु पहल करें। डीएम ने अपर समाहर्ता राजस्व को निर्देश दिया है हर शनिवार को थाना स्तर पर आयोजित होने वाले जनता दरबार मे सही तरीके से सुनवाई हो रही है। नही इसकी अंचल वार समीक्षा सभी डीसीएलआर से करवाये इमामगंज क्षेत्र में मौजा जमुना में आहर पइन का अतिक्रमण है। डीएम ने अंचलाधिकारी इमामगंज को निर्देश दिया है कि नापी करवाते हुए अतिक्रमण वाद चलाकर कार्रवाई करें। बोधगया के नावा आहर का अतिक्रमण स्थानीय लोगो द्वारा किया जा रहा है। डीएम ने राजस्व अधिकारी बोधगया के निर्देश दिया है कि नापी करवाते हुए अतिक्रमण वाद चलावे। डीएम ने सभी अंचलाधिकारी को निर्देश दिया है अपने क्षेत्र में सरकारी जमीनों को संरक्षित रखने में पहल करें। अंचल अधिकारी की पूरी जिम्मेदारी है कि अपने क्षेत्र के सरकारी जमीनों को अच्छे से संरक्षित रखें। सरकारी जमीन की कहीं से भी अतिक्रमण की सूचना प्राप्त होती है तो तुरंत जांच करते हुए कड़ी कार्रवाई करें।

आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित की अन्नप्राशन दिवस

प्रातः किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। शुक्रवार को विभागीय निर्देशानुसार सदर प्रखंड अंतर्गत शहरी तथा ग्रामीण परियोजना की सभी सेविका द्वारा आंगनबाड़ी केंद्रों पर अन्नप्राशन दिवस कार्यक्रम आयोजित की। वहीं इसकी जानकारी देते हुए बाल विकास परियोजना पदाधिकारी मुंगेर ग्रामीण प्रियदर्शनी द्वारा बताया गया कि हर माह के 19 तारीख को सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर उनके पोषक क्षेत्र के 6 माह के बच्चे को खीर से मुंह झूठ कर अन्नप्राशन दिवस कार्यक्रम आंगनबाड़ी केन्द्रों पर आयोजित की जाती है। तथा बच्चों के अभिभावक को यह बताया जाता है कि अब आपके बच्चे 6 माह के हो चुके हैं। इन्हें ऊपरी आहार के तौर पर दलिया, खिचड़ी पतला दाल, चावल दाल दिन में दो या तीन बार अवश्य खिलाए ताकि बच्चे सुपोषित रहे। इसके साथ मां का दूध 2 सालों तक बच्चों को देना ना भुले। साथ उन्होंने यह भी गर्भवती धात्री अन्य महिलाओं के बीच मोटे अनाज पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाली की आप लोग मोटे अनाज पर विशेष जोड़ दें जैसे मरवा, सांवा, ज्वार खेड़ी, बाजार, ऐसे अनाज का प्रयोग करें जिसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन आयरन प्राप्त रहता है इससे आप कुपोषण से दूर रहेंगे तथा सुपोषित हमेशा रहेंगे।

वीडिओ ने आवास योजना का किया निरीक्षण

सदर मुंगेर। प्रखंड विकास पदाधिकारी सदर मुंगेर आरके राघव ने सदर प्रखंड अंतर्गत नौवागढ़ी उत्तरी पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना के दिए गए आवास योजना का निरीक्षण किया। तथा आवास लाभुकों से मिलकर उन्हें समय पर आवास को पूरा करने की चेतावनी दी। समय पर आवास पूरा नहीं करने वाले लाभुकों पर भी उन्होंने जमकर बरसे तथा उन्हें चेतावनी दिया गया कि आप समय पर आवास को पूरा करें अन्यथा आप पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी तथा सरकार के द्वारा दी गई राशि आपसे वापस ली जाएगी। समय सीमा के अंदर जो अपना आवास को पूर्ण कर लेंगे उन्हें प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा अन्य योजना का भी लाभ दिया जाएगा। निरीक्षण के दौरान आवास सहायक स्कंद कुमार, राजाराम मुख्य रूप से उपस्थित थे।

जन सुराज के विचारों पर चलकर होगी बिहार की उन्नति

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर के संगठन जन सुराज विचार मंच ने औरंगाबाद की राजनीति को नई दिशा देने की पहल की है। इस पहल के तहत मंच के बैनर तले शहर के पृथ्वी राज चौहान स्मृति भवन में गुरुवार को बिहार की दशा-दिशा एवं जन सुराज की भूमिका विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी में शहर के बुद्धिजीवियों, अधिवक्ताओं, गणमान्य नागरिकों एवं सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं आदि ने विचार रखे। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो. रामाधार सिंह ने की जबकि संचालन प्रशांत किशोर की टीम की औरंगाबाद की प्रभारी तस्मिया मुख्तार ने किया। गोष्ठी में विचार रखते हुए वक्ताओं ने कहा कि बिहार की दशा और दिशा में बदलाव जरुरी है और बदलाव के लिए जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर की पहल सराहनीय है। बिहार को एक नए राजनीतिक विकल्प की जरूरत है और यह जन सुराज की पहल हो सकती है लेकिन इसके लिए अभी काफी कुछ काम करना होगा। तभी जाकर जन सुराज को बिहार की दशा और दिशा बदलने का अभियान सफल हो सकेगा। वक्ताओं ने कहा कि जन सुराज ने बिहार में बदलाव के लिए जो पहल की है, उस पहल से लोगों में उम्मीद जगी है। इस उम्मीद में ही लोग प्रशांत किशोर के संगठन से जुड़े है और औरंगाबाद के भी लोग उनसे जुड़ने के लिए आगे आएंगे। इस कार्यक्रम के बहाने औरंगाबाद में जन सुराज अभियान का आगाज हो चुका है और धीरे धीरे यह कारवां बढ़ता हुआ सांगठनिक आकार लेगा। कार्यक्रम में प्रो. रामाधार सिंह, जगदीश सिंह, जेपी सेनानी अजय श्रीवास्तव, पप्पू ज्वाला सिंह, डॉ. आरयू कुमार, वरीय अधिवक्ता सिद्धेश्वर विद्यार्थी, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संजय कुमार सिंह, महिला नेत्री सुमन अग्रवाल, करिश्मा सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश विद्यार्थी आदित्य श्रीवास्तव, सतीश कुमार वर्मा एवं आशुतोष रंजन आदि ने विचार रखे।

माँझी के नटवर परशुराम में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

माँझी। माँझी प्रखंड के मरहा पंचायत के नटवर परशुराम में शुक्रवार को तुलसी माँ आई हॉस्पिटल छपरा के सौजन्य से निशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में छपरा से आए चिकित्सकों ने नेत्ररोगियों की आंखों का परीक्षण किया। शिविर में आंखों का परीक्षण कराने के लिए आसपास क्षेत्र के लोगों की भीड़ लगी रही। शिविर के शुभारंभ पर नेत्र चिकित्सक डॉ. शुभम कुमार सिंह ने कहा कि बिना आंखों के हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। आंखें अनमोल हैं, बढ़ती उम्र और कुछ बीमारियों के कारण आंखों की रोशनी या तो कम हो जाती है या चली जाती है। सावधानी एवं जागरूकता से ही हम अपनी आंखों की रोशनी को बचा सकते हैं। लिहाजा समय-समय आंखों की जांच कराते हुए सावधानी बरतें तो रोशनी को बनाए रख सकते हैं इस दौरान वार्ड प्रतिनिधि निरंज सिंह केशव सिंह योगेन्द्र सिंह, पूर्व मुखिया परमहंस साह गोंड, सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

हरि सिंह महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं की उमड़ी भीड़

प्रातः किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (कोर्ट)। मुंगेर विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक सेमेस्टर वन की रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया एवं स्नातक सेमेस्टर 2 के परीक्षा फॉर्म भरने को लेकर शुक्रवार को हरि सिंह महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं की काफी भीड़ को देखते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता हेल्प डेस्क लगाकर छात्र-छात्राओं की मदद कर रहे थे। इस दौरान जिला संयोजक अंकित जायसवाल ने बताया कि परिषद कई वर्षों से हेल्प डेस्क के माध्यम से एवं फोन कॉल के माध्यम से छात्र-छात्राओं की मदद करते आ रहे है। छात्र नेता अर्पित कुमार ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एक ऐसा छात्र संगठन है जो सिर्फ छात्र संघ चुनाव में ही नजर नहीं आती बल्कि वर्ष भर कॉलेज कैंपस में रहकर छात्र-छात्राओं की मदद के लिए आगे रहते है। इस मौके पर सैलाब झा, मोहित राज, सचिन कुमार, पिंकेश कुमार, राजीव आनंद, सौरभ झा, आर्यन केसरी सहित अन्य कार्यकर्ता छात्र छात्रों की समस्या सुन उसका निदान कर रहे थे।

कानूनी कार्रवाई बाल विवाह के खात्मे की कुंजी

गया। भारत में बाल विवाह के खात्मे में कानूनी कार्रवाइयों और अभियोजन की अहम भूमिका को उजागर करने वाली एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बिहार राज्य में गया जिले में कार्यरत गैरसरकारी संगठन प्रयास जुवेनाइल ऐड सेंटर ने कहा कि कानूनी कार्रवाइयां और कानूनी हस्तक्षेप 2030 तक बाल विवाह के खात्मे के लक्ष्य को हासिल करने की कुंजी हैं और मई 2023 से मार्च 2024 तक गया जिले में 32 बाल विवाह रुकवाए हैं। टुवार्ड्स जस्टिस : इंडिंग चाइल्ड मैरेज शीर्षक से जारी यह रिपोर्ट इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन की शोध टीम ने तैयार की है। प्रयास जुवेनाइल ऐड सेंटर और चाइल्ड प्रोटेक्शन फंड 2030 तक देश से बाल विवाह के खात्मे के लिए काम कर रहे बाल विवाह मुक्त भारत के सहयोगी संगठन के तौर पर साथ हैं। संगठन ने सरकार से अपील की कि वह अपराधियों को सजा सुनिश्चित करे ताकि बाल विवाह के खिलाफ लोगों में कानून का भय पैदा हो सके। इंडिंग चाइल्ड मैरेज बाल विवाह के खात्मे के लिए न्यायिक तंत्र द्वारा पूरे देश में फौरी कदम उठाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। रिपोर्ट के अनुसार 2022 में देश भर में बाल विवाह के कुल 3,563 मामले दर्ज हुए, जिसमें सिर्फ 181 मामलों का सफलतापूर्वक निपटारा हुआ। यानी लंबित मामलों की दर 92 प्रतिशत है। मौजूदा दर के हिसाब से इन 3,365 मामलों के निपटारे में 19 साल का समय लगेगा। बाल विवाह की रोकथाम के लिए असम सरकार की कानूनी कार्रवाई पर जोर देने की रणनीति के शानदार नतीजे मिले हैं और इस मॉडल की सफलता को देखते हुए इसे पूरे देश में आजमाया जा सकता है। रिपोर्ट के अनुसार 2021-22 से 2023-24 के बीच असम के 20 जिलों में बाल विवाह के मामलों में 81 प्रतिशत की कमी आई है जो बाल विवाह के खात्मे में कानूनी कार्रवाई की अहम भूमिका का सबूत है। इस अध्ययन में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो एनसीआरबीऔर असम के 20 जिलों के 1,132 गांवों से आंकड़े जुटाए गए जहां कुल आबादी 21 लाख है जिनमें 8 लाख बच्चे हैं।

सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

गया। सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यक्रम का सफल इनर व्हील क्लब ऑफ गया सनराइज ने सेकेंडरी दिल्ली पब्लिक स्कूल, चंदौती में सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को सर्वाइकल कैंसर, उसकी रोकथाम और भारत में उपलब्ध स्वदेशी वैक्सीन के बारे में जागरूक करना था। डॉ. तेजस्वी नंदन और डॉ. मेघा सिन्हा ने इस विषय पर बहुत ही प्रभावी और जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया है। उन्होंने शुरुआती पहचान, नियमित जांच और स्वदेशी वैक्सीन के फायदों के बारे में विस्तार से बताया है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि जहां इस वैक्सीन की एमआरपी 2000 रुपये है, वहीं इनर व्हील क्लब ऑफ गया सनराइज इसे केवल 1250 रुपये में उपलब्ध करा रहा है छात्राओं ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे, जिससे उनकी समझ और रुचि स्पष्ट हुई। वक्ताओं ने जानकारी को सरल और सहज तरीके से प्रस्तुत किया है जिससे सभी को समझने में आसानी हुई है। यह जागरूकता कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा है। छात्राओं ने सर्वाइकल कैंसर के बारे में बेहतर समझ और खुद को वैक्सीनेशन और नियमित जांच के माध्यम से कैसे सुरक्षित रखें, इसकी जानकारी प्राप्त की है। इस कार्यक्रम ने न केवल जागरूकता बढ़ाई बल्कि छात्राओं को मूल्यवान स्वास्थ्य ज्ञान से सशक्त भी किया है इस कार्यक्रम के दौरान, अध्यक्ष डॉ. तेजस्वी नंदन और डॉ. मेघा सिन्हा मौजूद रहीं।

कलयुगी माँ ने अपनी जवान बेटी और उसके प्रेमी की हत्या कर लाशों को गंगा में बहाया

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर। अपनी जवान बेटी और उसकी प्रेमी की निर्मम हत्या कर गंगा में प्रवाहित करने वाली निर्दयी मां सहित चार को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। लगभग 1 वर्ष बाद पुलिस को यह सफलता हाथ लगी और एक साथ दोहरे हत्याकांड का उद्भेदन वैशाली पुलिस ने किया। वैशाली के आरक्षी अधीक्षक हरिकिशोर राय ने आज प्रेस वार्ता कर इस हत्याकांड के उद्भेदन के संबंध में विस्तृत जानकारी दिया। एसपी ने बताया कि बीते वर्ष 17 जून को देसरी थाना को एक आवेदन प्राप्त हुआ कि मजलिसपुर निवासी सुरेन्द्र सिंह के पुत्र प्रभात कुमार उर्फ निखिल कुमार अपने घर से निकला और वापस नहीं आया है। इस संदर्भ में देसरी थाना कांड सं०-220/23 दि०-17.06.2023 धारा-365 भा०द०वि० दर्ज कर, एक विशेष टीम का गठन कर अनुसंधान प्रारंभ की गई। गठित विशेष टीम के द्वारा अनुसंधान के क्रम में यह बात सामने आई कि सुरेन्द्र सिंह के पुत्र प्रभात कुमार का खुशरुपुर थाना क्षेत्र (पटना) के निवासी गीता देवी की पुत्री से प्रेम प्रसंग चल रहा था। जिसमें उक्त दोनों को लड़की के मां व भाईयों के द्वारा आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया गया था, जिससे गुस्से में आकर लड़की के मां गीता देवी व दोनों भाई एवं चाचा के द्वारा दोनों की हत्या कर शव को गंगा नदी में फेंक दिया गया था घटना में शामिल सभी अभियुक्तों की गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। गिरफ्तार अपराधियों में गीता देवी, पति-लालबाबु राय, सा०-हरदासबीघा, थाना-खुशरूपुर, जिला-पटना, इनका पुत्र शुसिल कुमार औरसंदीप कुमार तथा विजेश्वर राय, पे० नगिना राय, सा०-हरदासबीघा, थाना-खुशरूपुर, जिला-पटना शामिल है। एसपी ने बताया कि प्रभात कुमार उर्फ निखिल का लड़की के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था जिसका उसकी लड़की की मां और भाई विरोध करते थे। घटना को अंजाम देने के लिए सभी ने रणनीति के तहत प्रभात को बुलाया था और फिर गला दबाकर हत्या कर दी गई। यह स्वीकारोक्ति लड़की की मां गीता देवी और गिरफ्तार उसके भाइयों ने भी की है। लड़की के चाचा विजेश्वर राय दोनों के शव को गंगा नदी में प्रवाहित करने में मददगार थे। लड़की की मां गीता देवी बतलाती है कि बेटी को आपत्तिजनक स्थिति में उसने देखा था और लोक लाज के भय से उसने अपने बेटों के साथ मिलकर बेटी और उसकी प्रेमी की गला दबाकर हत्या कर दी है। उसे इसका कोई अफसोस भी नहीं है।

हाय रे बिजली का कहर रात भर बिजली रही लापता

प्रातः किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। बता दे कि इन दोनों बिजली की अजब समस्या उत्पन्न हो गई है कभी रात भर गुम हो जाती है तो कभी दिन भर लापता रहती है। गुरुवार को नवागढ़ क्षेत्र में रात भर बिजली रहे के लापता होने से लोग काफी परेशान रहे। वहीं उपभोक्ता अनिल कुमार डॉ संजय कुमार शैलेंद्र शर्मा सरवन कुमार द्वारा बताया गया कि अब सरकार द्वारा 24 घंटे बिजली देने की बात झूठ साबित होने लगा है। कभी रात तो कभी दिन में गुम हो जाती है। बिजली लोग काफी परेशान रहते हैं। इस तरह से बिजली की रवैया से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगा लोग बीमारी का शिकार होने लगे हैं। हम लोग समय पर बिजली बिल भुगतान करते हैं पर बिजली कभी समय पर नहीं मिल पाता है। बिजली विभाग कि उदासीनता की वजह से यह समस्या उत्पन्न हुआ है।

अमरजीत कुमार हत्याकांड व ट्रक लूटकांड का सफल उद्भेदन, अवैध आग्नेयास्त्रों के साथ कई अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी

हाजीपुर। वैशाली पुलिस ने औद्योगिक क्षेत्र थाना के अमरजीत कुमार हत्या कांड के उद्भेदन किया। 23 जून को हुई हत्याकांड के बाद एक विशेष टीम का गठन किया गया था। जिसमें अनु० पु० पदा० सदर, जिला आसूचना ईकाई एवं थानाध्यक्ष औद्योगिक क्षेत्र को शामिल किया गया था। आज एसपी हरिकिशोर राय ने प्रेसवार्ता कर बतलाया कि उक्त गठित टीम को यह गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि अमरजीत कुमार हत्याकांड में शामिल प्राथमिकी अभियुक्त हाजीपुर से कहीं बाहर भागने के फिराक में है प्राप्त सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु थानाध्यक्ष औद्योगिक क्षेत्र, जिला आसूचना ईकाई की टीम एवं सशस्त्र बलों के साथ उक्त स्थल को घेराबंदी की, तभी पुलिस को देखकर दो व्यक्ति भागने लगे। जिसमें भागते हुए दोनों व्यक्तियों (रोहित कुमार एवं रंजीत कुमार) को सशस्त्र बलों के सहयोग से पकड़ लिया गया। पकड़ाये दोनों अभियुक्तों की तलाशी के क्रम में रंजीत कुमार के पास से 01 लोडेड देशी कट्टा एवं रोहित कुमार के पास से भी 01 लोडेड देशी कट्टा बरामद हुआ। उसे हत्याकांड में अभी तक 6अभियुक्त की गिरफ्तारी हो चुकी है वही, एसपी ने जानकारी दिया कि राजा पकड़ थाना क्षेत्र में 15 जुलाई को सरिया लदे ट्रक को लूट लिया गया था लूट कांड के बाद विशेष टीम का गठन किया गया। आज राजा पकड़ पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि हरपुर हरदास गांव स्थित आम के बगीचा में कुछ अपराधी अवैध आग्नेयास्त्र के साथ जमा होकर किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस वहां पहुंची पुलिस को देखते ही अपराधी भागने लगे जिसमें चार अपराधियों को गिरफ्तार किया गया इन्हें पंकज कुमार, विकास कुमार, नीरज कुमार एवं जीवछकुमार हैं उनके पास से दो लोडेड देसी कट्टा एक जिंदा कारतूस और चाकू बरामद किया गया। गिरफ्तार अपराधियों ने पुलिस को बताया कि इन्हीं के द्वारा राजापाकर थाना क्षेत्र के बाकरपुर में ट्रक लूट की घटना को अंजाम दिया गया था।

राजद नेता गौतम यादव सैंकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल

ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बलराम मंडल ने दिलाई सदस्यता

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। मुजफ्फरपुर के राजद नेता और समाजसेवी गौतम यादव आज अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा प्रदेश कार्यालय में ओबीसी मोर्चा द्वारा आयोजित एक मिलन समारोह में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। उन्हें भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बलराम मंडल ने भाजपा की सदस्यता दिलाई। इस मौके पर उपस्थित भाजपा के महामंत्री शिवेश राम, जगन्नाथ ठाकुर और ओबीसी मोर्चा के प्रभारी अचल सिन्हा ने गौतम यादव का पार्टी में स्वागत किया। समारोह को संबोधित करते हुए श्री मंडल ने कहा कि आज राजनीतिक दलों में भाजपा के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबका साथ, सबका विकास की नीति को लोग पसंद कर रहे हैं, जिस कारण बड़ी संख्या में लोग भाजपा से जुड़ रहे हैं। उन्होंने राजद से आए गौतम यादव का भाजपा में स्वागत करते हुए कहा कि युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए भाजपा लगातार काम कर रही है। उन्होंने भाजपा की सदस्यता ग्रहण किये लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे भाजपा की नीतियों को लेकर घर-घर तक जाएं। इस मौके पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण किये गौतम यादव ने कहा कि भाजपा की नीतियों से आकर्षित होकर उन्होंने आज भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यहां बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। आज गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि वे भाजपा के सदस्य हैं। वे किसी पद की लालच में नहीं बल्कि लोगों की सेवा के लिए यहां आए हैं। इस मौके पर मोर्चा के उपाध्यक्ष जेपी चंद्रवंशी, पन्ना लाल साह, महामंत्री साहेब कुमार साह, मंत्री शिव शंकर प्रसाद, कार्यालय प्रभारी राम बाबू साह, कार्यालय मंत्री विकास शर्मा, मुन्ना लाल कुशवाहा, भूपेंद्र यादव, धर्मिता सिन्हा सहित कार्यसमिति के सदस्य उपस्थित रहे।

आवश्यकता

(1) बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत नियत वेतन में डॉ राजेन्द्र भारती प्राथमिक सह संस्कृत उच्च विद्यालय, बीहट नगर परिषद, वार्ड नं 30, जिला-बेगूसराय में 02 सहायक शिक्षक की आवश्यकता है। 01 सहायक शिक्षक, योग्यता स्नातक, कोटि-UR एवं 01 सहायक शिक्षक, योग्यता मध्यमा, कोटि-UR का है। विज्ञापन प्रकाशन से 15 दिनों के अंदर विद्यालय सचिव के पदनाम से आवेदन पत्र निबंधित डाक के माध्यम से आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन पूर्ण विवरण के साथ स्वीकार किये जायेंगे।
(2) उक्त सीमा: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि को सहायक शिक्षक पद के अभ्यर्थियों की न्यूनतम उम्र 21 वर्ष होना अनिवार्य है। अधिकतम आयु सीमा वही होगी, जो राज्य सरकार (सामान्य प्रशासन विभाग) द्वारा निर्धारित होगा।
(3) आवेदन के साथ शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र की स्वअभिप्रमाणित प्रति अवश्य संलग्न करेंगे।
(4) अभ्यर्थियों को सूचना अलग से विद्यालय सचिव द्वारा दी जायेगी। अंतर्वीक्षा में सम्मिलित होने के लिए यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।
(5) सहायक शिक्षक पद नियुक्ति हेतु आवश्यक शैक्षणिक योग्यता होना अनिवार्य होगा।
(6) नियुक्ति की सम्पूर्ण प्रक्रिया बिहार राज्य अराजकीय प्रस्वीकृत संस्कृत (मध्यमा स्तर तक) के शिक्षकों की सेवा शर्त नियमावली-2015 के अनुरूप होगी।

सचिव
डॉ. राजेन्द्र भारती प्राथमिक सह संस्कृत उच्च विद्यालय, बीहट नगर परिषद, वार्ड नं 30, जिला-बेगूसराय

कोच बनते ही गंभीर सुधार रहे हैं पुरानी गलती!

● पहले ही फैसले में दिख गई झलक! ● श्रीलंका दौरे के साथ शुरू करेंगे काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के लिए श्रीलंका दौरा एक नई शुरुआत होगा। इस दौरे पर नए हेड कोच गौतम गंभीर अपने काम की शुरुआत करेंगे। श्रीलंका दौरे के लिए सेलेक्शन कमेटी ने टी20 और वनडे टीमों का एलान भी कर दिया है और इसमें गंभीर की सोच साफ नजर आ रही है। वह भविष्य की तैयारी कर रहे हैं जिसकी बुनियाद नए और युवा चेहरे हैं। गंभीर साथ ही अपनी एक पुरानी गलती भी सुधारते नजर आ रहे हैं। आगे बढ़ें, उससे पहले बता दें कि श्रीलंका दौरे पर भारत को तीन मैचों की वनडे और इतने ही मैचों की टी20 सीरीज खेलनी है। भारत ने हाल ही में टी20 वर्ल्ड कप-2024 का खिताब जीता था। इसके बाद रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा ने टी20 को अलविदा कह दिया। टीम को अब इनके विकल्प की खोज है और टी20 के कप्तान के तौर पर सूर्यकुमार यादव को जिम्मेदारी सौंप एक खाली जगह तो भर दी गई है।

गंभीर का पछतावा

गंभीर आईपीएल में काफी सफल रहे हैं। बतौर कप्तान और बतौर कोच/मेंटर भी। उन्हीं के कप्तान रहते कोलकाता नाइट राइडर्स ने दो बार आईपीएल जीता। इसके बाद आईपीएल-2024 में वह कोलकाता के साथ बतौर मेंटर बनकर लौटे और फिर कोलकाता तीसरा खिताब जीतने में सफल रही। गंभीर साल 2011 से 2017 तक टीम के कप्तान रहे। इस दौरान गंभीर को एक बात का पछतावा रहा था। ये बात गंभीर ने आईपीएल-2024 के दौरान कही थी। गंभीर ने स्पोर्ट्सकीडा से बात करते हुए कहा था कि उन्हें केकेआर के कप्तान के तौर पर एक ही पछतावा रहा है और वो ये है कि वह सूर्यकुमार यादव के टैलेंट का अच्छे से इस्तेमाल नहीं कर पाए। सूर्यकुमार 2014 में मुंबई इंडियंस से कोलकाता आ गए थे। वह टीम के उप-कप्तान भी रहे लेकिन उन्हें ज्यादा मौके नहीं मिले। इसी बात का पछतावा गंभीर को है कि वह उस समय सूर्यकुमार की प्रतिभा के साथ न्याय नहीं कर पाए। गंभीर का मानना था कि सूर्यकुमार टी20 के बहुत बड़े खिलाड़ी हैं और इस फॉर्मेट में सफल होने के लिए उनके पास हर जरूरी काबिलियत है। 2018 में वह फिर मुंबई इंडियंस चले गए।

बना दिया कप्तान!

गौतम गंभीर का नाम जब से टीम इंडिया के हेड कोच के तौर पर खबरों में आया था तब से ही ये कयास लगाए जाने लगे थे कि सूर्यकुमार यादव को बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। हालांकि, वह टी20 टीम के कप्तान बन जाएंगे ये किसी ने नहीं सोचा था। इस रेस में हार्दिक पांड्या आग थे। लेकिन सूर्यकुमार ने पांड्या को पीछे कर दिया। गंभीर कप्तान के तौर पर जो काम नहीं कर पाए वो काम अब कोच के तौर पर करना चाहेंगे। यानी टी20 में सूर्यकुमार का टैलेंट का पूरा इस्तेमाल।

हार्दिक-नताशा का रिश्ता खत्म होने के बाद हार्दिक बोले-

बेटे की खुशी की खातिर मिलकर काम करेंगे

मुंबई (एजेंसी)। हार्दिक पांड्या और सर्बियाई मॉडल नताशा स्टेनकोविक के बीच विवाहित रिश्ता खत्म हो गया है। स्टार क्रिकेटर ने आखिरकार सोशल मीडिया पर एक पोस्ट डालकर अगल होने की पुष्टि कर दी है। पांड्या और नताशा ने मई, 2020 में कोर्ट मैरिज की थी। शादी के सात महीने के बाद नताशा ने बेटे को जन्म दिया था, जिसका नाम अगस्त्य है। पांड्या और नताशा अपने बेटे के साथ सोशल मीडिया पर अक्सर तस्वीरे साझा करते रहते हैं। दोनों ने 2 बार (हिंदु और क्रिश्चियन धर्म के अनुसार) शादी की थी। हार्दिक ने भारत में हुई शादी को खूब भव्य बनाया था। लेकिन अब दोनों के बीच रिश्ता खत्म होने से दोनों के फैंस भी निराश हैं।

हार्दिक ने तलाक को लेकर अपनी पोस्ट में आगे लिखा, यह नताशा और मेरे लिए एक मुश्किल फैसला था। हमने एक परिवार के तौर पर बढ़ते हुए आनंद लिया, एक दूसरे की रिस्पेक्ट की और साथ दिया। हमें अगस्त्य का तोहफा मिला। वही अब हम दोनों की जिंदगी का सेंटर पॉइंट रहेगा। हम एक दूसरे का पूरा साथ देंगे ताकि हम अपने बेटे अगस्त्य के लिए हर वो काम करें, जिससे उसे खुशी मिले। हम सभी से रिक्वेस्ट करते हैं

कि इस संवेदनशील मौके पर आप लोग हमें प्राइवेसी देंगे।

हार्दिक पांड्या ने सोशल मीडिया पर स्क्रीन शॉट शेयर किया है जिसमें दोनों के अलग होने की पुष्टि है। हार्दिक ने इसमें लिखा- 4 साल साथ रहने के बाद, नताशा और मैंने आपसी सहमति से अलग होने का फैसला किया है। हमने एक साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया और इसमें अपना सब कुछ लगा दिया और हमारा मानना ??है कि यह हम दोनों के लिए सर्वोत्तम हित में है। हमारे लिए यह एक कठिन निर्णय था, उस खुशी, आपसी सम्मान और सहयोग को देखते हुए जिसका हमने एक साथ आनंद लिया और जैसे-जैसे हमारा परिवार बढ़ता गया। हमें अगस्त्य का आशीर्वाद प्राप्त है, जो हम दोनों के जीवन के केंद्र में बने रहेंगे।

कौन है नताशा स्टेनकोविक

नताशा स्टेनकोविक मूल रूप से सर्बिया की हैं और वह एक मॉडल और डांसर हैं। नताशा कई बॉलीवुड फिल्मों में काम कर चुकी हैं। नताशा को प्रकाश झा की फिल्म के एक गाने हमारी अटरिया से पहचान मिली थी। इसके बाद वह रियलटी शो बिग बॉस में नजर आई थी, लेकिन वह रैपर बादशाह के गाने डीजे वाले बाबू के बाद रातों-रात मशहूर हो गई। इसके बाद नताशा ने कई मशहुर फिल्मों में आयटम सॉन्ग में परफॉर्म किया।

ऐसे हुई थी पांड्या और नताशा की मुलाकात

एक इंटरव्यू में पांड्या ने यह खुलासा किया था कि उनकी और नताशा स्टानकोविक की मुलाकात एक नाइट क्लब में हुई थी। पांड्या ने इसके साथ यह भी खुलासा किया था कि नताशा को पहली मुलाकात में यह पता नहीं था कि वह एक क्रिकेटर है। उन्होंने कहा कि मैं नताशा के लिए केवल कैप और चेन पहने हुए कोई अनजान लड़का हूं। उन्होंने बताया कि पहली मुलाकात बाद उन दोनों के बीच दोस्ती हुई, दोनों ने एक दूसरे को डेट किया और दोनों का प्यार शादी के बंधन में बंध गया।

बाबर, शाहीन, रिजवान को झटका, ग्लोबल टी20 कनाडा के लिए नहीं मिलेगी मंजूरी!

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के स्टार तिकड़ी बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और शाहीन अफरीदी को आगामी ग्लोबल टी20 कनाडा में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मिलने की संभावना नहीं है। सूत्रों ने जियो न्यूज को बताया कि लीग शेड्यूल के बावजूद खिलाड़ियों को एनओसी नहीं मिलेगी ताकि पाकिस्तान के अंतरराष्ट्रीय मैचों से किसी तरह का टकराव न हो। पाकिस्तान बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगा जिसकी शुरुआत 21 अगस्त से होगी।

कनाडाई लीग 25 जुलाई से 11 अगस्त तक खेली जाएगी। यह भी बताया गया कि एनओसी न मिलने का कारण यह है कि सभी प्रारूपों में खेलने वाले खिलाड़ियों को नीति के अनुसार प्रमाण पत्र जारी नहीं किया जाएगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) खिलाड़ियों को एनओसी जारी करने के पक्ष में नहीं है, क्योंकि उनके आगे बहुत व्यस्त कार्यक्रम है। स्टार पेसर नसीम शाह को भी पिछले सप्ताह द हंड्रेड में खेलने के लिए एनओसी नहीं दी गई थी।

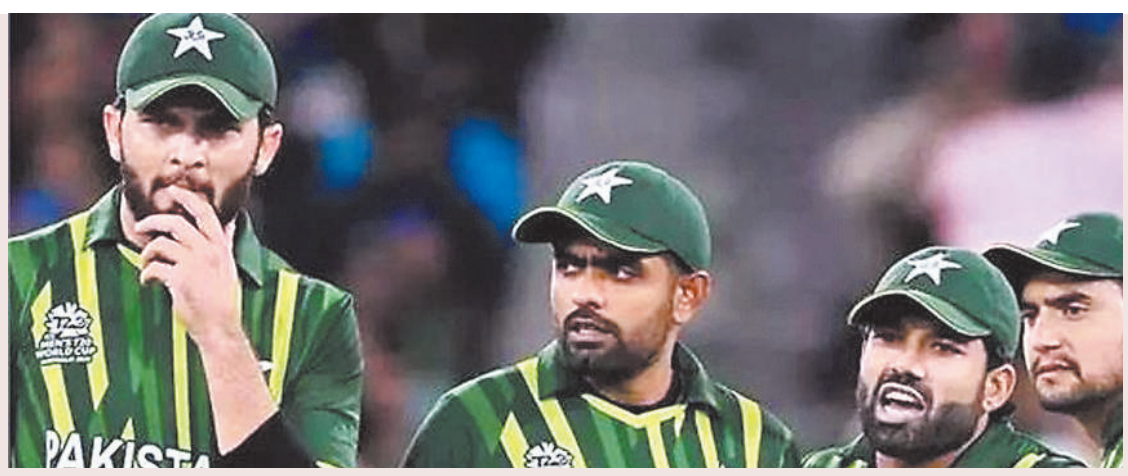

सूत्रों के हवाले से जियो न्यूज ने कहा, पाकिस्तान के क्रिकेटर द्वारा प्रस्तुत आवेदन की समीक्षा करने के बाद, एनओसी देने से इनकार करने का निर्णय एक निवारक उपाय के रूप में लिया गया है। नसीम के आवेदन को चोटों से बचाने के लिए खारिज कर दिया गया है क्योंकि युवा खिलाड़ी पाकिस्तान के लिए तीनों प्रारूपों में खेलता है और पिछले साल चोटों और फिटनेस चुनौतियों का सामना किया है। स्टार तिकड़ी के अलावा मोहम्मद आमिर, मोहम्मद नवाज, आसिफ अली और इफ्तिखार अहमद के पास भी ग्लोबल टी 20 कनाडा अनुबंध हैं।

इस सप्ताह की शुरुआत में पीसीबी के अध्यक्ष नकवी ने कहा कि खिलाड़ियों को कुछ मानदंडों के आधार पर एनओसी मिलेगी। जो खिलाड़ी मानदंडों को पूरा करते हैं, उन्हें एनओसी मिलेगी। पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी ने कहा, खिलाड़ियों को उनकी फिटनेस और प्रदर्शन के आधार पर पदोन्नत किया जाएगा। उन खिलाड़ियों के लिए कोई जगह नहीं है जो मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं।

संजू सैमसन को वनडे से बाहर रखने पर पूर्व क्रिकेटर डोड्डा गणेश ने बीसीसीआई पर साधा निशाना

नईदिल्ली (एजेंसी). पूर्व भारतीय क्रिकेटर डोड्डा गणेश ने बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड) पर श्रीलंका के आगामी दौरे के लिए वनडे टीम में संजू सैमसन को नजरअंदाज करने का आरोप लगाया है। गौरतलब है कि बीसीसीआई ने गुरुवार 18 जुलाई को श्रीलंका दौरे के लिए टीम की घोषणा की और कई चौंकाने वाले चयन किए। भारत का श्रीलंका दौरा 27 जुलाई से तीन मैचों की टी20 सीरीज के साथ शुरू होगा जिसके बाद 2 अगस्त से तीन टी20 मैच खेले जाएंगे।

विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन जिम्बाब्वे के खिलाफ अंतिम मैच में अर्धशतक लगाने के बाद टी20आई टीम में अपनी जगह बनाए रखने में सफल रहे। हालांकि वह अपने आखिरी मैच में शतक लगाने के बावजूद वनडे टीम में जगह पाने में असफल रहे। सैमसन को वनडे से बाहर किए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए डोड्डा गणेश ने बीसीसीआई पर उन्हें बाहर करने और उनकी जगह शिवम दुबे को चुनने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, वनडे में संजू सैमसन की जगह शिवम दुबे को शामिल करना हास्यास्पद है। बेचारे संजू ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपनी पिछली सीरीज में शतक लगाया था। हमेशा वही क्यों?

गणेश ने एक्स पर लिखा, मैं इस युवा खिलाड़ी के लिए दिल से दुखी हूं। सैमसन ने 50 ओवर के प्रारूप में अपने आखिरी प्रदर्शन में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ छह चौकों और तीन छक्कों की मदद से 108 (114) रन बनाकर अपना पहला वनडे शतक लगाया। अपने करियर में अब तक खेले गए 16 वनडे मैचों में सैमसन ने 56.66 की औसत और 99.60 के स्ट्राइक रेट से एक शतक और तीन अर्द्धशतक के साथ 510 रन बनाए हैं।

इस बीच, सैमसन से पहले शिवम दुबे और रियान पराग ने वनडे टीम में जगह बनाई। दुबे ने वेस्टइंडीज के खिलाफ 2019 में आखिरी बार प्रारूप खेला था जिसके बाद उन्हें पांच साल बाद वनडे टीम में शामिल किया गया। 31 वर्षीय खिलाड़ी ने प्रारूप में अपने एकमात्र प्रदर्शन में 9 रन बनाए और विकेट नहीं ले सके। दूसरी ओर, रियान पराग ने जिम्बाब्वे के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई टी20आई श्रृंखला में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद वनडे में अपना पहला प्रदर्शन किया। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने सीरीज की दो पारियों में सिर्फ 24 रन बनाए।

सूर्यकुमार यादव टी20 तो रोहित वनडे सीरीज में संभालेंगे टीम इंडिया की कमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दाएं हाथ के बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को श्रीलंका के खिलाफ भारत की टी20 सीरीज के लिए कप्तान बनाया गया है, जबकि अनुभवी सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा वनडे चरण में टीम की कप्तानी करना जारी रखेंगे। बीसीसीआई ने वीरवार शाम बैठक के बाद महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि पिछले महीने बारबाडोस में 2024 टी20 विश्व कप जीत के बाद जिम्बाब्वे में भारत को 4-1 से टी20 सीरीज जीताने वाले शुभमन गिल दोनों टीमों में उपकप्तान होंगे।

सूर्यकुमार, जो आईसीसी पुरुष टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर 2 पर हैं, ने सभी प्रारूपों में भारतीय घरेलू क्रिकेट सर्किट में मुंबई टीम की कप्तानी की है। उन्होंने वनडे विश्व कप फाइनल के बाद पिछले नवंबर में भारत को ऑस्ट्रेलिया पर 4-1 टी20 जीत दिलाई और फिर दिसंबर 2023 में दक्षिण अफ्रीका में उनकी कप्तानी में भारत ने सीरीज 1-1 से ड्रा कराई। दिलचस्प बात यह है कि गिल को ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या से पहले नया टी20ई उप-कप्तान बनाया गया है। सूर्यकुमार के साथ-साथ यशस्वी जयसवाल, रिंकू सिंह, संजू सैमसन, हार्दिक पंड्या और रवि बिश्नोई को सिर्फ टी20 सीरीज के लिए चुना गया है।

भारत की टी20 टीम

सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल (उपकप्तान), यशस्वी जयसवाल, रिंकू सिंह, रियान पराग, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, रवि बिश्नोई, अर्शदीप सिंह, खलील अहमद, मोहम्मद सिराज।

भारत की वनडे टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल (उपकप्तान), विराट कोहली, केएल राहुल (विकेटकीपर), ऋषभ पंत (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर, शिवम दुबे, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, वाशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह, रियान पराग, अक्षर पटेल, खलील अहमद, हर्षित राणा।

पेरिस ओलंपिक 2024 में खेलेगी इजरायली फुटबॉल टीम, फीफा ने प्रतिबंध पर फैसला टाला

ज्यूरिख (एजेंसी)। फीफा ने इजरायल को अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से प्रतिबंधित करने के फलस्तीन के प्रस्ताव पर फैसला टाल दिया है, जिससे इजरायली फुटबॉल टीम पेरिस ओलिंपिक में खेल सकेगी। दो महीने पहले फलस्तीन के प्रस्ताव पर निष्पक्ष कानूनी आकलन की घोषणा के बाद फीफा को आमसभा की असाधारण बैठक में शनिवार को इस पर फैसला लेना था।

यह फैसला ओलिंपिक की फुटबॉल स्पर्धा शुरू होने से चार दिन पहले आता, जिसमें इजरायल को जापान, माली और पराग्वे के साथ एक ग्रुप में रखा गया है। फीफा ने बृहस्पतिवार को कहा कि प्रक्रिया पूरी करने में अभी और समय लगेगा यानी फैसला अब ओलिंपिक के बाद आएगा।

गुजरात टाइटन्स खरीदने की तैयारी में अडानी और टोरेंट ग्रुप

अहमदाबाद (एजेंसी)। अडानी समूह और टोरेंट समूह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटन्स में नियंत्रक हिस्सेदारी की बिक्री के लिए निजी इक्विटी फर्म सीवीसी कैपिटल पार्टनर्स के साथ बातचीत कर रहे हैं। सीवीसी आईपीएल फ्रेंचाइजी में बहुमत हिस्सेदारी बेचने को तैयार है जबकि कुछ हिस्सेदारी बरकरार रखेगी। यह तब हुआ है जब भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की लॉक-इन अवधि, जो नई टीमों को हिस्सेदारी बेचने से रोकती है, फरवरी 2025 में समाप्त हो जाएगी। गुजरात टाइटन्स तीन साल पुरानी फ्रेंचाइजी है जिसकी कीमत 1 बिलियन डॉलर से 1.5 बिलियन डॉलर के बीच हो सकती है। सीवीसी ने 2021 में 5,625 करोड़ में फ्रेंचाइजी खरीदी थी। इस मामले से जुड़े एक अधिकारी के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया, %2021 में आईपीएल की अहमदाबाद फ्रेंचाइजी के मालिक बनने का मौका चूकने के बाद अडानी और टोरेंट दोनों गुजरात टाइटन्स में बहुमत हिस्सेदारी खरीदने के लिए आक्रामक रूप से होड़ कर रहे हैं। सीवीसी के लिए यह फ्रेंचाइजी में अपनी हिस्सेदारी का मुद्रीकरण करने का एक शानदार अवसर है। अन्य अधिकारी ने कहा, आईपीएल फ्रेंचाइजी निवेशकों का बहुत ध्यान आकर्षित कर रही हैं, क्योंकि लीग ने खुद को ठोस नकदी प्रवाह के साथ एक आकर्षक संपत्ति के रूप में स्थापित किया है। गौतम अडानी ने पहले ही महिला प्रीमियर लीग और यूएई वोर्ड इंटरनेशनल लीग टी 20 में टीमों का अधिग्रहण करके क्रिकेट में निवेश किया है।

कोहली की ब्रांड वैल्यू में भारी इजाफा

शाहरुख-रणवीर को पछाड़ बने सबसे महंगे सेलिब्रिटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट आइकन विराट कोहली बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान और रणवीर सिंह को पछाड़कर भारत के सबसे महंगे सेलिब्रिटी बन गए हैं। क्रोल की सेलिब्रिटी ब्रांड वैल्यूएशन रिपोर्ट 2023 के अनुसार कोहली की ब्रांड वैल्यू में 29त्न की वृद्धि हुई है, जो 227.9 मिलियन डॉलर तक पहुंच गई है। यह उल्लेखनीय वृद्धि कोहली को भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों की सूची में शीर्ष स्थान पर ले जाती है। रिपोर्ट सेलिब्रिटी एंडोर्समेंट के क्षेत्र में दिलचस्प पैटर्न पर प्रकाश डालती है, जो ब्रांडों के साथ सेलिब्रिटीज के जुड़ाव में उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाती है। साल-दर-साल तुलना में शीर्ष 20 हस्तियों ने अपने द्वारा प्राप्त ब्रांड एंडोर्समेंट की संख्या में 14.2त्न की वृद्धि देखी, यह प्रवृत्ति विज्ञापन उद्देश्यों के लिए टेलीविजन और डिजिटल प्लेटफार्मों पर बढ़ते जोर के कारण है। विराट कोहली एंडोर्समेंट परिदृश्य पर हावी हैं, 227.9 मिलियन डॉलर के ब्रांड मूल्य पर कब्जा करते हुए सर्वोच्च स्थान हासिल किया।

संक्षिप्त समाचार

बुलंदशहर में नकली दूध कारोबार का भंडाफोड़, दिल्ली-एनसीआर में होता सप्लाई

बुलंदशहर, एजेंसी। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने यूपी के बुलंदशहर में नकली दूध कारोबार का भंडाफोड़ किया है। टीम ने टैंकर में भरे 14 सौ लीटर नकली दूध का नमूना लेकर नष्ट कराया। टैंकर चालक की निशानदेही पर स्याना क्षेत्र के गांव बरौली बासुदेवपुर स्थित डेयरी पर छापा मारा। जांच में सामने आया कि यहां से गजरौला और सिकंदराबाद और दिल्ली-एनसीआर में सप्लाई के लिए दूध भेजा जाता है। टीम ने बताया कि नकली दूध बनाने के कारोबार में संलिप्त लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की कार्रवाई की जा रही है। सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विनीत कुमार ने बताया कि सूचना मिली कि सिकंदराबाद स्थित एक डेयरी पर नकली दूध का टैंकर पहुंच रहा है। जिसके बाद खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम मौके पर पहुंची और जांच के लिए टैंकर को रोक लिया। टैंकर में लगभग 1400 लीटर दूध भरा हुआ था। जिसका नमूना लेकर जांच के लिए भेजा गया। नकली दूध की पुष्टि होने के बाद उसे नष्ट कर दिया गया। टैंकर चालक ने पूछताछ में बताया कि वह स्याना क्षेत्र के गांव बरौली बासुदेवपुर स्थित डेयरी से लेकर आया है। दूध को ग्लूकोज, रिफाइंड तेल आदि चीजों से तैयार किया है। टीम ने दूध को नष्ट करने के बाद स्याना क्षेत्र में बरौली बासुदेवपुर स्थित डेयरी पर जांच की। उसके बाद खानपुर के ग्राम शेखपुर गढ़वा स्थित डेयरी पर छापा मारा गया। जांच में सामने आया कि यहां से गजरौला और सिकंदराबाद के लिए दूध भेजा जाता है। टीम ने डेयरी से 15 किलो व्हे पाउडर, डेढ़ सौ लीटर लिक्विड ग्लूकोज, रिफाइंड समेत अन्य नकली दूध बनाने में काम आने वाली सामग्री को जब्त कर लिया गया। बताया कि नकली दूध बनाने के कारोबार में संलिप्त लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की कार्रवाई की जा रही है। कार्रवाई के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी राममिलन राणा, महेश कुमार ,अमित कुमार, मनीशा शर्मा आदि मौजूद रहे।

तमिलनाडु के डिप्टी सीएम बनने वाले हैं उदयनिधि स्टालिन

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे और राज्य सरकार में मंत्री उदयनिधि स्टालिन अब उपमुख्यमंत्री बनने की तैयारी में हैं। संभावनाएं जताई जा रही हैं कि वह अगस्त में पद संभाल सकते हैं। कहा जा रहा है कि उदयनिधि ने ही सरकार में बड़े स्तर पर स्वीकृति हासिल करने और पिता का बोझ हल्का करने के लिए खुद के प्रमोशन पर जोर दिया था। हालांकि, पहले भी अटकलें थीं कि उन्हें डिप्टी सीएम बनाया जा सकता है। एक रिपोर्ट में डीएमके के सूत्रों के हवाले से लिखा है कि उदयनिधि 22 अगस्त से पहले डिप्टी सीएम बनाए जाने वाले हैं। सीएम स्टालिन के अमेरिका दौरे से पहले उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। अखबार से बातचीत में एक वरिष्ठ मंत्री ने कहा है कि यह पद उदयनिधि पर थोपा नहीं जा रहा है, बल्कि उन्होंने खुद इसके लिए अनुरोध किया है। मंत्री ने कहा, अगर वह अनिच्छुक नेता होते, तो और जिम्मेदारी वाला पद नहीं मांगते। उनके युवा और सेलेब्रिटी स्टेटस के कारण इन अफवाहों को हवा मिली। खास बात है कि डिप्टी सीएम बनने के बाद उदयनिधि 2026 विधानसभा चुनाव में और अहम भूमिका निभाने के लिए तैयार हो जाएंगे। खास बात है कि राज्य में अटका कैबिनेट फेरबदल भी होना है। अखबार से बातचीत में डीएमके के एक नेता ने कहा, फेरबदल को लेकर अब तक अंतिम फैसला नहीं लिया गया है, लेकिन कई मंत्रियों के प्रदर्शन को ध्यान में रखा जाएगा। जनवरी 2024 में सीएम स्टालिन बेटे के प्रमोशन को लेकर जारी चर्चाओं को अफवाह बता चुके हैं। साथ ही उन्होंने इसे विरोधियों का काम करार दिया था। उस दौरान उन्होंने उदयनिधि की ही बात को दोहराया था कि उन्हें मिलाकर कैबिनेट के सभी मंत्री सीएम के डिप्टी के तौर पर काम कर रहे हैं। बीते साल सितंबर में एक कार्यक्रम के दौरान उदयनिधि ने सनातन धर्म की तुलना डेंगू और मलेरिया से कर दी थी। उन्होंने कहा था, कुछ चीजों का विरोध नहीं किया जा सकता, उन्हें सिर्फ खत्म किया जा सकता है। हम डेंगू, मच्छरों, मलेरिया या कोरोना वायरस का विरोध नहीं कर सकते। हमने इन्हें जड़ से खत्म करना होगा। ऐसे ही हमें सनातन को भी खत्म करना होगा।

हमले के बाद हिंदुओं को घर छोड़ भागना पड़ा, झारखंड में कश्मीर जैसे हालातः सांसद निशिकांत दुबे

पाकुड़, एजेंसी। झारखंड के पाकुड़ में एक लड़की का वीडियो वायरल करने वाले आरोपी की पिटाई के बाद जमकर हिंसा हुई। पथराव और तोड़फोड़ की गई। यहां तक कि पुलिस को भी निशाना बनाया गया। पथराव में तीन पुलिसकर्मी भी घायल हो गए। भारतीय जनता पार्टी का आरोप है कि हिंदुओं के घरों को इस कदर निशाना बनाया गया कि उन्हें जान बचाकर पलायन करना पड़ा। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और सांसद निशिकांत दुबे ने कहा है कि झारखंड के संथाल परगना में हालात कश्मीर जैसे हो गए हैं।

हिंसा के बाद गांव का वीडियो साझा करते हुए सांसद निशिकांत दुबे ने कहा, झारखंड में कांग्रेस के शासन में यह पाकुड़ का तारानगर इलामी गांव वीरान हो गया। दोष क्या, एक नाबालिग लड़की का वीडियो बनाकर मुस्लिम लड़का ब्लैकमेल कर रहा था। विरोध करने पर पूरे हिंदू को ही गांव छोड़ने के लिए पश्चिम बंगाल से बांग्लादेशी घुसपैठिया आ गए। झारखंड पुलिस अब पश्चिम बंगाल के लोगों के हाथों असहाय। संथालपरगना कश्मीर घाटी बनने की राह पर, जहां हिंदू विस्थापित हुए अपने ही देश में। बाबू लाल

मरांडी ने इस घटना के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर जोरदार प्रहार किया। उन्होंने कहा, जब रोम जल रहा था, तब नीरो बंसी बजा रहा था। आज के संदर्भ में ये बात हेमंत सोरेन पर भी सटीक लागू होती है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि झारखंड का संथाल परगना क्षेत्र बांग्लादेशी घुसपैठियों के आतंक की आग में झुलस रहा है और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भ्रमण में व्यस्त हैं। घुसपैठियों के आतंक से संथाल परगना के आदिवासी मूलवासी अब अपने घरों से ही पलायन करने को विवश हो चुके हैं। मरांडी ने आरोप लगाया कि मुस्लिम तुष्टिकरण में हिंदुओं पर हमले के बाद कार्रवाई नहीं की जा रही है। उन्होंने कहा, झारखंड के हालात 90 के दशक की कश्मीर और वर्तमान बंगाल-केरल के जैसे बदतर बनते जा रहे हैं, जहां राज्य सरकारें मुस्लिम तुष्टिकरण की आड़ में हिन्दुओं के उपर हो रहे हमले को देखकर आंखे मूंद ले रही है।

उन्होंने कहा कि पाकुड़ के तारानगर गांव में मुस्लिम युवक द्वारा युवती को ब्लैकमेल किए जाने का विरोध करने पर बांग्लादेशी घुसपैठयों ने हिन्दुओं के घरों पर हमले कर दिए। ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर भी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की चुप्पी बताती है कि उनकी सरकार का मौन समर्थन इन घुसपैठियों को प्राप्त है। मरांडी ने कहा, हेमंत जी, याद रखिए झारखंड को तालिबान नहीं बनने दिया जाएगा... आपकी सरकार कुछ महीनों की मेहमान है। फिर इन घुसपैठियों और उनके सरपरस्तों को भी प्रदेश से बाहर खदेड़ा जाएगा। पाकुड़ के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के तारानगर गांव में लड़की का फोटो/वीडियो वायरल करने के आरोपी युवक से मारपीट के बाद दो पक्षों में हिंसक झड़प हो गई। झड़प की सूचना पर पहुंची पुलिस पर भी एक पक्ष के लोगों ने जमकर पथराव किया। इसमें तीन पुलिसकर्मी घायल हो गए। वहीं पुलिस की दो गाड़ी भी क्षतिग्रस्त कर दी गई। ग्रामीणों के अनुसार, नवादा गांव में एक मुस्लिम समुदाय के लड़के ने हिंदू लड़की की फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इसके बाद लड़की के परिजनों ने आरोपी लड़के के साथ बुधवार को मारपीट की थी। लड़के को बचाने गई उसकी मां के साथ भी मारपीट की गई। इस बात पर गुरुवार की सुबह सांप्रदायिक हिंसा हो गई। पाकुड के डीसी मृत्युंजय कुमार बरणवाल ने कहा कि प्रशासनिक कार्रवाई के बाद गांव में स्थिति शांतिपूर्ण है। धारा 144 लागू कर दी गई है।

पुलिस ने चौकी में 4 दोस्तों को बेरहमी से पीटा, जेब में रखे पैसे निकाले; ऑडियो वायरल होने पर 3 निलंबित

नईदिल्ली, एजेंसी। ग्रेटर नोएडा में एक बार फिर खाकी पर दाग लगा है। ग्रेटर नोएडा के हल्दौनी मोड़ पर कार नहीं रोकने की बात कहकर ट्रैफिक पुलिसकर्मियों ने चार युवकों को चौकी में बंद कर बुरी तरह पीटा। मारपीट के दौरान का ऑडियो एक पीड़ित युवक के मोबाइल में रिकॉर्ड हो गया। सोशल मीडिया पर इसके वायरल होने और पीड़ितों के परिजनों द्वारा शिकायत करने के बाद गुरुवार को ट्रैफिक पुलिस के एक ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर, एक कांस्टेबल और एक हेड कांस्टेबल को निलंबित कर दिया गया।

नोएडा के सलारपुर गांव का रहने वाला एक युवक ग्रेटर नोएडा के एक कॉलेज से बीकॉम की पढ़ाई कर रहा है। छात्र ने बताया कि रविवार को वह और उसके तीन दोस्त खरीदारी करने के लिए कार से सूरजपुर जा रहे थे। जब वह कुलेसरा पुल से आगे हल्दौनी मोड़ पर पहुंचे तो अचानक उनकी कार के आगे एक ट्रैफिक पुलिसकर्मी आ गया। पुलिसकर्मी ने कार चला रहे युवक से कहा कि पीछे एक सिपाही ने तुम्हें हाथ दिया था तो गाड़ी क्यों नहीं रोकी। इस पर युवक ने कहा कि सर मुझे किसी ने हाथ नहीं दिया और मुझे कोई पुलिसकर्मी दिखाई नहीं दिया।

इसी बीच पुलिसकर्मी ने कार की चाबी निकाल ली और चारों युवकों को नजदीक की कुलेसरा पुलिस चौकी ले गया। पीड़ित युवक ने बताया कि वहां पहले से 8-10 पुलिसकर्मी मौजूद थे। पुलिसकर्मियों ने चारों युवकों को चौकी में बंद कर मारपीट करना शुरू कर दिया। इस दौरान एक युवक की पैंट की जेब में रखे मोबाइल में पिटाई के दौरान का ऑडियो रिकॉर्ड हो गया। इसमें पुलिसकर्मियों द्वारा मारपीट करने, अपशब्द कहने और युवकों के चिल्लाने की आवाज सुनाई दे रही है। पुलिसकर्मी इसके बाद उन्हें ईकोटेक तीन कोतवाली ले गए। पीड़ित छात्रों का आरोप है कि उन्हें छोड़ने के लिए 50 हजार रुपए की रिश्वत मांगी गई। पीड़ित युवकों ने पैसा देने से मना कर दिया तो उनकी जेब में रखे तीस हजार रुपए निकाल लिए गए।

सेब के बागानों पर लगी अल्टरनेरिया बीमारी को महामारी घोषित करने की मांग

5 हजार करोड़ के नुकसान का खतरा

शिमला, एजेंसी। कांग्रेस विधायक कुलदीप सिंह राठौर ने गुरुवार को राज्य सरकार से सेब के बागानों पर लगी अल्टरनेरिया बीमारी को महामारी घोषित करने की मांग की और इस बीमारी की रोकथाम के लिए केंद्र से भी सहयोग करने का आग्रह किया है। प्रदेश की पांच हजार करोड़ की सेब आर्थिकी पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। सेब के बगीचे अल्टरनेरिया नामक बीमारी की चपेट में आ गए हैं जिसका सीधा असर सेब के आकार और रंग पर हो रहा है। सेब के पत्ते समय से पहले ही झड़ रहे हैं जिस वजह से प्रदेश के बागवान खासे चिंतित हैं। शिमला में पत्रकार वार्ता कर कांग्रेस विधायक एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता राठौर ने सेब पर फैली इस बीमारी को महामारी घोषित करने की मांग की है और केंद्र सरकार से भी बीमारी की रोकथाम के लिए सहयोग की बात कही है। राठौर ने कहा कि अल्टरनेरिया बीमारी प्रदेश के कई इलाकों में महामारी का रूप धारण कर चुकी है। कुछ इलाकों में 95 फ़ीसदी बगीचे बीमारी की चपेट में आ गए हैं। ऐसे में प्रदेश सरकार केंद्र सरकार से बातचीत कर इसकी रोकथाम के लिए कदम उठाए। कई साल पहले स्कैब बीमारी हुई थी.... उन्होंने कहा कि इससे पहले 1982-83 में भी सेब पर स्कैब बीमारी लग गई थी जिस पर समय रहते कदम उठाए गए और केन्द्र से मदद ली गई। राज्य सरकार गम्भीरता को समझते हुए अल्टरनेरिया बीमारी की रोकथाम के लिए कदम उठाए और केंद्र से भी मुद्दे को उठाने का काम करे। हालांकि, बागवानी विभाग ने टीमें भेजी हैं, लेकिन इस बीमारी को जड़ से खत्म करने के लिए अनुसंधान की भी जरूरत है। मार्केट में उपलब्ध दवाइयों की गुणवता पर भी सवाल उठ रहे हैं इसकी भी मॉनिटरिंग होनी चाहिए। इसके अलावा विदेशों से आयात हो रहे सेब के पौधों पर भी शक की नजरें है। इन पौधों का क्वारंटाइन होना चाहिए।

कांवड़ रूट पर नाम विवाद के बीच बीजेपी नेता नकवी का छलका दर्द, कहा- जनम जात मत पूछिए

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में 22 जुलाई से शुरू होने वाली कांवड़ यात्रा से पहले पुलिस ने दुकानदारों के नामों को बड़े अक्षर में लिखने के लिए कहा है। मुजफ्फरनगर के साथ-साथ शामली और सहारनपुर जिलों में भी पुलिस ने ऐसा ही आदेश जारी किया है। इस आदेश के बाद विवाद बढ़ गया है। अब खुद बीजेपी के वरिष्ठ मुस्लिम नेता ने अपनी ही सरकार के अधिकारियों को घेरा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और बीजेपी के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि आस्था का सम्मान होना चाहिए, लेकिन अस्पृश्यता का संरक्षण नहीं होना चाहिए। इसके साथ ही, उन्होंने पंक्तियां लिखते हुए कहा, जनम जात मत पूछिए। नकवी ने भले ही अपने पोस्ट में कहीं भी कांवड़ यात्रा या दुकानदारों के नामों को लिखे जाने के आदेश का जिक्र नहीं किया है, लेकिन पोस्ट से साफ है कि दुकानदारों के नामों पर उपजे विवाद पर ही उनका दर्द छलका है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

एक्स पर लिखा, कुछ अति-उत्साही अधिकारियों के आदेश हड़बड़ी में गडबड़ी वाली, अस्पृश्यता की बीमारी को बढ़ावा दे सकते हैं। आस्था का सम्मान होना ही चाहिए, पर अस्पृश्यता का संरक्षण नहीं होना चाहिए। जनम जात मत पूछिए, का जात अरु पात। रैदास पूत सब प्रभु के,कोए नहिं जात कुजात। वहीं, पुलिस-प्रशासन के इस कदम का समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव, बसपा चीफ मायावती समेत कई विपक्षी नेताओं खुलकर विरोध जताया है।

अखिलेश यादव ने आदेश को लेकर एक अखबार में प्रकाशित खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए एक्स पर कहा, ...और जिसका नाम गुड्डू, मुन्ना, छोटू या फत्ते है, उसके नाम से क्या पता चलेगा? उन्होंने कहा, माननीय न्यायालय स्वतः संज्ञान ले और ऐसे प्रशासन के पीछे के शासन तक की मंशा की जांच करवाकर उचित दंडात्मक कार्रवाई करे। ऐसे आदेश सामाजिक अपराध हैं, जो सौहार्द के शांतिपूर्ण वातावरण को बिगाड़ना चाहते हैं। वहीं, बसपा प्रमुख मायावती ने एक्स पर कहा,पश्चिमी उप्र व मुजफ्फरनगर जिला के कांवड़ यात्रा मार्ग में पड़ने वाले सभी होटल, ढाबा, ठेला आदि के दुकानदारों को मालिक का पूरा नाम प्रमुखता से प्रदर्शित करने का नया सरकारी आदेश एक गलत परम्परा है जो सौहार्दपूर्ण वातावरण को बिगाड़ सकता है। जनहित में सरकार इसे तुरंत वापस ले।

ओवैसी ने कहा- यूपी सरकार अस्पृश्यता को बढ़ावा दे रही: ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने भी कांवड़ यात्रा मार्ग पर स्थित दुकानदारों के नाम प्रदर्शित करने के लिए जारी किए गए परामर्श को लेकर बीजेपी नीत उत्तर प्रदेश सरकार की आलोचना की और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को इस संबंध में लिखित आदेश जारी करने की चुनौती दी। हैदराबाद के सांसद ने इसे स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण आदेश करार दिया और आरोप लगाया कि यह दर्शाता है कि सरकार उत्तर प्रदेश और पूरे देश में मुसलमानों को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाना चाहती है।

कमला हैरिस अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा से प्रेरित, वेंस के खिलाफ टिप्पणी पर तुलसी गबार्ड ने साधा निशाना

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी कांग्रेस की पूर्व सदस्य तुलसी गबार्ड ने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस पर निशाना साधा। गबार्ड ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथी जेडी वेंस के खिलाफ टिप्पणी को लेकर उपराष्ट्रपति की आलोचना की। गबार्ड ने कहा कि हैरिस अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा से प्रेरित हैं, उन्हें उपराष्ट्रपति के पद पर नहीं रहना चाहिए।

बता दें कि ट्रंप ने जेडी वेंस को उपराष्ट्रपति पद के लिए अपना प्रत्याशी चुना है, जिसके बाद कमला हैरिस ने वेंस पर टिप्पणी की। कमला ने अमेरिकियों को चेतावनी दी थी कि वेंस केवल ट्रंप के प्रति वफादार रहेंगे, अमेरिका के प्रति नहीं। गबार्ड ने हैरिस को अतीत की याद दिलाई और कहा कि जेडी वेंस ने 9/11 के हमलों के बाद खुद को मरीन कॉर्प्स में भर्ती कराया। 2005 में उन्हें इराक में तैनात किया गया। उन्होंने पूछा, क्या कमला हैरिस किसी भी समय हमारे देश की सेवा में अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार थीं। हवाई की पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष का यह बयान कमला हैरिस के उस बयान के बाद आया है, जिसमें उन्होंने बुधवार को कहा था कि जेडी वेंस डोनाल्ड ट्रंप और उनके चरम

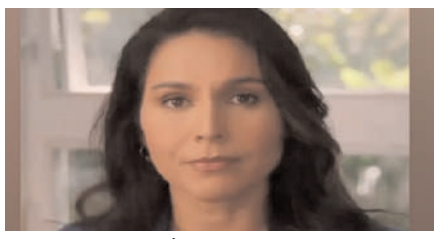

एजेंडे के लिए रबर स्टैंप के रूप में काम करेंगे। बुधवार को जारी एक वीडियो में, हैरिस ने कहा, डोनाल्ड ट्रंप ने अपने नए साथी जेडी वेंस को चुना है। ट्रंप किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में थे, जिसे वह जानते थे कि वह उनके चरम एजेंडे के लिए रबर स्टांप होगा। उन्होंने आगे कहा, कोई गलती न करें, जेडी वेंस केवल ट्रंप के प्रति वफादार होंगे, हमारे देश के प्रति नहीं। एबीसी न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, हैरिस ने कहा, यदि वेंस निर्वाचित होते हैं तो वह ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के लिए चरम परियोजना 2025 को लागू करने में मदद करेंगे, जो हेड स्टार्ट और मेडिकेयर जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को लक्षित करेगा।

राष्ट्रपति जो बाइडन को कोविड-19 के कारण सांस से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ रहा है- व्हाइट हाउस

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन तीसरी बार कोविड पॉजिटिव पाए गए। बाइडन के स्वास्थ्य को लेकर व्हाइट हाउस ने बताया कि उन्हें कोविड-19 के कारण सांस से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसके लिए उन्हें लगातार पैक्स्लोविड दिया जा रहा है। राष्ट्रपति बाइडन के चिकित्सक डॉ. केविन ओकोनोर ने बताया कि उन्हें (बाइडन) को बुखार नहीं है और कोविड-19 के लक्षण सामान्य है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्हाइट हाउस की तरफ से जारी बयान पर डॉ. केविन ने कहा, कोविड-19 के कारण राष्ट्रपति को सांस से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें लगातार पैक्स्लोविड दिया जा रहा है। उन्हें बुखार नहीं है। वह अपना काम करते रहेंगे। उन्होंने आगे कहा, राष्ट्रपति की अनुमति के अनुसार, मैं आपको उनके स्वास्थ्य को लेकर जानकारी साझा करता रहूंगा। जैसा कि हमने पहले भी किया है।

लास वेगस में कार्यक्रम में शामिल होने के बाद हुए कोविड-19 पॉजिटिव: बता दें कि 81 वर्षीय बाइडन लास वेगास में एनएएसीपी नेशनल कंवेंशन में शामिल होने के बाद बुधवार को कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए थे। लास वेगास में हुए इस सम्मेलन में उन्होंने ट्रंप की नीतियों की जमकर आलोचना की थी। इसके साथ ही उन्होंने अमेरिका में गोलीबारी की बढ़ती घटनाओं की भी निंदा की।

व्हाइट हाउस ने अपने आधिकारिक बयान में कहा, वह (बाइडन) डेलावेयर लौट आएंगे। यहां वे खुद को सेल्फ आइसोलेट करेंगे और यहीं से अपना काम जारी रखेंगे। राष्ट्रपति बाइडन वैक्सीन और बुस्टर शॉट ले चुके हैं। लास वेगास से लौटते समय उन्होंने पत्रकारों से कहा था कि वह ठीक है और एयरफोर्स के विमान में चढ़ने के दौरान उन्हें बिना मास्क के देखा गया था।

तीन बार हो चुके हैं कोविड पॉजिटिव: कोविड-19 पॉजिटिव पाए जाने के बाद राष्ट्रपति बाइडन ने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी थी। उन्होंने कहा, दोपहर को मैं कोविड-19 पॉजिटिव पाया गया। मैं ठीख महसूस कर रहा हूं। शुभकामनाओं के लिए सभी का धन्यवाद। जुलाई 2022 में जो बाइडन पहली बार कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए थे। इसके बाद भी वह एक बार और कोविड संक्रमित हुए थे। इस दौरान उन्हें आइसोलेशन में रखा गया था।

भ्रष्टाचार मामले में चीन ने अपने शीर्ष मंत्रियों को दिखाया बाहर का रास्ता

बीजिंग, एजेंसी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने गुरुवार को अपने सबसे बड़े शीर्ष निर्णय लेने वाले निकाय की बैठक के दौरान अपने पूर्व विदेश और रक्षा मंत्रियों, किन गैंग और ली शांगफू को अपनी केंद्रीय समिति से हटा दिया। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने बताया कि पिछले साल दोनों अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया गया था। सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ने गुरुवार को अपनी लंबे समय से विलंबित तीसरी पूर्ण बैठक समाप्त कर दी।205 सदस्यीय केंद्रीय समिति की बैठक लगभग हर पांच साल में एक बार आयोजित की जाती है ताकि देश की दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक नीतियों की सामान्य दिशा तय की जा सके। ऐसी बैठकों में केंद्रीय समिति के सदस्यों को हटाने की भी मंजूरी दी जाएगी। जानकारी के अनुसार

पूर्व विदेश मंत्री किन गैंग और पूर्व रक्षा मंत्री ली शांगफू को सीसीपी में प्रमुख पदों से हटाया गया है।

ली शांगफू पर भारी रिश्वत लेने और राजनीतिक जिम्मेदारियों की अनदेखी करने का आरोप लगाया गया था, जिससे पार्टी और राष्ट्रीय रक्षा को काफी नुकसान पहुंचा।किन गैंग, जिन्हें केवल सात महीने बाद ही बदल दिया गया था, सार्वजनिक रूप से नजर नहीं आ रहे हैं, जिससे आंतरिक सत्ता संघर्ष के बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं।यह कदम राष्ट्रपति शी जिनपिंग के व्यापक भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का हिस्सा है, जिसके तहत कई उच्च पदस्थ अधिकारियों को हटाया गया है। कम्युनिस्ट पार्टी ने बृहस्पतिवार को अपनी केंद्रीय समिति से बर्खास्त विदेश मंत्री किन गांग का इस्तीफा स्वीकार कर लिया तथा पूर्व रक्षा मंत्री ली शांगफू और दो अन्य शीर्ष जनरलों को पार्टी से निष्कासित करने के निर्णय का समर्थन किया। यह निर्णय बृहस्पतिवार को यहां संपन्न हुई पार्टी की केंद्रीय समिति की शीर्ष स्तरीय बैठक के दौरान लिया गया।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) की केंद्रीय समिति के तीसरे पूर्ण अधिवेशन नामक चार दिवसीय सत्र के अंत में जारी विज्ञप्ति के अनुसार, अर्थव्यवस्था में सुधार के उपायों पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई बैठक में कॉमरेड किन गांग का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है। किन (58) चीन के सबसे कम समय तक विदेश मंत्री रहने के बाद 2023 में अचानक सार्वजनिक तौर पर दिखना बंद हो गये थे, जिसके बाद सरकार में उनके शेष पद भी छीन लिए गए। उन्हें पद से हटाए जाने के कारणों के बारे में अब भी कोई जानकारी नहीं है। उनके पते-ठिकाने की भी जानकारी नहीं है। उनके इस्तीफे को स्वीकार करते हुए हालांकि केंद्रीय समिति ने अब भी किन को कॉमरेड (साथी) कहा है। इसके बाद किन का स्थान उनके पूर्ववर्ती वांग यी ने ले लिया जो पार्टी के उच्चस्तरीय पोलित ब्यूरो के सदस्य भी हैं। तीसरे पूर्ण अधिवेशन में जनरल ली शांगफू और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के दो अन्य वरिष्ठ जनरलों ली यूचाओ और सन जिनमिंग को पार्टी से निष्कासित करने के पोलित ब्यूरो के पहले के फैसले की भी पुष्टि की गई। रक्षा मंत्री बनने से पहले देश के रॉकेट (मिसाइल) बल का नेतृत्व करने वाले ली शांगफू पर कथित भ्रष्टाचार का मुकदमा चल रहा था। ली यूचाओ, जो रॉकेट फोर्स का भी हिस्सा थे, को ली शानफू के साथ बर्खास्त कर दिया गया। बैठक में पीएलए के एक अन्य शीर्ष अधिकारी जनरल सुन जिनमिंग को भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता के लिए पार्टी से निकाले जाने के निर्णय का भी समर्थन किया गया।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129